'रेकी आचार्या माँ पूनमरानी जी' का जीवन परिचय

नाम	:	ग्रैंड रेकी मास्टर रेकी आचार्या पूनमरानी
शिक्षा	:	बी०ए०, योगशिक्षिका, प्राकृतिक चिकित्सिका होमहर्बल, एक्यूप्रेशर(रि.), चुम्बक चिकित्सा एवं लॉफिंग थिरेपी गाइड
जन्म तिथि	:	21 मई
विवाह तिथि	:	20 जून
पति का नाम	:	डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी'-योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा+प्लस विशेषज्ञ
पता	:	'आनन्द निकुंज' 117/ओ/133 गीतानगर, कानपुर
परिवार	:	दो सन्तान (पुत्री - इन्जीनियर, पुत्र- चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)
कार्यक्षेत्र	:	महिला विभागाध्यक्ष-देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र,गीतानगर कानपुर
	:	समाचार पत्रों के लिए स्वास्थ्य संबंधी लेख लेखन
	:	डिवायन रेकी सेन्टर गीतानगर, कानपुर की प्रधान-आचार्या।
साहित्य सृजन	:	**'मासिक धर्म की गड़बड़ी कैसे ठीक हो', 'रेकी विद्या के चमत्कार' (पांच भागों में) 'सम्पूर्ण चौरासी योगासन', 'रेकी के चमत्कार' (प्रकाशक-मनोज पाकेट), 'बच्चों की घरेलू चिकित्सा', सम्पादिका - 'पंचांग योग समाचार'**
	:	योग द्वारा कायाकल्प, मेरूदण्ड के घुमावदार व्यायाम, प्राणायाम की सही विधि, ध्यान क्या क्यों व कैसे, पेट रोगों की अचूक चिकित्सा, मधुमेह की योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा+प्लस, दमा की अचूक चिकित्सा, पोलियो की योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा+प्लस, उपवास की सही विधि, हमारा संतुलित भोजन, नेत्र ज्योति कैसे बढ़ायें, रक्तचाप की सफल चिकित्सा, चमत्कारी चुम्बक चिकित्सा क्या व कैसे, साक्षी ध्यान आदि पुस्तकों की सह-लेखिका
अन्य विशेषतायें	:	1. इनर व्हील क्लब (वेस्ट) कानपुर की पूर्व सक्रिय सदस्या। 2.भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा संगठन I.N.A. की प्रथम उपाध्यक्षा। 3. पंचांग योग साधना व चिकित्सा अनुसंधान की सहयोगिनी। 4. टच रेकी, डिस्टेन्स रेकी, करूणा रेकी, रेकी सर्जरी, रेकी मास्टर तथा ग्रैंड रेकी मास्टर की प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) संचालिका। 5. इण्डियन कौंसिल आफ वुमेन की पूर्व सह मंत्री।
पुरस्कार	:	1. **'बेस्ट रेकी मास्टर अवार्ड' द्वारा रेकी हीलिंग फाउण्डेशन कनाडा चेप्टर** 2. **'श्रेष्ठ प्राकृतिक चिकित्सिका सम्मान' द्वारा आई.एन.ओ.** 2008 3. **'मातृश्री सम्मान' द्वारा श्री ओमर वैश्य महिला संघ कानपुर द्वारा**

रेकी आचार्या पूनमरानी

रेकी विद्या

क्या, क्यों एवं कैसे?

रेकी विद्या के वर्तमान उद्धारक
डा. मिकाओ उसुई

स्वयं के द्वारा रेकी उपचार में स्थिति

प्रार्थना

1. आँखें

2. माथा

3. कान

4. माथा एवं सिर के पीछे

5. दोनों हथेलियां सिर के बगल में

6. गला

7. थायरायड एवं थाइमस ग्रन्थि

8. हृदय चक्र

9. मणिपूरक चक्र

10. लीवर

11. फेफड़ों का ऊपरी हिस्सा

12. पैन्क्रियाज/स्पलीन

13. स्वाधिष्ठान चक्र

14. मूलाधार चक्र

15. घुटने

16. खूंटी

17. तलुवे

18. कंधे

19. थायराइड एवं थाइमस ग्रन्थि

20. हृदय चक्र

21. मणिपूरक चक्र

22. किडनी

23. स्वाधिष्ठान चक्र

24. मूलाधार चक्र

कृपया आगे देखिये आवरण (कवर पृष्ठ) का तृतीय पृष्ठ

दूसरों के द्वारा रेकी उपचार में स्थिति

1. आँखें

2. माथा

3. कान

4. माथा एवं सिर के पीछे

5. दोनों हथेलियां सिर के बगल में

6. गला

7. थायरायड एवं थाइमस ग्रन्थि

8. हृदय चक्र

9. मणिपूरक चक्र

10. लीवर

11. फेफड़ों का ऊपरी हिस्सा

12. पैन्क्रियाज/स्पलीन

13. स्वाधिष्ठान चक्र

14. मूलाधार चक्र

15. घुटने

16. खूंटी

17. तलुवे

18. कंधे

19. थायराइड/थाइमस ग्रन्थि

20. हृदय चक्र

21. मणिपूरक चक्र

22. किडनी

23. स्वाधिष्ठान चक्र

24. मूलाधार चक्र

डिवायन रेकी एवं औरा स्कैनिंग सेन्टर

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, Web.:www.anandyoga.com, Face Book:Omprakash Anand, Kanpur

रेकी विद्या

क्या, क्यों, कैसे?

●

लेखिका एवं संकलन

प्रा.यो. रेकी आचार्या माँ पूनमरानी

●

सम्पादक

वरिष्ठ योग प्राकृतिक चिकित्सा+प्लस विशेषज्ञ

प्रा.यो. डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी'

●

चिकित्सालय एवं प्रशिक्षण केन्द्र

डिवायन रेकी सेन्टर, गीतानगर, कानपुर

C/o देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर

(रावतपुर रेलवे स्टेशन के निकट→ गीतानगर क्रासिंग के पास→ श्री विश्नोई पार्क के बगल से)

Mob: 9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975

E-mail:anandyoga@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand, Kanpur

Web.:www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

❖ **प्रकाशक :**

स्वस्थ साहित्य प्रकाशन

C/o देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र

: 117/133, ब्लाक 'ओ', गीतानगर, कानपुर - 208025

Mob. : 9336115528, 9336235850, 9838444486

Email : anandyoga133@gmail.com

Website : www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

Face Book : Omprakash Anand, Kanpur

❖ **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन :**

- सभी विवादों के लिये कानपुर न्यायालय मान्य

❖ प्रथम संस्करण जुलाई-2012

- कुल प्रतियाँ-2000

द्वितीय संस्करण जनवरी-2016

- कुल प्रतियाँ-3000

तृतीय संस्करण जून-2020

❖ **मुद्रक :**

सोलर प्रेस

96/2, चुन्नीगंज, कानपुर-208001

फोन - 0512-2534799

❖ **वैधानिक चेतावनी :**

पुस्तक में दी गयी सामग्री का उद्देश्य जानकारी देना है। स्वयं अभ्यास से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि की जिम्मेदारी लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक की नहीं होगी। कृपया अपने चिकित्सक से या रेकी आचार्य से परामर्श अवश्य कर लें।

☞ **मूल्य : सौ रुपया (100/-) एक प्रति**

दो शब्द

यदि आप रेकी विद्या द्वारा ईश्वरीय ऊर्जा के सही आवाहन एवं प्रयोगों की विधियाँ सीख जायें, तो आप अपने सभी सांसारिक कार्यों को सही ढंग से, समय पर एवं सरलता से पूरा करने में समर्थ हो जायेंगे। जैसे-आपके घर में चौबीसो घंटा बिजली आने लगे तो घर का कोई भी बिजली से चलने वाला यंत्र जरूरत पड़ने पर तुरन्त काम करेगा। इसी प्रकार रेकी शक्तिपात (एट्यूनमेन्ट) एवं अभ्यास के बाद ईश्वर की सर्वव्यापी प्राण ऊर्जा को जब चाहें बुलाकर अपना या दूसरे का कोई आवश्यक एवं नैतिक काम कर सकते हैं। क्योंकि रेकी विद्या है ही ऐसी, जिसमें ईश्वरीय ऊर्जा या शक्ति को अपने अन्दर बुलाकर चाहे उससे अपनी बीमारी का स्वयं इलाज कर लें या दूसरों का इलाज कर दें अथवा उससे कोई अपना आवश्यक कार्य करा लें। रेकी के क्या-क्या लाभ हैं। इस पुस्तक में स्वयं आगे पढ़ेंगे।

माँ सरस्वती की कृपा से मैंनें सबसे पहले एक पुस्तक लिखी थी **'रेकी के चमत्कार'** (पृष्ठ 160) आपने पढ़ी होगी। जब मुझे लगा कि इस पुस्तक में विस्तृत जानकारी के लिये और कुछ होना चाहिए तो अगली पुस्तक लिख डाली **'रेकी विद्या के चमत्कार'** (रंगीन चित्र के साथ पृष्ठ 300)। अब मुझे लगा कि योग प्रेमियों को भी इस प्रकाशन के माध्यम से रेकी के बारे में आवश्यक सूचना दी जाये जिससे उनका भी कल्याण हो। इसी विचार को क्रियात्मक स्वरूप देने के लिए रेकी से संबंधित यह लघु पुस्तिका (लगभग पृष्ठ 108) आपके सामने प्रस्तुत है। इस पुस्तक में रेकी प्रथम टच रेकी, रेकी द्वितीय डिस्टेंस रेकी एवं रेकी करूणा का विस्तृत वर्णन हैं साथ में डाउजिंग आदि का भी सक्षिप्त ज्ञान दिया है। आशा है, आपको इस पुस्तिका को पढ़कर बहुत अच्छा लगेगा।

मैं अन्त में अपने पतिदेव डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' का धन्यवाद् करना चाहूँगी जिन्होंने इस पुस्तक के सम्पादन में सब प्रकार से सहयोग किया। प्रबुद्ध पाठकों से कहना चाहूँगी कि अपने उपयोगी सुझाव जरूर भेजें। हम उनके सुझाव को अगले प्रकाशन में अवश्य ही स्थान देंगे। धन्यवाद्!

सम्पादिका
योग-प्राकृतिक चिकित्सिका
रेकी आचार्या पूनमरानी
ग्रैंड रेकी मास्टर

Mob. :9838444486, 9336235850
Visit Us :www.anandyoga.com
:wwwcolorblindsurecure.com
Email :anandyoga133@gmail.com
Face Book :Omprakash Anand, Kanpur

विषय सूची

क्या		कहाँ
1.	सम्पादकीय	2
2.	रेकी क्या है?	5
3.	रेकी सर्वश्रेष्ठ कैसे एवं रेकी का सिद्धान्त	6
4.	आभार प्रदर्शन	8
5.	रेकी का इतिहास	9
6.	रेकी के नियम	13
7.	प्रभामण्डल (औरा) क्या है?	14
8.	रेकी के प्रयोग	19
9.	रेकी प्रार्थना एवं रेकी बुलाने की विधि	22
10.	सहायक बीज मंत्र	23
11.	रोगों में रेकी कैसे ले?	26
12.	पानी को या भोजन को रेकी कैसे दें?	30
13.	स्पर्श (टच) एवं दूरस्थ (डिस्टेंस) रेकी	31
14.	रेकी I एवं रेकी II का एट्यूनमेंट	33
15.	रेकी स्वयं या दूसरों को देना	34
16.	शक्ति सिम्बल, मानसिक सिम्बल, सेतु प्रतीक	37-39-41
17.	पंचतत्व साधना	42
18.	चमत्कारी **'इजिप्सन लैम्प'**	44
19.	चमत्कारी खोजक यंत्र **'डाउजर'**	46
20.	चमत्कारी शरीर शोधक यंत्र **'चक्रा स्कैनर'**	48
21.	चमत्कारी औरा मापक यंत्र **'औरा स्कैनर'**	49
22.	चमत्कारी मनोकामना पूर्ति **'रेकी प्लेट'**	50
23.	चमत्कारी ऊर्जा गुणक **'क्रिस्टल'**	51
24.	करूणा रेकी	52
25.	करूणा रेकी क्यों?	53
26.	अति चमत्कारी करूणा रेकी के सिम्बल	56
27.	रेकी विद्या के अद्भुत चमत्कार	68
28.	रेकी जिज्ञासु जानें एवं रेकी प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) विवरण	88
29.	अन्य उपयोगी सूचनायें	89-104

रेकी क्या है?

-ग्रैंड रेकी मास्टर पूनमरानी

रेकी क्या–रेकी एक जापानी शब्द है। जापानी भाषा में 'रे' का अर्थ है **'सर्वव्यापी ईश्वर'** और 'की' का अर्थ है **'प्राण ऊर्जा'**। इस प्रकार रेकी का पूरा शब्दार्थ हुआ **'सर्वव्यापी ईश्वर की प्राण ऊर्जा'**। अर्थात् ईश्वर सर्वत्र है, तो स्वाभाविक है कि उसकी प्राण ऊर्जा भी सर्वत्र है। प्राचीन काल में भारतवर्ष में इसको **'आत्म साक्षात्कार'** हो जाना या **'भगवान का दर्शन'** हो जाना या **'भगवान की कृपा बरसना'** कहते थे। और वह साधक या साधु या संत फिर इसी विद्या से लोगों की समस्या हल कर देते थे। और उन्हें दुःख या कष्ट से मुक्त कर देते थे।

प्रारम्भ में **'रेकी'** भगवान शिव द्वारा प्रयोग की गयी। क्रमशः भगवान बुद्ध भी इसी विद्या का प्रयोग करते थे। जीसेस क्राइस्ट भी रेकी द्वारा कठिन से कठिन रोगों को ठीक कर देते थे। परन्तु धीरे-धीरे यह विद्या लुप्त हो गयी। वर्तमान में डा० मिकाओ उसुई (जापान) द्वारा रेकी को पुर्नस्थापित किया गया। वास्तव में-

1. यह रेकी ऊर्जा हम जन्म से साथ लेकर पैदा होते हैं।
2. बिजली (करंट) की तरह इसको देखा या स्पर्श नहीं किया जा सकता हो। हाँ रेकी शक्तिपात (एट्यूनमेन्ट) के बाद अनुभव किया जा सकता है।
3. यह तन-मन और आत्मा तीनों का एक साथ उपचार करती है।
4. इसका धर्म, सम्प्रदाय, पंथ, काला जादू, सम्मोहन से कोई संबंध नही है।
5. यह व्यक्ति के मन को संतुलित करती है, तनाव से मुक्त करती है, मानसिक अवरोधों से दूर करके, प्राण ऊर्जा का विकास कर शक्ति प्रदान करती है।

☞ रेकी विद्या के निम्नलिखित कोर्स होते हैं-

1. **रेकी - I (First)**
2. **रेकी - II (Second)**
3. **रेकी करूणा**
4. **रेकी IIIA (रेकी सर्जरी)**
5. **रेकी IIIB (रेकी मास्टर) एवं**
6. **ग्रैंड रेकी मास्टर**

रेकी सर्वश्रेष्ठ कैसे?

रेकी में हांथों के अतिरिक्त किसी भी साधन व औषधि की आवश्यकता नहीं है। यह सरल, स्वाधीन व प्राकृतिक पद्धति है। रसायनिक ग्रन्थियों, अवयवों व स्नायुओं के निर्माण एवं संतुलन की प्रक्रिया तेज कर उन्हें शक्तिशाली व उर्जान्वित करती है।

इसे कम पढ़ा व्यक्ति भी बिना किसी कठिन साधना के कम समय में सीखकर अपना या दूसरों का उपचार बिना किसी हानि के तन, मन व आत्मा तीनों के कष्टों का उपचार कर सकता है।

रेकी में सावधानियां:-रेकी करते समय अथवा देते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. रोगी के ठीक होने पर ठीक होने का श्रेय स्वयं न लें।
2. रेकी देने वाला मात्र चैनल (माध्यम) है अपने पास से वह कुछ नहीं देता।
3. क्षमता से अधिक कार्य न करें।
4. गलत स्थिति में बैठकर रेकी न दें।
5. रेकी चैनल को रेकी के नियमों एवं आध्यात्म (स्प्रिच्युअल) का पालन अवश्यक है।

रेकी का सिद्धान्त

रेकी के वर्तमान अन्वेषक डॉ० मिकाओ उसई एवं उनके प्रमुख शिष्यों के अनुसार यह चेतन शरीर, ईश तत्व एवं पार्थिव तत्व से निर्मित है। ईश तत्व आकाश से आता है एवं पार्थिव तत्व पृथ्वी से आता है। इन दोनों के मिलन से ही चेतना या जीवन की प्राप्ति होती है। ईश तत्व एवं पार्थिव तत्व के संतुलन से ही शरीर स्वस्थ रहता है और इसके असंतुलन से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, चूंकि रेकी ईश्वरीय ऊर्जा है। जब रेकी चिकित्सा करते हैं तो रेकी ऊर्जा रोग ग्रस्त शरीर में प्रविष्ट होती है तो प्रथम, सूक्ष्म शरीर के औरा या प्रभामण्डल को प्रभावित करता है। रोग चाहें शारीरिक हो या मानसिक, वह सूक्ष्म शरीर या औरा प्रभामण्डल में नकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि कर देता है, और रेकी उस नकारात्मक (निगेटिव) ऊर्जा को सकारात्मक (पॉजिटिव) ऊर्जा में बदल देती है। जिससे रोगी का रोग या तो ठीक हो जाता है या रोगी को उस कष्ट में तुरन्त आराम का अनुभव होता है। हाँ पुराने कष्ट में थोड़ा समय लग सकता है। लेकिन यह जरूरी नहीं है।

☞ **भगवान बुद्ध के अनुसार यह समस्त सृष्टि सूक्ष्मतर तरंगों का ही स्थूल रूप है और जब इस सृष्टि के किसी भी वस्तु का विघटन (डिसइन्टीग्रेशन) होता है तो वह स्थूल से द्रव, द्रव से वायु रूप और वायु रूप से सूक्ष्मतर कणों में क्रमशः विभाजित होते-होते तंरगों (Waves) में बदल जाता है।**

आधुनिक विज्ञान के अनुसार- किसी भी पदार्थ की तीन अवस्थायें होती हैं। ठोस, द्रव एवं वायु रूप (गैस रूप)। ठोस को गर्मी देकर द्रव में एवं द्रव को और अधिक गर्मी देकर गैस रूप में बदल सकते हैं। जैसे बर्फ को पानी में, पानी को भाप में एवं भाप को सूक्ष्म तरंगों के रूप में। **महान वैज्ञानिक आइन्सटीन के अनुसार प्रत्येक पदार्थ को सूक्ष्म तरंगों में बदला जा सकता है। यद्यपि प्रत्येक पदार्थ की अपनी तरंग (Waves) गति होती है किन्तु विज्ञान तकनीकियों के माध्यम से सभी पदार्थों की तरंगों की गति को एक किया जा सकता है। उदाहरण- हम टी.वी. में देखते हैं कि दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र से किसी भी चित्र एवं उसकी आवाज को तरंगों में बदलकर आकाश में उपस्थित उपग्रह के माध्यम से टी.वी. चैनल को प्रेषित करते हैं। जबकि चित्र की अपनी तरंग गति होती है और आवाज की अपनी तरंग गति होती है दोनों की तरंग गति अलग-अलग होती है किन्तु विज्ञान तकनीक से दोनों की तरंग एक हो जाने से चित्र के अनुसार ध्वनि प्रेषण होता है अर्थात हमारा टेलीविजन ध्वनि तरंगों को ध्वनि और चित्र का एक सा एवं एक समय में परिवर्तित कर देता है। यही तंरग ऊर्जा का सिद्धान्त टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, ईमेल आदि सभी में यह नियम लागू होता है।**

☞ रेकी चैनल या रेकी सुसंगता (शक्तिपादित) प्राप्त रेकी उपलब्ध कराने वाला, रेकी प्रेषक इस ईश्वरीय ऊर्जा अर्थात् रेकी ऊर्जा को अपने सूक्ष्म शरीर के चक्रों को एट्यून करके चैनल्ड कर लेता है। फलस्वरूप उसके शरीर में ब्रह्माणीय ऊर्जा बहने लगती है और वह आवश्यकता पड़ने पर रेकी तकनीक से सहस्त्रार चक्र में ऊर्जा का आवाहन करके प्रयोग करता है।

रेकी विज्ञान के माध्यम से वातावरण में व्याप्त ईश तत्व की तंरगों को सहस्त्रार चक्र में प्रवेश करवा करके आज्ञाचक्र में, आज्ञाचक्र से विशुद्ध चक्र में और विशुद्ध चक्र से हृदय चक्र में लाकर के हाथों के माध्यम से रोगी के रोग ग्रस्त भाग (शरीर) में प्रवेश होती है यह ऊर्जा शरीर में प्रवेश होकर उसके नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देती हैं एवं नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में बदल देती हैं फलस्वरूप रोगी का सूक्ष्म शरीर (मनोकाय

कोष) स्वस्थ हो जाता है। चूंकि सूक्ष्म शरीर से स्थूल शरीर संचालित होता है। फलस्वरूप शरीर में स्थित चक्रों के माध्यम से ईश तत्व की तरंगें स्थूल रूप में बदल जाती हैं और स्थूल शरीर के कष्ट का उपचार होने लगता है जिससे रोगी निरोगी हो जाता है। जैसे हमारा टी.वी., टेलीफोन आदि चित्र एवं ध्वनि की तंरगों को चित्र एवं ध्वनि में बदल देता है एवं उसमें एकरूपता ले आता है। यही रेकी चिकित्सा का सिद्धान्त है।

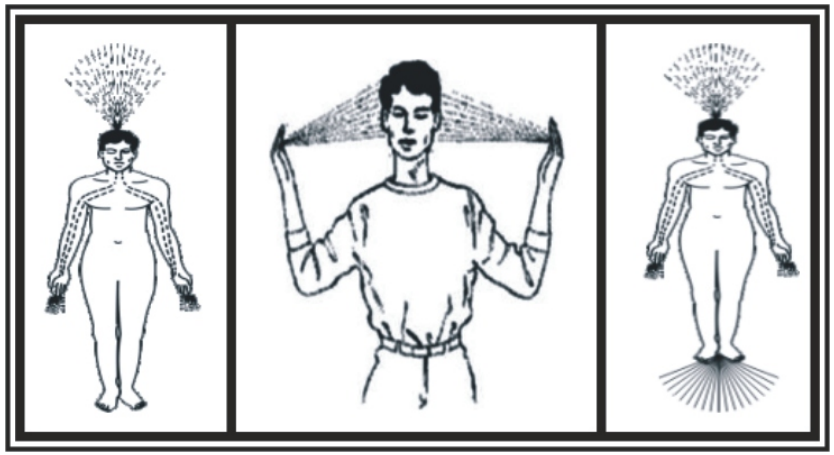

रेकी साधक ब्रम्हाण्ड से रेकी ऊर्जा ग्रहण करते हुये

रेकी साधक ब्रम्हाण्ड से प्राप्त हांथों द्वारा मस्तिष्क में रेकी ऊर्जा लेते हुये।

रेकी साधक रेकी ऊर्जा को हांथों एवं पैरों द्वारा प्रवाहित करते हुये।

आभार प्रदर्शन

- मैं आभारी हूँ अपने प्रथम रेकी गुरू श्री कृष्ण प्रसाद जी खत्री का
- मैं आभारी हूँ अपने द्वितीय रेकी गुरू श्री मुरलीधरन जी का
- मैं आभारी हूँ अपने तृतीय रेकी गुरू श्री मादाबूसी सुब्रह्मण्यम् जी का
- मैं आभारी हूँ अपने चतुर्थ रेकी गुरू श्री नरेन्द्र भाटिया जी का
- मैं आभारी हूँ अपने पंचम रेकी गुरू डा. एन. के. शर्मा जी का
- मैं आभारी हूँ अपने छठवें रेकी गुरू डा. सविता शर्मा जी का
- मैं आभारी हूँ अपने सप्तम रेकी गुरू माँ अमृता चैतन्य अग्रवाल जी का

जिनसे रेकी में कुछ न कुछ नया मिला, जिसके कारण सबका नया ज्ञान भी अपने रेकी चैनलों को देने में सक्षम हो सकी। -रेकी आचार्या पूनमरानी

रेकी का इतिहास

वर्तमान रेकी के इतिहास के सम्बन्ध में कोई लिखित प्रमाण नहीं है। क्योंकि डा० मिकाओ उसुई एवं डा० चुजीरो ह्याशी ने कोई भी लिखित प्रमाण नहीं छोड़ा इसलिए रेकी का इतिहास तथा इस प्रणाली की जानकारी की एकमात्र स्रोत चुजीरो हयाशी की शिष्या श्रीमती हवायो टकारा द्वारा अपने शिष्यों को दिये हुये मौखिक अनुदेशों से प्राप्त हुआ।

उन्नींसवीं सदी के मध्य में जापान में जन्में डा० मिकाओ उसुई को ही इसके वर्तमान स्वरूप का संस्थापक माना गया है। बचपन से ही आध्यात्मिक प्रकृति के होने के कारण आगे चलकर जापान मे क्योटो शहर के एक कालेज में वे वरिष्ठ प्राध्यापक के पद ग्रहण कर **'बाइबल'** पढ़ाने लगे। और बाद में ईसाई धर्म का पालन करते हुए वे ईसाई मिशनरी के डीन बन गयें।

एक दिन जो कि विश्व विद्यालय के सत्र का आखिरी रविवार था, डा० उसई अपने छात्र-छात्राओं से विचार विमर्श कर रहे थे। तो अचानक एक छात्र ने डा० उसई से प्रश्न पूछा '' क्या आप बाइबिल में विश्वास करते हैं'' डा० उसई ने हां में जवाब दिया, तभी दूसरे छात्र ने प्रश्न पूछा कि बाइबिल में लिखा है कि ईसामसीह किसी का भी इलाज छू कर करते थे आप इसमें विश्वास करते हैं, तो हमें इस उपचार पद्यति के बारे में बताइये। डा० उसई इस प्रश्न को सुनकर सन्न रह गये। इसका उत्तर वह न दे सके। सो वह अपना इस्तीफा देकर इस पद्धति की खोज में लग गये, इसके बाद डा० उसई ने शिकागो विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि धर्म दर्शन में प्राप्त की फिर भी उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। वहीं पर उन्हें ये जानकारी मिली कि भगवान बुद्ध भी मात्र छू कर के ही किसी भी रोग का निदान किया करते थे। तथा अपने शिष्यों को भी यह शिक्षा प्रदान करते थे। जिन शिष्यों को वह यह शिक्षा देते थे, वह औषधि-बौद्ध कहलाते थे, शेष बौद्ध भिक्षु कहलाते थे। फिर वह जापान आये और जापानी भाषा का अध्ययन किया। परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। इसके बाद चीन में, फिर तिब्बत में, फिर उत्तरी भारत में उन्होंने संस्कृत भाषा व पाली भाषा सीखकर बुद्ध दर्शन शास्त्र एवं कमल सूत्र का अध्ययन किया,

उसका संपूर्ण अध्ययन करने से उनको साधना की विधि मिल गयी और डा० उसई की लगन व मेहनत सफल हुई। यहां पर यह भी एक तथ्य है कि रेकी की उत्पत्ति शिव-शिवा से हुई है और उनके द्वारा ही यह विद्या दी गयी। जब कालान्तर में लुप्त हुई। तब भगवान बुद्ध द्वारा अपनाई गयी।

डा० उसई को इस पुस्तकीय अध्ययन व ज्ञान से आन्तरिक शान्ति न मिल सकी। आत्मिक संतोष तो तब मिलता जब इस विद्या का इस्तेमाल कर सकते। डा० उसई पुनः अपने क्योटो शहर लौट आये एवं बौद्ध मठ के मठाधीश के साथ यह तय हुआ कि डा० उसई समीप की पवित्र कूरीयामा पहाड़ी पर जाकर इक्कीस दिन तक आत्मसाधना व ध्यान करें।

डा० उसई ''कूरीयामा'' पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे। उनके पास कोई सामान नहीं था। उन्होंने 21 छोटे-छोटे पत्थर गिन कर पास रख लिये। एक-एक कर के जैसे-जैसे दिन निकलता वे एक पत्थर नीचे गिरा दिया करते थे। अब उनके पास एक पत्थर रह गया था। अर्थात् 20 दिन निकल चुके थे। 20 दिन की भूख ने उन्हें क्षीण कर दिया था। उनमें उठने तक की हिम्मत नहीं थी वे सोच रहे थे अब शायद कल का सूरज न देख पायेंगे। ये आखिरी रात थी। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। वे हिम्मत करके उठे और आसन पर बैठ गये। रात्रि का तीसरा पहर चल रहा था। वे क्या देखते है कि पूरब दिशा से सफेद रंग की चमकदार रोशनी तीर की तरह उनकी तरफ बढ़ रही है। डा० उसई घबरा गये, आगे कुछ सोचते उससे पहले वह चमकदार रोशनी उनके समीप पहुँच गयी और उसने तीर की तरह उनकी दोनों आँखों के बीच में (तीसरी आँख) प्रहार किया और डा० उसई मूर्छित हो कर गिर पड़े।

कुछ समय पश्चात् उन्हें लगा कि वे सफेद रोशनी से ढके हुये हैं और उनके अन्दर हजारों बुलबुले तैर रहे हैं। धीरे-धीरे उनका रंग इंद्रधनुष के रंगों के समान होने लगा, उनको लगने लगा कि इन रंगों की जानकारी उन्हें कमल सूत्र से मिली थी उनको अनुभव होने लगा कि वे अपने सूक्ष्म शरीर के अंदर झांक कर अपने चक्रों को पहचान रहे हैं। काफी देर तक वे मूर्छा में पड़े रहे। जब उनकी मूर्छा टूटी तो दोपहर हो चुकी थी। जब उठे तो डॉ० उसई को लगा कि उनमें काफी ताकत आ गयी है वे इस चमत्कार से चकित थे कि कल तक उठ बैठ नहीं सकते थे अब इतनी ताकत आ गयी कि वे तेजी से नीचे उतरने लगे

नीचे उतरते समय उनके पैर का अंगूठा एक पत्थर से टकरा गया, और उस से खून बहने लगा एवं बहुत दर्द होने लगा स्वभावतः उनके हाथों ने अपने अंगूठें को पकड़ लिया जिससे दर्द कम महसूस हो। कुछ ही मिनटों में दर्द खत्म हो गया उन्होंने हाथ हटाया तो देखा की खून भी बन्द हो चुका था यह उनके लिए दूसरा चमत्कार था।

पहाड़ी से नीचे उतरने पर उन्हें काफी भूख लग रही थी तभी नीचे एक ढाबा नजर आया, ढाबे वाले ने देखा तो सोचा कि ये कोई साधु है तपस्या करके उतर रहे हैं, तो इन्हे हल्के खाने की आवश्यकता है। ढाबे वाले ने डॉ० उसई से कहा कि आप पेड़ के नीचे बेंच पर बैठ जाइये, वहीं पर आपका हल्का खाना पहुँच जायेगा।

थोड़ी देर के बाद एक छोटी लड़की डॉ० उसई के पास खाने की ट्रे हाथ में लेकर पहुँची। उसके पास आने पर डॉ० उसई ने देखा कि उस लड़की का गाल बहुत सूजा हुआ है और बहुत दर्द है। डॉ० उसई ने उस लड़की से तकलीफ के बारे में पूछा तो लड़की ने बताया कि उसके दांत में दर्द है मसूड़े व गाल सूज गये हैं उसके दादा बहुत गरीब हैं कियोटो जाकर दवा नहीं करा सकते। डॉ० उसई ने इजाजत लेकर, अपने हाथ धोकर, अपनी हथेलियाँ लड़की के गालों पर रख दिया। कुछ ही मिनटों के बाद जब लड़की को दर्द नहीं लगा तो डॉ० उसई ने हथेलियाँ हटाई तो सूजन व दर्द गायब था ये तीसरा चमत्कार था। डॉ० उसई सोचने लगे कि क्या उन्हें वास्तव में शक्ति मिल गयी, जिसकी खोज में वे थे, जो प्रश्न उनसे पूछा गया था उन्हें उत्तर मिल गया था। ढाबे वाले ने उनका धन्यवाद किया।

-: निःशुल्क सेवा से निराश :-

कियोटो के जेन (Zen) मठ के मठाधीश-घुटनों के दर्द से पीड़ित थे जब डा० उसई ने उन्हें दर्द से मुक्ति दिलाई तो वे भी आश्चर्यचकित रह गये। डा० उसई चाहते थे वे अपनी दैवीय शक्ति का उपयोग, गरीब, लाचार व कमजोर लोगों पर करें। यह सोचकर वे भिखारियों की बस्ती में उनका इलाज करने पहुँच गये व मुफ्त में उनका इलाज करने लगे। भिखारी लोग ठीक हो कर जाने लगे। इस प्रकार उन्हें वहाँ इलाज करते हुए सात वर्ष हो गये। फिर एक दिन उन्होंने वहाँ पुराने भिखारियों को पुनः देखा तो वे सोच में पड़ गये कि ये वापस क्यों आ गये। उन्होंने एक भिखारी से पूछा कि क्या हुआ, वापस क्यों आ गये।

उसने कहा कि उसने अपना नाम रखा, शहर गया, उसे नौकरी मिल गयी, उसने विवाह कर लिया कुछ ही वर्षो में पारिवारिक झंझटों से दिल भर गया। भिक्षा के काम में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। अब वे देखने लगे कि करीब-करीब सारे भिखारी जिनका उन्होंने इलाज किया था वापस बस्ती में आ गये। यह देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ उन्हें लगा कि ये उन्होंने क्या किया। **बिना आत्मा को शुद्ध किये इनके शरीर को शुद्ध करने लगा। वे भिखारियों की बस्ती को छोड़ कर फिर जेन (Zen) मठ में आ गये उन्होंने विचार किया कि रेकी एक दिव्य ऊर्जा है उसको निःशुल्क नहीं देना चाहिए क्योंकि भिखारियों का उदाहरण उनके सामने था निःशुल्क रेकी देने का परिणाम भिक्षावृत्ति का बढ़ावा देना था। उन्होंने नियम बना लिया कि ''रेकी निःशुल्क नहीं दी जायेगी। और रेकी के साथ आध्यात्मिक साधना का ज्ञान भी जरूरी है।''**

भिखारियों की बस्ती में छः-सात साल रेकी द्वारा सेवा करते हुए डॉ० मिकाओ उसई ने यह अनुभव किया कि ब्रह्मांड की दिव्य शक्ति द्वारा उन्हीं लोगों को ठीक किया जाये जो पूरे हृदय से स्वस्थ होना चाहते हों इसके विपरीत जो स्वस्थ होना नहीं चाहते उनको रेकी न दें क्योंकि वह बीमारी की अवस्था में मिल रहे सुख-सेवा, स्कूल न जाना, न पढ़ना आदि सुखों को छोड़ना नहीं चाहते, इसलिये उन्होंने एक नियम बनाया कि ''रेकी मांगने पर ही देनी चाहिए''। ध्यान रखें इसके परिणाम से अपने को न जोड़ें, अपने को चिकित्सक न समझकर मात्र चैनल समझें क्योंकि आपके द्वारा रेकी पाकर व्यक्ति स्वंय अपना उपचार करता है, इसलिए **''रेकी दी नहीं जाती है, उपलब्ध करायी जाती है या ली जाती है।''** रेकी बिना मांगे देने का मतलब है जैसे अन्धे के आगे मोती बिखेर दिये जायें अतः व्यक्ति जब रेकी मांगे तब ही उपलब्ध करायें। **किसी का दुःख देखकर करूणा जागने पर रेकी साधक बिना मांगे भी रेकी दे सकता है।**

दूसरा नियम बनाया कि रेकी एक महत्वपूर्ण ऊर्जा है ऊर्जा का आदान-प्रदान आवश्यक है। रेकी देने में चिकित्सक का समय भी लगता है इसलिए रेकी उपलब्ध कराने वाले चैनल को ऊर्जा के बदले कुछ न कुछ अवश्य दें, चाहे वह धन के रूप में हो या किसी अन्य रूप में जिससे कि ऊर्जा का संतुलन बना रहे और रोगी व्यक्ति, चिकित्सक का आभारी न हो, आप उसे आध्यात्मिक ऋणी न बनाइये इसके विपरीत जब आप आदान-प्रदान नहीं करते हैं तो ऊर्जा के सही प्रवाह में कहीं न कहीं अवरोध अवश्य आ जाता है।

रेकी के नियम

आधुनिक युग के प्रथम रेकी गुरू डा. मिकाओ उसुई ने अनुभव किया की लोगों को रोग मुक्त करने के साथ उनको जीवन प्रणाली तथा दर्शन सिखाया जाये जिससे वे अपनी चिकित्सा के साथ अपनी चेतना में भी (अपनी सोच में भी) परिवर्तन कर सकें। जिससे इस रहस्यमय विधि को सीखकर अपने को जीवन में आने वाले तनावों, संघर्षों, समस्याओं एवं संकटों से सामना करने योग्य बनाकर शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति भी प्राप्त कर सकें। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर डॉ० उसई ने साधकों को आध्यात्मिक लाभ पहुँचाने वाले पाँच नियम बनायें जिनका आध्यात्मिक साधना में बहुत महत्व है, परमशक्ति परमपिता की कृपा पाने के लिए इन नियमों का पालन करना प्राथमिक आवश्यकता है। भौतिक दृष्टि से भी स्वस्थ, सुखी एवं सफल जीवन के लिए रेकी साधना करने वालों को ब्रह्मांडीय ऊर्जा का सही लाभ उठाने के लिए इन नियमों का पालन करना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि इनका पालन करने में सदैव ही सफलता मिलें, महत्वपूर्ण बात यह है इसकी आवश्यकता को अनुभव करना और इसके प्रति सदैव जागरूक रहना एवं निरन्तर सफलता पूर्वक पालन करते रहने का प्रयत्न करना है।

इसके पाँच नियम हैं (जिन्हें रेकी चैनल नित्य प्रातः एवं सोते समय दोहरायेंगे)-

1) मैं प्रतिज्ञा करती हूँ/करता हूँ कि मैं आज के दिन कृतज्ञता पूर्वक रहूँगा/करूँगी।
2) मैं प्रतिज्ञा करती हूँ/करता हूँ कि मैं आज के दिन चिन्ता नहीं करूँगा/करूँगी।
3) मैं प्रतिज्ञा करती हूँ/करता हूँ कि मैं आज के दिन क्रोध नहीं करूंगा/करूँगी।
4) मैं प्रतिज्ञा करती हूँ/करता हूँ कि मैं आज के दिन अपना कार्य ईमानदारी से करूँगा/करूँगी।
5) मैं प्रतिज्ञा करती हूँ/करता हूँ कि मैं आज के दिन सभी जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षी एवं वनस्पती जगत से प्रेम पूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी।

☞ **उपर्युक्त नियमों की विस्तृत व्यवस्था के लिये लेखक की बड़ी पुस्तक पढ़ें।**

प्रभामण्डल (औरा) क्या है?

औरा या प्रभामण्डल अथवा बायोप्लाज्मिक बॉडी (सुरक्षा कवच) वास्तव में यह व्यक्ति का ऊर्जा शरीर है। वैसे मुख्य रूप से तीन तत्व होते हैं। ठोस, तरल और गैस (वायु)। चौथा तत्व बायोप्लाज्मा, लिसलिसा प्रकृति का होता है। इसीलिए इसे बायोप्लाज्मिक बॉडी भी कहते हैं। यह सुरक्षा कवच (औरा) प्राण ऊर्जा व शक्ति से भरा हुआ है। यह दो प्रकार का होता है।

1. **आन्तरिक औरा** 2. **वाह्य औरा**

आन्तरिक औरा 4 से 6 इंच का होता है। एक इंच शरीर के अन्दर और बाकी बाहर होता है। यह अदृश्य चमकदार ऊर्जा क्षेत्र शरीर के चारों ओर उसकी बनावट के अनुसार होता है। इसको आन्तरिक प्रभामण्डल कहते हैं।

बाहरी प्रभामण्डल कमजोर व साधारण व्यक्ति का 4 से 8 फीट, स्वस्थ शरीर व दिमाग वाले व्यक्ति का 8 से 20 फीट। साधकों का 20 फीट से अधिक होता है। भगवान बुद्ध का औरा 300 फीट का अनुमान किया गया है।

शरीर के औरा पर हुए गहन शोध कार्यों एवं किरलियन फोटो ग्राफी कैमरा से लिए गये फोटो ग्राफ अथवा इसके साफ्टवेयर में फोटो निकालकर यह प्रमाणित होता है कि शरीर में रोग व्याधि के लक्षण प्रगट होने से पूर्व शरीर के औरा पर उनका प्रभाव प्रगट होने लगता है। **किसी भी व्यक्ति की रोग व्याधि का सम्बन्ध उसके प्रभामण्डल से बहुत गहरा होता है। यह सुरक्षा कवच उस व्याधि को शरीर में प्रवेश होने से रोकता है।**

शरीर के प्रभामण्डल में प्राणशक्ति की कमी हो जाने पर उस क्षेत्र के चारों ओर जो नालियाँ (चैनल) दौड़ रही हैं उसमें प्राण शक्ति का प्रवाह रूक जाता है अथवा बाधा पड़ जाती है।

साधारणतया किसी भी रोग के दो मुख्य कारण होते हैं पहला आन्तरिक कारण दूसरा बाहरी कारण। आन्तरिक कारणों में मनोकाय (साइकोसोमैटिक) बीमारियां होती हैं जैसे-नकारात्मक चिंतन, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, बदले की भावना, छिद्रान्वेषण, कटुता, असुरक्षा की भावना, असफलता, अपराध बोध आदि। बाहरी कारणों में दूषित वातावरण, दूषित जल जिसके कारण जीवाणु (वैक्टीरिया), कीटाणु (जर्मस्), विषाणु (वायरस), आहार-विहार की गड़बड़ी, पेट की खराबी योग व्यायाम का अभाव या अधिकता अथवा गलत तरीके से करना आदि।

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि रेकी की ग्रहण क्षमता बढ़ाने के लिए एवं रेकी की प्राण ऊर्जा अधिक देर तक शरीर में बनी रहे इसके लिए रेकी देने से पूर्व रोगी व्यक्ति के औरा प्रभामण्डल की अवश्य सफाई करें।

प्रभामण्डल के प्रकारः-

(1) आन्तरिक प्रभामण्डल एवं
(2) बाहरी प्रभामण्डल

हाथों एवं अंगुलियों के चक्रों को चार्ज करनाः- हथेली के मध्य में चक्र होते हैं जिसे दांये और बांये हाथ का चक्र कहा जाता है और प्रत्येक अंगुली में भी एक-एक छोटा चक्र होता है। हथेलियों और अंगुलियों के चक्र को उत्तेजित या जाग्रत करने से हाथ संवेदनशील हो जाते हैं।

संवेदनशील बनाने की विधिः- हाथों के चक्रों को संवेदनशील बनाने के लिए पहले दोनों हाथों को आपस में रगड़े तत्पश्चात् एक-एक अंगुली को दोनों हाथों की प्रत्येक अंगुली को हथेली के मध्य में रगड़ें पुनः सारी अंगुलियों एक साथ दांये हांथ की बांये में और बांये हाथ की दांये हांथ में रगड़ें। संवेदनशील हाथों से प्रभामण्डल को अनुभव करना आसान हो जायेगा।

प्रभामण्डल का अनुभव

अब अपने हाथों को लगभग एक फुट की दूरी पर दोनों को कप की तरह बनाकर एक दूसरे के सामने सहजता से रखें हांथों में थपकी की तरह आगे पीछे हल्का-हल्का स्पन्दन जारी रखते हुए धीरे-धीरे हांथों को नजदीक लायें अपने ध्यान को हथेली के मध्य व अंगुलियों पर बनाये रखें जब हांथों के मध्य स्पन्दन तनाव, वायब्रेशन अनुभव होने लगे तब हाथों को गेंद की आकार में घुमायें जैसे कि हाथ में फुटबाल पकड़े हों पूरी हथेलियों से उसे घुमा रहे हों। इस प्रकार आप अनुभव करेंगे कि हाथों के बीच में सचमुच बाल की तरह का कोई घेरा है, इस ऊर्जा को आप अनुभव कर पायेंगे। अब आपके हाथ ऊर्जा को जांचने के लिए संवेदनशील हो गये हैं अपने ध्यान को हथेली के मध्य अंगुलियों व अंगूठों पर रखते हुए ऊर्जा को जांच करने का कार्य शुरू कर दें।

प्रभामण्डल नापना या स्कैनिंग करने के तरीके

प्रभामण्डल नापने की पहली विधिः- बाहरी प्रभामण्डल को जांचने के लिए लगभग दस फिट दूरी पर खड़े हो जायें। अपनी संवेदनशील हथेलियों को मुख सामने की ओर रखते हुए ध्यान हथेलियों पर केन्द्रित रखते हुऐ धीरे-धीरे आगे बढ़े जहां पर भी स्पन्दन, झुरझुरी, कम्पन, गर्मी अथवा हवा के स्पर्श जैसा स्पर्श का अनुभव हो यह व्यक्ति का बाहरी

प्रभामण्डल है। फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाये फिर आन्तरिक प्रभामण्डल आने पर पुनः इसी प्रकार स्पन्दन, झुरझुरी, गर्मी, कम्पन अथवा हवा के स्पर्श जैसे स्पर्श का अनुभव हो वह व्यक्ति का आन्तरिक प्रभा मण्डल है। तत्पश्चात् सिर से पैर तक पूरा जांच करें कि सभी जगह का प्रभामण्डल एक सा है अथवा कहीं ज्यादा या कम है।

प्रभामण्डल नापने की दूसरी विधि

कभी-कभी बहुत अधिक शक्तिशाली प्रभामण्डल होता है उनका औरा क्षेत्र दस फिट से कहीं ज्यादा होता है। उसने नापने के लिए तांबे की छड़ अथवा चक्रा स्कैनर आती है उस छड़ को चार्ज करके एक व्यक्ति हाथ में इस प्रकार पकड़ता है कि हवा का झोखा लगने पर वह छड़ हिलने लगे अर्थात बिना दबाव डाले हल्के हाथ से पकड़ते हैं। सामने लगभग चालीस फुट दूरी से धीरे- धीरे दुल्हन की चाल से व्यक्ति एक-एक पैर का अंगूठा और एक पैर की एड़ी मिलाते हुए आगे बढ़े। जहां पर छड़ व चक्रा स्कैनर स्पन्दन आ जाये अथवा घूमने लगे वहीं से बाहरी औरा का क्षेत्र है।

प्रभामण्डल नापने की तीसरी विधि :- यदि आपके पास यह छड़ (चक्रा स्कैनर) नहीं है तो एक व्यक्ति आंख को बन्द कर आज्ञा चक्र पर ध्यान लगाकर शरीर को शिथिल करके खड़ा हो जाय शरीर को इतना ढीला रखे कि कोई हल्का सा भी धक्का लगाये तो वह गिर पड़े। अब उपरोक्त प्रकार से धीरे-धीरे सामने से व्यक्ति आये जहां पर भी सामने खड़ा व्यक्ति हल्का से हिल जायें वह उस व्यक्ति का औरा क्षेत्र है। ध्यान रखें जिस व्यक्ति को शिथिल करके खड़ा करें उसके पीछे एक व्यक्ति उसे संभालने के लिए खड़ा रहे जिससे कहीं झटके से गिर न जाये वैसे उसे पहले ही बता दें जैसे ही कम्पन होने लगे वह तुरन्त आंख खोल दे और स्पन्दन के बारे में सूचना दे दे।

प्रभामण्डल साफ करने की विधियाँ

सफाई की पहली विधि

औरा की सम्पूर्ण सफाई रोगी को लिटाकर, कुर्सी में बैठाकर या खड़े करके सिर से पैर तक की जाती है। सबसे पहले एक चौड़े मुँह वाला बर्तन जैसे बाल्टी, भगौना आदि लें उसमें लगभग आधा बर्तन पानी भर लें उसमें एक मुट्ठी नमक डाल दें। और एक मग में भी पानी भर कर रख लें उसमें डिटॉल डाल दें अब पानी भरे बर्तन को मरीज के बांयीं ओर रखें और यदि लेटा हो तो पैर की तरफ रख दें। डिटॉल व पानी भी पास में ही रख लें। साधारण सफाई हमेशा सिर से पैर तक करते हैं।

तैयारी करने के बाद दोनों हथेलियों को कप की तरह बना लें सिर के ऊपर शरीर से लगभग 2" - 3" इंच हथेलियों को दूर रखते हुए, प्रारम्भ करके, नाक पर से होते हुए हांथों को नीचे लायें और पैर के पंजे तक ले जाकर मुट्ठी बन्द कर लें फिर पानी के बर्तन के ऊपर ले जाकर जोर से हांथों को झिटक-झिटक कर साफ करें। हांथों को झिटकते समय न

पानी को छुएँ, न ही पानी वाले बर्तन को छुएँ, फिर दूसरी बार अंगुलियों को दूर-दूर रखते हुए, हांथ कप की तरह ही रखते हुए, रोगी के सिर से आगे (मुँह) की ओर लाते हुए नीचे लायें। इस प्रकार पांच बार अंगुलियों को मिलाकर और पांच बार अंगुलियां अलग-अलग रखकर क्रमशः (यानी एक बार मिलाकर और एक बार खोलकर) करें। इस प्रकार पांच-पांच बार शरीर के बांयीं ओर और पांच-पांच बार शरीर के दांयीं ओर से करें। इसके बाद इसी प्रकार पृष्ठ भाग में भी पांच-पांच बार शरीर के बांयीं ओर और पांच-पांच बार शरीर के दांयी ओर से करें। ध्यान रहे प्रभामंडल की सफाई करते समय हांथों की शरीर से लगभग 2" - 3" इंच की दूरी बराबर बनाये रखें। हथेलियां कप के आकार में ही रहें। **प्रभामण्डल की सफाई करते समय हाथों को धीरे-धीरे एकाग्रचित होकर सदैव इस विश्वास के साथ नीचे लायें कि आप प्रभामण्डल की सफाई कर रहे हैं। जितना अधिक एकाग्र होकर प्रभामण्डल की सफाई करेंगे उतना ही परिणाम अच्छे आयेंगे इधर-उधर मन के भटकने पर उचित परिणाम मिलने में देरी होगी।** प्रभामण्डल की सफाई आवश्यकतानुसार कम या अधिक बार भी की जा सकती है।

प्रभामण्डल की सफाई करने के बाद अपने कोहनी तक के हाथ साबुन से या डिटॉल पानी से अच्छी प्रकार रगड़-रगड़ कर साफ कर लें। संक्रामक रोगी का प्रभामण्डल साफ करने के बाद साबुन पानी से हाथ धोने के बाद किसी कीटाणुनाशक दवा से अपने हाथ अवश्य साफ कर लें। **यहां यह बात भी याद रखने की है कि रेकी देने वाला व्यक्ति न तो रोगी से रोग प्राप्त करता है और न ही अपना कोई रोग रोगी व्यक्ति को दे सकता है। अगर ऐसा अनुभव होता है तो वह केवल मात्र प्रभामण्डल का प्रभाव है।** उसके बाद नमक पानी जो बर्तन में रखा था उस नमक युक्त पानी को संडास (कमोड) में या नाली में इस प्रकार डालें कि उसके ऊपर से कोई निकलकर न जाये तत्पश्चात् बर्तन को साफ कर लें। ध्यान रखें कि नमक युक्त पानी कमरे में कहीं गिरे नहीं।

स्थानीय औरा साफ करने के लिए शरीर के जिस अंग का औरा साफ करना हो वहाँ पर कप की तरह हाथों को फैलाकर और मिलाकर क्रमशः कम से कम पचास-पचास बार से लेकर दो सौ बार तक साफ करते हैं। स्थानीय औरा साफ करते समय यह आवश्यक नहीं कि हाथ केवल नीचे की ओर ही ले जायें इसमें हाथों को दायें-बायें-ऊपर-नीचे सब ओर ले जा सकते हैं परन्तु हर बार हाथ झटक कर अवश्य साफ करें।

सफाई की दूसरी विधि

इसमें हाथों को उपरोक्त प्रकार से कप की तरह रखते हुए खरोचते हुए (खरोचना प्रभामण्डल में यानि शरीर से 2"-3" दूरी पर) हांथों को नीचे लाते हैं और फिर हवा में चित्रानुसार हरी अग्नि का अनुभव करें अथवा जमीन पर हरी अग्नि का अनुभव करें उसमें फूंक मार कर नकारात्मकता को अग्नि में विसर्जित करें। प्रभामण्डल साफ करने के बाद आपने हाथों को भी उसी प्रकार प्रभामण्डल में खरोचकर साफ करके हाथों की

नकारात्मकता को अग्नि में विसर्जित करें तत्पश्चात् कार्य पूरा होने पर अग्नि को धन्यवाद करें।

रेकी उपचार के पूर्व प्रभामंडल की सफाई क्यों आवश्यक है ?

1) रेकी उपचार के समय व्यक्ति प्राण ऊर्जा ग्रहण करता है। प्रभामंडल को साफ कर देने से व्यक्ति की प्राण ऊर्जा सोखने की शक्ति बढ़ जाती है।

2) इससे प्रभामंडल में जमे हुए रोग ग्रस्त *''बायोप्लाज्म''* को हटाकर साफ कर दिया जाता है, प्रभामंडल की जो नलिकाएँ बीमारी की गंदगी के कारण बन्द हो गई हैं वे साफ हो जाती हैं जिससे शरीर के अन्य अंग या चक्र जहाँ अधिक प्राण ऊर्जा एकत्रित है वहाँ से प्राण ऊर्जा सुगमता एवं तीव्रता से रोगग्रस्त स्थान पर प्रवाहित होती है और रोगी का उपचार प्रभावकारी होता है।

3) इससे स्थूल शरीर की स्वास्थ्य किरणें जो आपस में सट जाती हैं अलग-अलग होकर शक्तिशाली हो जाती हैं जिससे शरीर के विकारयुक्त विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में अधिक सुगमता होती है।

प्रभामण्डल में अगर कोई छिद्र हो गया है जिस कारण प्राण ऊर्जा निकलकर नष्ट हो रही है तो वह छिद्र बन्द हो जाता है। अगर इन छिद्रों को बगैर बन्द किए रेकी दी जाती है तो उपचार लाभ बहुत धीरे-धीरे होता है कारण अधिकतर प्राण ऊर्जा इन छिद्रों के द्वारा शरीर के बाहर निकल जाती है और उनका लाभ शरीर को नहीं मिल पाता है। इसीलिए रेकी के पूर्व औरा की सफाई आवश्यक है।

☞ प्रभामण्डल (औरा) का कमजोर हो जाने या नकारात्मक हो जाने को हमारे देश में नजर लग जाना कहते हैं। नजर उतारने की हमारे देश में अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। वास्तव में नजर उतारने से या प्रभामण्डल को शक्तिशाली एवं सकारात्मक (पॉजिटिव) कर देने से रोगी को विशेषकर बच्चों के कष्ट में तुरन्त आराम मिल जाता है और वे तुरन्त हँसने व खेलने लगते हैं। जिसका अनुभव आपने जरूर किया होगा।

रेकी के प्रयोग

रेकी का प्रयोग एक अत्यन्त सरल तकनीक है। रेकी-सुसंगतता (एट्यूनमेन्ट) प्राप्त करने के उपरांत (रेकी प्रथम, द्वितीय अथवा मास्टर प्रथम (IIIA) एवं द्वितीय (IIIB) रेकी प्रवाह आरंभ करने के लिए केवल इसके अनुरोध की ही आवश्यकता होती है। इसके आरंभ के लिये कहें और दृश्यीकरण (विजिलाइजेशन) करते ही यह प्रवाहित हो जाती। रेकी प्रवाहित होने के लिए सदैव तैयार रहती है, और जब कभी भी आप चाहेंगे, यह प्रवाहित होगी। रेकी का प्रयोग करने के लिए रेकी का ध्यान करने, अथवा उसमें एकाग्रचित्त होने या किसी परिवर्तित स्थिति में जाने की आवश्यकता नहीं होती। रेकी इतनी आसानी से प्रवाहित होती है, कि केवल इसके विषय में सोचने मात्र से या उसे आवाहन मात्र से यह प्रवाहित हो जाती है। इस समय जब मैं पुस्तक का यह भाग लिख रही हूँ, उस समय भी रेकी के प्रवाह का अनुभव कर रही हूँ, केवल इसलिए कि मैं इसके विषय में सोच रही हूँ।

उपचार देते समय, यह महत्त्वपूर्ण है, कि अपनी अंगुलियों को मिलायें रखें। इससे ऊर्जा संकलित रहेगी और एक अधिक शक्तिशाली प्रवाह उत्पन्न होगा। यद्यपि रेकी बिना आपके ध्यानस्थ स्थिति में आए हुए प्रवाहित होगी। आप मरीज से अथवा किसी अन्य से बातें करते रहें, और यह फिर भी प्रवाहित होगी। फिर भी यदि आप आंखें बन्द करके रेकी पर अपनी जागरूकता बनाये रखें और अपनी चेतना को इसमें घुलने दें, तो यह बेहतर कार्य करती है। अपने हाथों की संवेदनाओं, जैसे गर्माहट, गुदगुदी, तरंगें, धड़कन अथवा ऊर्जा प्रवाह के प्रति जागरूक रहें। जब आप रेकी करते हैं, आपका मस्तिष्क रेकी की चेतना के प्रति जागरूक होना आरंभ हो जाएगा। इसको आप आनन्द, प्रेम, स्वास्थ्य, सुरक्षा, असीमित शक्ति, स्वतंत्रता, रचनात्मकता, सुंदरता, संतुलन, सामंजस्य तथा अन्य सकारात्मक अनुभूतियों के रूप में जिसकी भी आवश्यकता हो उसी के अनुरूप अनुभव कर सकते हैं। इन अनुभूतियों को अपनी अनुभूतियाँ बनने दें। यदि अन्य विचार आगे आएँ तो उन्हें नम्रता पूर्वक जाने को कहें अथवा अपना ध्यान पुनः रेकी-चेतना पर ले आएँ। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप रेकी को न केवल अधिक शक्ति के साथ प्रवाहित होने देते हैं, बल्कि आपका एक गहन उपचार भी सम्भव हो सकेगा।

रेकी की प्रभावशीलता बढ़ाने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तरीका है, प्रेम, करुणा तथा दयालुता के साथ आना। यह रोगी के लिए भावनात्मक सुरक्षा की अनुभूति उत्पन्न करेगी और उनको रेकी ऊर्जा अधिक पूर्णता से स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

दूसरा रोचक प्रभाव है, कि रेकी कभी-कभी पैरों के नीचे से निकलती है। यदि आप ऐसा होते हुए अनुभव करें तो रेकी देने के लिए अपने पैरों का प्रयोग भी कर सकते हैं। कभी-कभी ये प्रश्न उठते हैं, कि अल्पतम और अधिकतम कितनी बार रेकी देनी चाहिए। चूँकि रेकी ईश्वर द्वारा निर्देशित है, यह कभी भी नुकसान नहीं कर सकती। आप कभी भी अत्यल्प या अत्यधिक रेकी नहीं दे सकते। यदि रेकी देने के लिए आपके पास केवल कुछ मिनट ही हैं, तो दीजिए। रेकी सदैव सहायक होगी। आप नहीं बता सकते कि एक छोटा उपचार भी कितना लाभ पहुँचायेगा। यद्यपि विशिष्ट परिणामों की गारंटी नहीं की जा सकती, फिर भी, कुछ मिनट अथवा कम समय के छोटे उपचारों जैसे - सिरदर्द, दाँत दर्द, मधु मक्खी के डंक का उपचार, रक्त स्राव रोकना दूसरी ओर, कुछ घंटों का या उससे भी लंबा उपचार केवल रेकी के महत्व को ही बढ़ायेगा। लंबे उपचार देकर आप रोगी को अधिक ऊर्जा के द्वारा कोई नुकसान नहीं कर सकते।

रेकी न केवल उस क्षेत्र का उपचार करेगी जहाँ आपके हाथ रखें हैं, बल्कि अक्सर शरीर के उन अंगों में भी चली जाती हैं, जहाँ इसकी आवश्यकता है। उदाहरण के लिए जब हाथों को सिर पर रखा है, उस समय रेकी सिर का उपचार करने के साथ पेट तक भी पहुँच सकती है। पैरों का उपचार करते समय रेकी का प्रवाह पीठ की ओर भी हो सकता है। जब हाथों को पेट पर रखा हो, रेकी इस क्षेत्र का उपचार करेगी तथा साथ ही गर्दन भी पहुँच सकती है।

विशिष्ट लक्षणों का उपचार करते समय **हमारा अंतर्ज्ञान (थर्ड आई) महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता हैं।** पहले संबन्धित क्षेत्र पर अपने हाथ रखने का प्रयत्न करें। यदि आप अत्यधिक मात्रा में रेकी प्रवाहित होती महसूस करते हैं तो वहीं टिके रहें। यदि रेकी भली भाँति नहीं प्रवाहित होती, तो रोगी से पूछें कि वह क्या अनुभव कर रहे हैं। यदि आप दोनों में से कोई भी ऐसा अनुभव करें कि रेकी संबन्धित क्षेत्र का उपचार नहीं कर रही है, तो इस स्थिति का उपचार करने के लिए अपने अंतर्ज्ञान से सर्वोत्तम स्थान दिखाने को कहें। जिस तरफ आप निर्देशित हों उधर अपने हाथों को ले जाएँ। यदि आप वहाँ अधिक रेकी प्रवाहित होती अनुभव करें और रोगी लक्षणों के कम होना सूचित करें, तो आप समझें कि आप ठीक ढंग से निर्देशित हुए हैं। अक्सर, किसी स्थिति का उपचार

करने का सर्वोत्तम स्थान वह नहीं होता, जहाँ लक्षण प्रकट होते हैं। किसी कष्ट का उपचार करने के लिए, सदैव सर्वोत्तम स्थान के चुनाव के लिए ईश्वरीय ऊर्जा से निर्देश प्राप्त करने की प्रार्थना करें।

इस पुस्तक में चित्रित अपना तथा दूसरों का उपचार करने के लिए हाथ की स्थितियाँ केवल सामान्य मार्गदर्शन के लिए हैं। आपको उनके साथ दृढ़ता से चिपके रहने की आवश्यकता नहीं है। अपने अंतर्ज्ञान (इनर गाइडेन्स) का प्रयोग कर सकते हैं।

रोगी को यह जानना चाहिये कि हो सकता है कि आरम्भ में एकदम आराम महसूस होने लगे परन्तु यह सम्भावना भी है कि रोग का थोड़ा कष्ट बढ़ जाये किन्तु यह भी एक सकारात्मक संकेत है इसलिए बीच में उपचार बन्द न करके इक्कीस दिन तक गहन उपचार करते रहना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जब भी आप कहीं दर्द महसूस करें, बेचैनी अनुभव करें, रक्त स्राव हो रहा हो तो ऐसे में आप स्वयं को या पीड़ित व्यक्ति को रेकी द्वारा तुरन्त लाभ पहुंचा सकते हैं।

रेकी का प्रयोग शरीर को स्वस्थ और उच्च प्रतिरोधक बनाए रखने के लिए व्यायाम की तरह किया जा सकता है। यह रोग से सुरक्षा देती है। यह आपके आचरण के स्तर को उच्चता प्रदान करती है। यह आपको जीवन की रोजमर्रा की सामने आनेवाली छोटी-छोटी कठिनाइयों के कारण विक्षुब्ध होने से रोकती है। वास्तव में, समस्याएं आगामी वृद्धि और विकास के अवसरों की तरह शीघ्र ही शुरू हो जाती हैं। रेकी आपका आध्यात्मिक विकास कर आपके जीवन को नयी गुणवत्ता से भर देती है।

आज अधिकांश लोगों ने औषधियों के दुष्प्रभावों को महसूस करना प्रारम्भ कर दिया है क्योंकि वे दिन पर दिन दवाइयों पर ही निर्भर रहने लगे हैं। एक दम लाभ पाने की हमारी प्रवृत्ति ने हमें दवाइयों का और भी ज्यादा दास बना दिया है। सिर-दर्द हो या पेट-दर्द हम दवाई की ओर भागते हैं। लेकिन अब हम दवाइयों के खतरे के प्रति सचेत होने लगे हैं। आज अधिकांश लोग रेकी सेमिनार में इसलिए आने लगे हैं क्योंकि वे रेकी से स्व-उपचार के माध्यम से दवाइयों के इस दवाब को खत्म करना चाहते हैं। कुछ लोग रेकी को सामान्य चिकित्सा-विधियों के विकल्प के रूप में देखते हैं। कुछ लोग दवाब और तनाव से मुक्ति के लिए इसकी शरण में आते हैं ताकि फिर से चैन और शान्ति से भरपूर नींद ले सकें। कुछ लोगों ने रोग और पीड़ा से मुक्ति के लिए रेकी सीखी। कमजोरी और परेशानी दोनों ही शारीरिक तथा मानसिक स्तर पर व्यक्ति को व्यथित करते हैं। इससे दूर रहने का उपाय रेकी ही है।

रेकी प्रार्थना या रेकी शक्ति को बुलाने की विधि-

1) मैं अमुक (अपना नाम लेकर) को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ
2) मैं रेकी शक्ति को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।
3) मैं अपने रेकी गुरू को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।
4) मैं अपने माता-पिता को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।
5) मैं अपने इष्टदेव को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।
6) किसी को रेकी दे रहे हैं तो उसका नाम लेकर उसको भी धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।
7) मैं रेकी गाइड्स को धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।

इमरजेन्सी में बिना प्रार्थना किए रेकी का मात्र ध्यान करके भी हम रेकी देना प्रारम्भ कर सकते हैं। फिर रेकी देने के बाद धन्यवाद् कर दें।

अनुभव करें और कहें **"मैं अपने सभी देवी-देवताओं, मार्ग दर्शकों एवं रेकी गुरूओं का आवाहन करता हूँ वह यहां आयें और हमें आशीर्वाद दें और मार्ग दर्शन करें और हमारा उपचार में सहयोग करें"**

अब रेकी शुरू करें -

☞ ध्यान दें- ☜

यदि आप हमारे यहां से या किसी अन्य स्थान से टच रेकी एवं डिस्टेंस रेकी, करूणा रेकी, सर्जरी रेकी, रेकी एट्यूनमेंट अथवा रेकी ग्रैंड मास्टर सीख चुके हैं। किन्तु प्रथम बार में स्पष्टता नही हो पायी या असन्तुष्ट हैं और चाहते हैं कि पुनः क्लाश में बैठ जायें तो पूर्व स्वीकृति लेकर पुनः क्लाश में आ सकते हैं।

☞ सम्पर्क करें- ☜

डिवायन रेकी सेन्टर

C/o देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर-25

(रावतपुर रेलवे स्टेशन से → गीतानगर क्रासिंग के पास → श्री विश्नोई पार्क के बगल से)

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975

E-mail : anandyoga133@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand Kanpur

Website : www.anandyoga.com & www.colorblindsurecure.com

मन: बीज मंत्र

(रेकी द्वारा चिकित्सा में सहायक)

(परम पूज्य स्व० डा० एस० सी० चित्रे विश्व के सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सकों में गिने जाते हैं। उनके द्वारा अन्वेषित एवं संशोधित निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक मनः बीज मन्त्र यहाँ प्रस्तुत हैं। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुकूल उस मनः बीज मन्त्र को (AFFIRMATION=स्वीकृतियाँ) रेकी के समय दृश्यीकरण करने से या रोगी के बार-बार दोहराने से लाभ अतिशीघ्र होता है। ऐसा अनुभव डा० चित्रे जी के सम्पर्क में आये अब तक हजारों लोगों को हुआ है। मेरा भी अनुभव है। आप भी लाभ उठाकर देखें-लेखिका)

1. **खोया स्वास्थ्य पुनः पाने के लियेः-** ''मैं ईश्वर के प्यार में तनाव रहित होकर शान्ति का अनुभव करता/करती हूँ और ईश्वर की स्वास्थ्य दायिनी जीवनी शक्ति मेरे अंग-अंग में बहती है। इसलिए मैं मन व शरीर से स्वस्थ हो जाता/जाती हूँ। मैं भगवान को धन्यवाद् करता/करती हूँ।''
2. **समस्याओं से छुटकारा पाने के लिएः-** ''मैं अपनी सभी समस्यायें भगवान के हाथ में सौंपकर शान्ति का अनुभव करता/करती हूँ। और पूर्ण विश्वास करता हूँ कि ईश्वर सर्व शक्तिमान है। इसीलिए व मेरी समस्याओं को समाप्त कर देता है। और मैं पूर्ण शान्ति का अनुभव करता/करती हूँ। मैं भगवान का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''
3. **प्रारम्भ किये कार्य में सफलता के लिएः-** ''ईश्वर का अनन्त ज्ञान मेरा पथ निर्देशन करता है। ईश्वर का अनन्त स्नेह मुझे धन्यवाद् से पूर्ण करता है और ईश्वर की अनन्त अनुकम्पा द्वारा मैं जो भी कार्य करता/करती हूँ उसी में सफल होती हूँ। मैं भगवान का धन्यवाद करता/करती हूँ।''
4. **असफल हो रहे व्यापार को पुनः सफल बनाने के लिएः-** ''ईश्वर की अनन्त शक्ति के द्वारा मेरे व्यापार की सारी बाधायें समाप्त हो जाती हैं और मेरा कार्य सुचारू रूप से चलने लगता है। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''

5. **गलत फहमियां एवं मानसिक विरोध समाप्ति के लिएः-** ''ईश्वर का अनन्त स्नेह जो मेरे हृदय में है, वही अनन्त स्नेह (पत्नी या पति, भाई या बहन, गुरु या शिष्य अथवा अन्य जिससे भी गलतफहमी हो गयी हो, उसका नाम लें) के हृदय में है, इसलिए उस अनन्त प्रेम के द्वारा सब गलत फहमियों और मानसिक विरोध समाप्त हो जाते हैं। और ईश्वरीय अनुकम्पा से हमारे और उसके जीवन में सुख-शान्ति और संतुलन आ जाता है। मैं ईश्वर का.....!
6. **अभाव के अनुभव से छुटकारा पाने के लिएः-** ''मैं ईश्वर के प्यार में तनाव रहित होकर शान्ति का अनुभव करता/करती हूँ। क्योंकि ईश्वर मेरा सुख है, स्वास्थ्य है तथा सन्तुलन है। ईश्वरीय शक्ति द्वारा अब मुझे कोई अभाव नहीं है। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''
7. **स्वास्थ्य एवं क्रियाशीलता के लिएः-** ''ईश्वरीय जीवन मुझे स्वस्थ करता है और मेरा शरीर पूर्ण स्वस्थ है। और पूर्णता के साथ क्रियाशील हूँ। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''
8. **दूसरों को निरोग करने के लिएः-** ''ईश्वरीय ज्योति एवं जीवन द्वारा तुम स्वस्थ हो जाते हो, तुम में शक्ति आती है और तुम्हारी बीमारियां दूर हो जाती हैं। ईश्वरीय चेतना तुम्हारे कण-कण में व्याप्त है, जो तुमको नवजीवन प्रदान करती है। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''
9. **धन की आवश्यकता की पूर्ति के लिएः-**''समस्त ब्रह्माण्ड धन-धान्य से पूर्ण है, जो हमारी समस्त आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। मैं ईश्वर का.....!
10. **बदले की भावना से छुटकारा पाने के लिएः-** ''मैं उन सभी को क्षमा करता हूँ और हृदय से भुला देता हूँ जिन्होंने कभी भी मेरा दिल दुःखाया। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता/करती हूँ।''
11. **क्षमा मांगने के लिएः-** ''मैं उन सभी से क्षमा मांगता हूँ जिनका मैंने कभी भी, किसी भी प्रकार से दिल दुःखाया है। मैं ईश्वर .....!
12. **क्रोध से छुटकारा पाने के लिएः-** ''मैं ईश्वर के प्यार में तनाव रहित होकर शान्ति का अनुभव करता हूँ और ईश्वर की अक्रोध मय किरणें मेरे हृदय एवं मस्तिष्क में प्रवेश करती हैं और मेरा क्रोध नष्ट हो जाता है। मैं ईश्वर का.....!

13. **अच्छा वक्ता बनने के लिएः-** ''मैं ईश्वर के प्यार में तनाव रहित होकर शान्ति का अनुभव करता हूँ और ईश्वरीय कृपा से जब भी मैं व्याख्यान देता हूँ मेरे अन्दर से एक अच्छे वक्ता के समस्त गुण, जैसे-विषय पर ही बोलना, समय के अन्दर बोलना, मधुर बोलना, सही बोलना, सही सम्बोधन आदि गुण स्वयं प्रस्फुटित हो जाते हैं। मैं ईश्वर का .....!

14. **बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब आदि से छुटकारा पाने के लिएः-** ''मैं ईश्वर के प्यार में तनाव रहित होकर शान्ति का अनुभव करता हूँ और ईश्वरीय व्रत, शक्ति एवं दृढ़ता मेरे अन्दर प्रवेश कर जाती है और उसी दृढ़ शक्ति से जो भी व्रत, मैं करता हूँ चाहे वह बीड़ी न पीने का हो, चाहे वह सिगरेट न पीने का हो, चाहे वह तम्बाकू न खाने का हो अथवा चाहे वह शराब न पीने का हो। मैं उन्हें पूर्णतया छोड़ देता हूँ। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।''

15. **स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिएः-** ''ईश्वरीय कृपा से मैं जो कुछ भी स्मरण करता हूँ मुझे स्मरण हो जाता है और स्मरण की जब भी मुझे आवश्यकता होती है, वह स्मरण आ जाता है। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता/करती हूँ।''

16. **सत्य को मधुरता के साथ कहने के लिएः-** ''ईश्वर की कृपा से अब मैं सत्य को भी मधुरता के साथ कहता हूँ। मैं ईश्वर का.....!

17. **कुपथ्य से बचाव के लिएः-** ''ईश्वर की कृपा से अब मैं कुपथ्य की परिस्थितियों में भी कुपथ्य नहीं होने देता। मैं ईश्वर का धन्यवाद् करता/करती हूँ।

18. .....

ध्यान देंः-अपनी आवश्यकता के अनुसार, उपर्युक्त मनः बीज मन्त्र की तरह, सकारात्मक वाक्य स्वयं भी बना सकते हैं। अन्य बने बनाये सकारात्मक वाक्य के लिये अवश्य-अवश्य-अवश्य पढ़ें पुस्तक 'साक्षी ध्यान क्या-क्यों-कब और कैसे' एवं 'सकारात्मक सोच की शक्ति' तथा 'अवचेतन की शक्ति' - जो देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर से प्राप्त कर सकते हैं।

रोगों में रेकी कैसे लें?

वैसे तो हम सब जानते हैं कि रेकी अपना रास्ता स्वयं चुनती है शरीर में जहां पर भी आवश्यकता हो रेकी वहीं पहुंच जाती है। अपना रास्ता स्वयं चुनने में रेकी सक्षम है। लेकिन फिर भी जहां पर आवश्यकता हो उसके अनुसार उसी स्थान पर हाथ रखकर संकल्प करके रेकी दी जाती है तो लाभ मिलने में शीघ्रता होती है।

1. **मूलाधार पर रेकी**-शरीर में हड्डी से सम्बन्धित कमजोरी या खड़े होने तथा चलने में कष्ट या शरीर में किसी प्रकार की मजबूती में कमी या धन का अभाव या कैंसर जैसे उपरोक्त कष्टों में मूलाधार चक्र पर आवश्यकतानुसार 15 से 30 मिनट प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देने से कष्ट में आराम मिलता है।

2. **स्वाधिष्ठान चक्र**-पेडू प्रदेश में आने वाले सभी अंगों जैसे- प्रजनन अंग, मूत्राशय, बच्चे न होना, गर्भाशय की कोई समस्या अथवा नये कार्यों के सृजन, किसी भी कार्य के विकास के लिये 10 से 30 मिनट तक स्वाधिष्ठान चक्र पर प्रतीकों के साथ (रेकी सिम्बल) रेकी देने से उपरोक्त कष्टों में आराम मिलता है।

3. **मणिपूरक चक्र**-नाभि से ऊपर छाती से नीचे पेट पर आने वाले सभी अंगों के कष्ट जैसे पाचन की गड़बड़ी, लीवर, प्लीहा पैंक्रियाज की खराबी, गैस, एसीडिटी, खट्टी डाकर बेचैनी मन्दबुद्धि बच्चों को, याद्दाश्त की कमी में, ज्वर में, कमजोरी में, मन्दाग्नि में, खून की कमी में मणिपूरक चक्र पर 10 से 30 मिनट तक प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देने से आराम मिलता है।

4. **हृदय चक्र**-छाती पर आने वाले सभी अंग जैसे :- फेंफड़े के कष्ट, हृदय रोग, प्रेम की कमी, कठोर हृदय व्यक्ति, शोक संतप्त व्यक्ति, उच्च साधना, शक्ति हेतु हृदय चक्र पर 10 से 30 मिनट तक प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देते हैं।

5. **विशुद्ध चक्र**-गले से सम्बन्धित कष्ट, अधिक मोटापा, अधिक पतलापन, थाइराइड, पैराथाइराइड की खराबी, शरीर के संचार तन्त्र की खराबी जैसे कोई चीज पकड़ने पर समझ में न आना कि वह चीज पकड़ी या नहीं अथवा पैर में चप्पल पहनी या नहीं जान न पाना, इस प्रकार की समस्याओं में एवं अच्छे वक्ता बनने हेतु विशुद्ध चक्र पर 10 से 30 मिनट तक प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देने से लाभ मिलता है।

6. **आज्ञा चक्र**-एकाग्रता, स्मरण शक्ति, प्रखर बुद्धि, आंख के कष्ट, नाक के कष्ट,

निचले मस्तिष्क में कष्ट, कम लम्बाई, पिट्यूटरी ग्रन्थि की गड़बड़ी एवं जिद्दी व्यक्ति को आज्ञा चक्र पर 10 से 30 मिनट तक प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देते हैं।

7. **सहस्त्रार चक्र**–ऊपर के सिर के कष्टों में एवं पिनियल ग्रन्थि की गड़बड़ी में 10 मिनट तक प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी दें।

ध्यान रखें:-सहस्त्रार चक्र में ऊपर से रेकी नहीं देते बल्कि दांये बांयें से रेकी देते हैं।

8. **भय** – भय में घुटनों पर 15 मिनट रेकी देते हैं।

9. **आलस्य** – जंघा पर 15 मिनट रेकी देते हैं।

10. **स्फूर्ति** – चक्र संतुलन से शरीर के सभी अंगों पर ऊर्जा पहुंच जाती है और शरीर में स्फूर्ति आ जाती है।

11. सिर दर्द - सिर दर्द में रेकी देने हेतु स्थान:-

1. मस्तक 2. टैम्पिल्स 3. कनपटी
4. सहस्त्रार (दांयें बांयें से) 5. आज्ञा चक्र पर आगे पीछे एक साथ
6. विशुद्ध चक्र पीछे से

12. आंखों के कष्ट–

1. आंखों की पुतली 2. आंखों के अन्दर के कार्नर
3. आंखों के बाहरी कार्नर 4. आज्ञा चक्र पीछे से
5. किडनी 6. लीवर7. मूलाधार चक्र

13. कान के कष्ट–

1. कान के बाहरी हिस्से की मसाज 2. कान के ठीक नीचे
3. कान के पीछे उठी बड़ी हड्डी 4. पीछे से आज्ञा चक्र
5. किडनी 6. मूलाधार 7. जंघा के जोड़ों पर

14. दांत के दर्द–

1. जबड़े 2. गर्दन के नीचे पीछे से

15. जीभ–

1. जीभ का अगला हिस्सा 2. जीभ के दांयें बांयें बाहर से
3. पैर के तलवे

16. मुंह भोजन नली में छाले एवं पेट के रोग:-

1. मुंह (होठों पर) 2. गले में (भोजन नली पर) 3. आमाशय
4. आँतें 5. लीवर 6. हृदय 7. किडनी
8. पैर के तलवे 9. पैंक्रियाज

17. लीवर के कष्ट:-

1. लीवर 2. पैंक्रियाज 3. आमाशय
4. आँतें 5. हृदय 6. किडनी

18. पैंक्रियाज के कष्ट में:-

1. पैंक्रियाज 2. लीवर 3. आमाशय
4. आँतें 5. हृदय 6. किडनी

19. गुदा के कष्ट में:-

1. कष्ट अंग (गुदा) 2. कॉकिक्स 3. आमाशय 4. आँतें

20. फेफड़े के कष्ट में:-

1. फेफड़े
2. थाइसस ग्रन्थि
3. हृदय
4. लीवर
5. आमाशय
6. आँतें
7. माथे
8. माथे के दांयें बांयें (टैम्पिलस)
9. नाक
10. सहस्त्रार चक्र (दांयें बांयें से)
11. आज्ञा चक्र (पीछे से)
12. विशुद्ध चक्र (पीछे से)
13. पैंक्रियाज
14. किडनी
15. मूत्राशय

21. हृदय रोग में:-

1. हृदय 2. लीवर 3. आमाशय
4. आँतें 5. पैंक्रियाज 6. किडनी
7. रीढ़ की हड्डी (एक हाथ ऊपर दूसरा नीचे)

22. किडनी के कष्ट में:-

1. किडनी 2. पैंक्रियाज 3. लीवर 4. हृदय
5. आमाशय 6. आँतें 7. मूत्राशय 8. मूत्र नली

☞ इस प्रकार हमने देखा कि जब भी किसी अंग के कष्ट हो सबसे पहले उस कष्ट अंग में फिर उससे सम्बन्धित सभी मुख्य अंगों एवं उस अंग पर प्रभाव डालने वाली ग्रन्थियों पर रेकी दें।

23. रक्त संचार एवं ऊर्जा बढ़ाने हेतु शरीर के सभी यिन और यान दोनों तरफ एक्यू मसाज या रेकी मसाज भी कर सकते हैं।

24. **उपरोक्त रेकी देने की विधियों के अतिरिक्त भी किसी व्यक्ति को किसी स्थान पर कष्ट है तो उस कष्ट स्थान पर भी 15-20 मिनट तक भी प्रतीकों (रेकी सिम्बल) के साथ रेकी देकर लाभ पहुँचाया जा सकता है।**

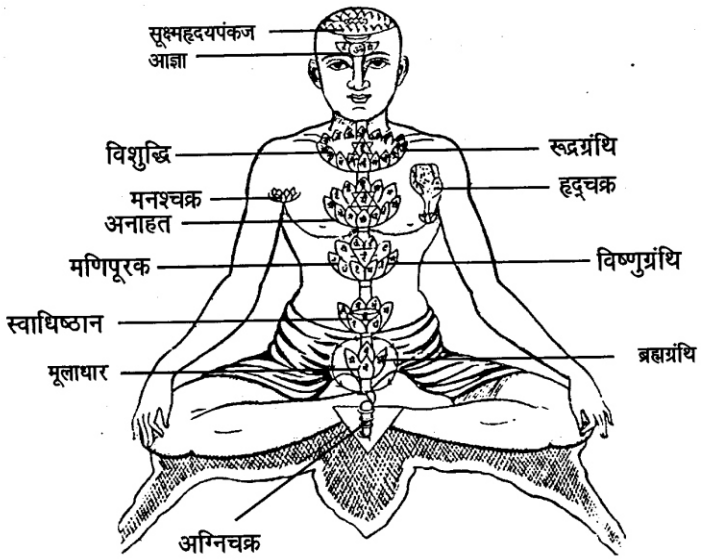

षट्चक्र जाग्रत अवस्था में

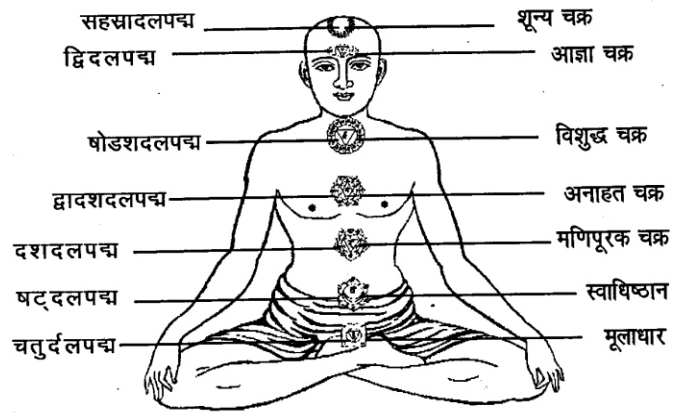

षट्चक्र सुषुप्ति अवस्था में

☞ यह पुस्तक रेकी साधना के प्रति आपको सीखने की जिज्ञासा एवं श्रद्धा उत्पन्न करेगी। कृपया अपने आप अभ्यास न करें। अभ्यास के लिए रेकी गुरू के मार्गदर्शन में सीखना, समझना एवं शक्तिपात करवाना अनिवार्य है।

पानी को ऊर्जान्वित करना

(रेकी देना)

पहले सन्त, महात्मा, गुरू पानी को पढ़कर देते थे और रोगी व्यक्ति उस पानी को पीता था और कष्ट में आराम मिल जाता था। रेकी डिग्री द्वितीय का चेनल भी उसी प्रकार पानी को ऊर्जान्वित करके व्यक्ति का अथवा अपनी समस्या हल कर सकता है। हाथ को रगड़कर सक्रिय करें तत्पश्चात् अपने बांयीं हथेली पर एक गिलास पानी भरकर रखें। और दांयें हांथ से गिलास के मुँह पर **'शक्ति प्रतीक मन्त्र'** बनायें हांथ को ऊपर नीचे करते हुए तीन बार प्रतीक मन्त्र दोहरायें जल को शुद्ध करने के लिए प्रवाहित हो शुद्ध करो, शुद्ध करो, शुद्ध करो। ऐसा तीन बार करें फिर घड़ी की विपरीत दिशा में (एन्टीक्लाक वाइज) हाथ घुमाते हुए प्रवाहित हो...11 से 21 बार बोलें।

- पुनः शक्ति प्रतीक बनायें तीन बार हांथ ऊपर नीचे करते हुए प्रतीक मन्त्र दोहरायें। जल को सक्रिय करने के लिए प्रवाहित हो। सक्रिय करो, सक्रिय करो, सक्रिय करो। दांयें हांथ को घड़ी की दिशा में (क्लाक वाइज) घुमाते हुए बोलें प्रवाहित हो..11 से 21 बार करें।
- शुद्ध और सक्रिय करने के बाद जैसी ऊर्जा जल में डालनी हो वैसे शक्ति प्रतीक बनाकर तीन बार प्रतीक मन्त्र दोहरायें तत्पश्चात् इसमें एकाग्रता बढ़ाने वाली ऊर्जा प्रवाहित हो, प्रवाहित हो, प्रवाहित हो, तीन बार बोलें क्लाक वाइज 11 से 21 बार प्रवाहित हो कहते हुए ऊपर वाला हाथ घुमायें। ऐसा तीन बार करें।
- इसी प्रकार स्मरण शक्ति, मन की शान्ति, मधुरता स्थापित करना मन को शान्त करना, क्रोध को शान्त करना, प्रखर बुद्धि आदि जिस भी ऊर्जा की आवश्यकता हो उस ऊर्जा का नाम लेकर उपरोक्त प्रकार से पानी चार्ज करें।
- जल को औषधि युक्त बनाने के लिए भी पहले **'शक्ति प्रतीक मंत्र'** बनायें तीन बार प्रतीक मन्त्र दोहरायें फिर बोलें इस जल में अमुक (.....) रोग को अथवा कष्ट को दूर करने वाली दिव्य औषधि प्रवाहित हो, प्रवाहित हो बोलते हुए हाथ को क्लाक वाइज 11 से 21 बार घुमायें। ऐसा तीन बार करें।
- इसी प्रकार से भोजन को भी ऊर्जान्वित कर सकते हैं।

स्पर्श (टच) एवं दूरस्थ (डिस्टेंस) रेकी

रेकी के डिग्री II की कार्यशाला में स्पर्श रेकी के साथ-साथ दूरस्थ उपचार विधि भी सिखायी जाती है इसमें प्रथम डिग्री से चार गुना अधिक ऊर्जा में वृद्विहोती है। यह शरीर के कम्पन स्तर को और अधिक प्रबल कर देता है। रेकी डिग्री II की शक्ति, सुसंगता पाने वाला व्यक्ति का भावनात्मक, मानसिक और कार्मिक स्तर पर परिवर्तन आता है। जबकि प्रथम डिग्री में भौतिक स्तर पर ही परिवर्तन होता है। रेकी डिग्री II में तीसरा नेत्र उत्तेजित हो जाता है इससे अन्तरात्मा की आवाज जानने की क्षमता बढ़ जाती है। डॉ० मिकाओ उसई को अपनी तपस्या की अन्तिम रात्रि में जो सफेद चमकदार प्रकाश उनके आज्ञा चक्र पर तीर की तरह लगा जिससे वे मूर्च्छित हो गये। उस अचेतनावस्था में जो प्रतीक देखे और जब उन पर कार्य किया तो उसकी क्रियाशीलता को देखकर आश्चर्यचकित हो गये। यही तीन प्रतीक डिग्री II में सिखाये जाते है। इसमें मुख्य रूप से उसई के तीन सिम्बल सिखाये जाते हैं जो वास्तव में बहुत शक्तिशाली है। परन्तु **इन प्रतीकों का प्रयोग बिना सुसंगता के नहीं करना चाहिए क्योंकि बिना सुसंगता (रेकी गुरू द्वारा शक्तिपात) के इन प्रतीकों का प्रयोग करने से अपने शरीर की आध्यात्मिक शक्ति का ह्रास होता है। डिग्री II (द्वितीय) की कार्यशाला में ही इन प्रतीकों की शक्ति, प्रकृति, बनाने की विधि एवं प्रयोग विधि सिखायी जाती है। इन प्रतीकों का बनाने का अच्छी प्रकार अभ्यास कराया जाता है साथ ही इनके मन्त्रों को याद कराया जाता है।**

यह प्रतीक एक प्रकार से तन्त्र, यन्त्र और मन्त्र की तरह कार्य करते हैं। अतः पहले जानें क्या है तन्त्र-यन्त्र और मन्त्र। भारत क्या विश्व के गूढ़ रहस्य के मनीषियों ने प्रकृति की जिन तीन ऊर्जाओं को जाना उनका नाम उन्होनें तन्त्र, यन्त्र और मन्त्र दिया और उन ऊर्जाओं का सामान्य जीवन में उपयोग किया। जैसे हमारी पांचों इन्द्रियों की देखने-सुनने की शारीरिक मानसिक क्षमतायें है वैसे ही तन्त्र-यन्त्र और मंत्र भी हमारी परामानसिक क्षमतायें हैं। पशु, पक्षी व पेड़ पौधो में भी यह क्षमतायें होती है। विज्ञान में भी अब इन शक्तियों की वैज्ञानिकता को सिद्ध किया जा सकता है। सामान्य व्यक्ति इनके नाम को सुनकर ही अपनी क्षमता से बाहर की चीज मान लेता है कि यह तो पंडितों, ज्योतिषियों,

तान्त्रिकों और पुरोहितों की करने की चमत्कारी विद्या है, जो कठिन तपस्या व साधना करके प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए वह स्वयं प्रयोग करने में रुचि नहीं रखता अधिक बीमार पड़ जाने पर किसी भी प्रकार से लाभ न मिलने पर वह पंडित, पुरोहित तथा तान्त्रिकों का सहारा लेकर उपचार करवाता है। जबकि इस परामानसिक शक्ति का प्रयोग करने का उसी प्रकार अधिकार है जिस प्रकार हम अपने हांथ, पैर आदि शारीरिक अंगों का अभ्यास कर उनमें दक्षता हासिल कर लेते हैं, उसी प्रकार हम नियमित अभ्यास से अत्यन्त सरलता से इन परामानसिक शक्तियों का प्रयोग करने में भी हम दक्षता हासिल कर लेते हैं। परन्तु हम अपनी इस शक्ति को पहचानना ही नहीं चाहते जिस प्रकार शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं के प्रशिक्षण की सुविधायें हैं उसी प्रकार मानव की इन शक्तिशाली परामानसिक (पैरासाइकोलॉजी) शक्तियों के प्रशिक्षण की कोई सुविधा नहीं है।

☞ तंत्र

परिभाषाः-किसी भी कार्य करने की विधि/कला/तरकीब/तरीका/मैथड/ प्रयोग को तन्त्र कहते हैं।

☞ ☞ यंत्र

परिभाषाः-जिसके द्वारा हम अपने भावों और प्रकृति की शक्तियों एवं ऊर्जाओं को एक विशेष ज्यामिति आकार के चित्र या रेखाओं द्वारा उसकी गति को अभिव्यक्त करते हैं। यह सभी चित्र, रेखायें या प्रतीक (सिम्बल) यन्त्र कहलाते है।

☞ ☞ ☞ मंत्र

परिभाषाः-जिस विचार या भाव को बार-बार दोहराया जाता है वह मंत्र हो जाता है।

'भावना का चमत्कार'

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

-श्री राम चरित मानस

अर्थात् जिसकी जैसी भावना होती है। प्रभु उसको उसी रूप में दर्शन देते हैं। अर्थात् सकारात्मक सोंच (Positive Thought) से उसका संसार सकारात्मक और नकारात्मक सोंच (Negative Thought) से उसका संसार नकारात्मक बन जाता है।

रेकी डिग्री I & रेकी डिग्री II की सुसंगता

(टच रेकी एवं डिस्टेन्स रेकी की शक्तिपात की दीक्षा)

सुसंगता (एट्यूनमेन्ट या दीक्षा) लेने के पहले की तैयारी

सुसंगता या दीक्षा लेने से पहले दिन अधिकतम अभ्यासी को निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए। ध्यान रहे रोटी-दाल-चावल-खिचड़ी-दलिया-खीर अन्नाहारी है शाकाहारी नहीं है।

(1) दीक्षा लेने से पहले तीन दिन शाकाहारी एवं सादी रीति से बना हुआ भोजन करें। ध्यान रहे रोटी-दाल-चावल-खिचड़ी-दलिया-खीर अन्नाहारी है, शाकाहारी नहीं।

(2) अगर तीन दिन तक दीक्षा लेने के पहले फल, या सब्जी, रस पर उपवास रख लें तो बहुत लाभकारी होता है। सूप, जूस, फल-सब्जी शाकाहारी है।

(3) चाय, कॉफी, मीठा आदि न लें। या कम कर दें।

(4) बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब आदि किसी भी प्रकार का नशा तीन दिन पहले बन्द कर दें तो अच्छा है। बिलकुल बंद कर दें तो और श्रेष्ठ है।

(5) हल्के व्यायाम करें या घूमने जायें अथवा **'भ्रमण योग'** करें।

(6) क्रोध, भय, निराशा घृणा, ईर्ष्या, चिन्ता आदि मनोविकारों से अपने को दूर रखें। इसके लिये **'जड़ समाधि', 'योग निद्रा'** या **'साक्षी ध्यान'** का अभ्यास करें।

(7) उत्तेजक नाटक या अश्लील फिल्म तीन दिन पहले से न देखें। यदि दिख जायें तो साक्षी भाव रखें।

(8) कब्ज रहता हो तो शौंच के बाद **'गणेश क्रिया'** किया करें। रात को सोने से पूर्व **'बस्ति क्रिया'** से पेट साफ करें।

(9) जुकाम का प्रकोप हो, नाक बंद रहती हो तो **'तेल नेति'** व **'रबर नेति'** करें।

(10) अम्ल (एसिड) या पित्त का प्रकोप हो तो **'कुंजर'** से आमाशय साफ करें।

जो इन नियमों का पालन करता है वह सुसंगता (दीक्षा) पाने के लिए बेहतर होता है। इन क्रियाओं की क्रिया विधि के लिये अवश्य पढ़ें पुस्तक **'योग द्वारा कायाकल्प' एवं 'साक्षी ध्यान'** लेखक-डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी'

☞ अपने शरीर से दूसरे को रेकी देना

- इसी प्रकार यदि अपने शरीर से किसी रोगी को रेकी उपलब्ध करना हो तो-
- उस व्यक्ति को आज्ञा चक्र में देखेंगे और मन में दोहरायेंगे मेरा शरीर अमुक... के शरीर के समान है। और उसके कष्ट को देखेंगे, ठीक होता देखेंगें।
- उस व्यक्ति को अपने शरीर के चौबीस अंगों पर हाथ रखकर आज्ञा चक्र पर प्रतीक बनाते हुए कल्पना में यह अनुभव करते हुए कि अमुक..... व्यक्ति के रेकी उपलब्ध हो रही है रेकी उपलब्ध करायेंगे।
- अन्त में एक बार फिर उस व्यक्ति को आज्ञा चक्र में लायेंगे सफेद प्रकाश में घिरा देखेंगे और ठीक हो जाता है ऐसा देखते हुए तीनों प्रतीक (सिम्बल) क्रमशः बनायें।
- रेकी शक्ति को और साथी को मन में धन्यवाद् देते हुए वापस आ जायें।

☞ अपनी जंघा के माध्यम से रेकी भेजना या लेना:-

- रेकी प्रार्थना करके। जिसको रेकी देना है उस व्यक्ति को अपने आज्ञा चक्र में सफेद प्रकाश से घिरा हुआ देखना और उसके कष्ट को ठीक होता हुआ देखना।
- सेतु प्रतीक (सिम्बल) से सम्बन्ध स्थापित करना।
- कल्पना करना कि मेरी दांयीं जंघा अमुक..... के शरीर का अगला हिस्सा है। और मेरी बांयी जंघा अमुक के शरीर का पिछला हिस्सा है। अब चित्रानुसार जंघा को शरीर के हिस्सों के अनुसार बांटकर प्रत्येक अंगों पर एक-एक करके तीन-तीन मिनट हाथ रखकर क्रमशः प्रतीक बनाते हुए सभी चौबीस अंगों पर रेकी उपलब्ध करायें।
- पहले दांयीं जंघा से आगे के 17 अंगों पर रेकी उपलब्ध करायें।
- ऊर्जा देर तक उपचार करें इसके लिए सीलिंग लगायें।
- बाद में बांयीं जंघा से शरीर के पीछे के अंगों पर रेकी उपलब्ध करायें।
- चौबीस अंगों की रेकी हो जाने पर स्ट्रोक लगायें।
- नकारात्मक ऊर्जा ब्रह्माण्ड में भेजें अन्त में लविंग टच (मधुर स्पर्श) करके रेकी को धन्यवाद् करके समाप्त करें।

☞ कम समय का दूरस्थ उपचार

आज के समय में किसी के पास इतना समय नही है कि हर समय प्रत्येक को 72 मिनट का उपचार दें। ऐसी स्थिति में हम मात्र 10 या 20 मिनट का उपचार निम्न प्रकार से देकर भी रोगी को कष्ट में लाभ पहुँचा सकते हैं कम समय में रेकी देने हेतु बैठने की चार स्थितियाँ हैं-

1. हाथों को आर्शीवाद की स्थिति में चित्रानुसार रखें।
2. हाथों को घुटने पर चित्रानुसार हथेली आसमान की ओर रखें।
3. दोनों हथेली को कप बनाकर चित्रानुसार एक दूसरे पर रखें।
4. ध्यानात्मक स्थिति में बैठकर।

हाथों की चारों स्थितियों में से किसी स्थिति में बैठकर आप कम समय की रेकी भेज सकते हैं।

आप किसी भी शारीरिक कष्ट, मानसिक कष्ट, परीक्षा में असफलता, मन परिवर्तन, गलत और बुरी आदतों से छुटकारा, सम्बन्धों में सुधार, आर्थिक सुधार, किसी मनोकामना की पूर्ति हेतु दे सकते हैं यह उपचार 5 मिनट से कितने भी समय का दिया जा सकता है। आदर्श उपचार हेतु कम से कम 20 मिनट का उपचार दिया जाता है। परिस्थितियों अनुसार इसको कम या ज्यादा किया जा सकता है।

- चारों में से किसी भी एक स्थिति में बैठ जायें।
- रेकी प्रार्थना करें!
- जिस व्यक्ति का उपचार करना है उसको अपने आज्ञा चक्र में सफेद प्रकाश में देखें।
- जो भी उस व्यक्ति की समस्या हो उसका दृश्यीकरण करें पहले जैसे का तैसा, हल हो रहा है हल हो जाता है। (पूरी तरह घटित होता देखें)
- क्रमशः आवश्यकतानुसार प्रतीक बनाकर रेकी देना शुरू करें।
- दस/पन्द्रह/बीस मिनट या इससे भी अधिक आवश्यकतानुासार रेकी दें।
- समय पूरा होने पर पुनः जिसको रेकी दे रहें हैं उसको देखें उसके कष्ट को ठीक होता देखें क्रमशः तीनों प्रतीक (सिम्बल) बनाकर मन्त्र बोलें।
- अन्त में रेकी ग्रहण करने वाले व्यक्ति को और रेकी शक्ति को धन्यवाद् देकर समाप्त करें।
- कम समय का दूरस्थ उपचार करते समय हम रोगी की फोटो को सामने रखकर अथवा हाथ में लेकर रेकी दे सकते हैं अथवा एक कागज पर अपनी पूरी बात लिखकर उस कागज को भी हांथ में रखकर रेकी भेज सकते हैं।

☞ गुड़िया या साफ्ट ट्वायज अथवा तकिया का प्रयोग

गुड़िया या साफ्ट टॉय जिसमें सभी अंग बने हों ऐसा खिलौना लेकर अथवा तकिये पर अंगों की कल्पना करके भी दूर बैठे व्यक्ति को रेकी भेजी जा सकती है।

- रेकी प्रार्थना करें! जिसको रेकी उपलब्ध करानी है उस व्यक्ति को अपने आज्ञा चक्र में सफेद प्रकाश में घिरा हुआ देखें।
- उसके कष्ट को देखें ठीक होता देखें, ठीक है देखकर क्रमशः तीनों प्रतीकों से रेकी उपलब्ध करायें।
- कल्पना करें अमुक का शरीर इस गुड़िया/साफ्ट/टॉय/तकिये या खिलौने में है।
- गुड़िया/खिलौने/तकिये के प्रत्येक अंग पर अमुक....के शरीर की कल्पना करते हुए हाथ रखकर सभी चौबीस अंगों पर प्रतीक बनाते हुए रेकी उपलब्ध करायें।
- आगे के अंग पूरे होने पर सीलिंग लगायें।
- इसके पश्चात् पीछे के अंगों पर रेकी उपलब्ध करायें और स्ट्रोक लगायें।
- नकारात्मक ऊर्जा ब्रह्माण्ड में भेजें और मधुर स्पर्श दें।
- अन्त में रेकी शक्ति को धन्यवाद् दें।

☞ भविष्य को रेकी भेजना

जब आप किसी व्यक्ति को किसी विशेष दिन, किसी घटना, अथवा भविष्य की किसी योजना के लिए रेकी देना चाहते हैं तो उस दिन उस योजना, उस घटना के लिये रेकी भेज सकते हैं।

- पहले योजना या घटना किस दिन, किस समय, क्या परिणाम चाहिए यह सुनिश्चित करें।
- रेकी प्रार्थना करें!
- अपने आज्ञा चक्र के सफेद प्रकाश में जिस घटना या योजना को जिस दिन के लिए रेकी देना है उस समय पूरी घटना को पूरा होता देखें और तीनों प्रतीकों से 15–20 मिनट अथवा जितनी देर देना चाहते हैं रेकी उपलब्ध करायें।
- समय पूरा होने पर आज्ञा चक्र में सफेद प्रकाश में उस घटना को घटित होने वाले समय में घटित होता देखकर तीनों प्रतीक बनायें प्रतीक मन्त्र दोहरायें।
- अन्त में जिस व्यक्ति की समस्या या घटना हो उसको व रेकी शक्ति को धन्यवाद् देते हुए समाप्त करें। इसी प्रकार हम भूत में घटी घटनाओं को भी रेकी भेज सकते हैं।

☞ रेकी विद्या बिना शक्तिपात (एट्यूनमेन्ट) के सिद्ध नहीं होती रेकी विद्या के रेकी मास्टर कोर्स में रेकी का शक्तिपात सिखाया जाता है। तभी आप रेकी चैनल को एट्यूनमेन्ट कर सकने में समर्थ होते हैं।

शक्ति सिम्बल

(चो-कू-रे, रंग सफेद)

शक्ति सिम्बल का अर्थ (चो-कू-रे)-बिजली कौंधने के समान वाली ब्रह्माणीय शक्ति मैं तुझे पुकार रहा हूँ आओ ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण ऊर्जा-जीवन को अधिकार में लो, अपनी शक्ति का पदार्पण करो। इस प्रतीक की शक्ति को बढ़ाने हेतु इस प्रतीक का सैंडविच बनाकर प्रयोग करते हैं इसके निम्न कार्य हैं।

1. उसई के सभी प्रतीकों (सिम्बल) की शक्ति बढ़ाने का कार्य करता है।
2. किसी भी सजीव या निर्जीव वस्तु की शक्ति बढ़ानी हो, क्रिस्टल को चार्ज करना हो किसी का शक्ति शाली उपचार करना हो तो शक्ति प्रतीक से करते है।
3. किसी भी सजीव या निर्जीव वस्तु की नकारात्मकता को हटाना हो, हानिकारक ऊर्जा को हटाना हो, घर साफ करना, पानी को शुद्ध कर चार्ज करना। भोजन या खाने की किसी भी वस्तु को शुद्ध कर शक्तिशाली व पाचक बनाना, जल को औषधीय प्रयोग करने योग्य बनाना, कमरों में दीवालों पर लगी हुई सभी वस्तुओं की नकारात्मकता हटाकर ऊर्जावान बनाना, उपचार करना, सभी इसी प्रतीक से करते हैं।
4. संभावित भविष्य की घटनाओं से सुरक्षा, कीमती वस्तुओं, घर, वाहन, धन की सुरक्षा हेतु इस प्रतीक का प्रयोग किया जाता है।
5. ऊर्जा क्षय रोकने के लिए भी इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
6. जहां तक ऊर्जा न जाती हो ऊर्जा के अन्दर प्रवेश में अवरोध हो तो यह प्रतीक वर्मे की तरह कार्य करता है जिस प्रकार जब लकड़ी में कील नही जाती है तो वर्मे से पहले छेद कर देते हैं तो कील चली जाती है। ठीक उसी प्रकार यह प्रतीक जिस स्थान पर ऊर्जा नहीं पहुँचती वह कष्ट से पूरी तरह बन्द है वहां 5-6 बार जब इस प्रतीक को प्रयोग किया जाता है तो ऊर्जा वहां तक पहुंचने लगती है।
7. यह प्रतीक कुण्डलिनी ऊर्जा को जाग्रत कर हाथों के द्वारा रोगी व्यक्ति के शरीर में पहुंचाकर उसके कष्ट को दूर करता है।

8. इस शक्ति प्रतीक का प्रयोग अपने सभी चक्रों पर प्रतिदिन करके अपने शरीर के सभी कष्टों और नकारात्मक ऊर्जाओं को हटाकर अपने शरीर को ऊर्जावान बना सकते हैं। अर्थात् किसी भी चीज को चाहे निर्जीव हो या सजीव उसको शुद्ध, सक्रिय, उपचार, सुरक्षित करने हेतु शक्ति प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
9. इस प्रतीक से पानी को हानि रहित कर सकते हैं।
10. अपने भोजन को पाचक, पोषक एवं निष्कासक बना सकते हैं।

शक्ति प्रतीक

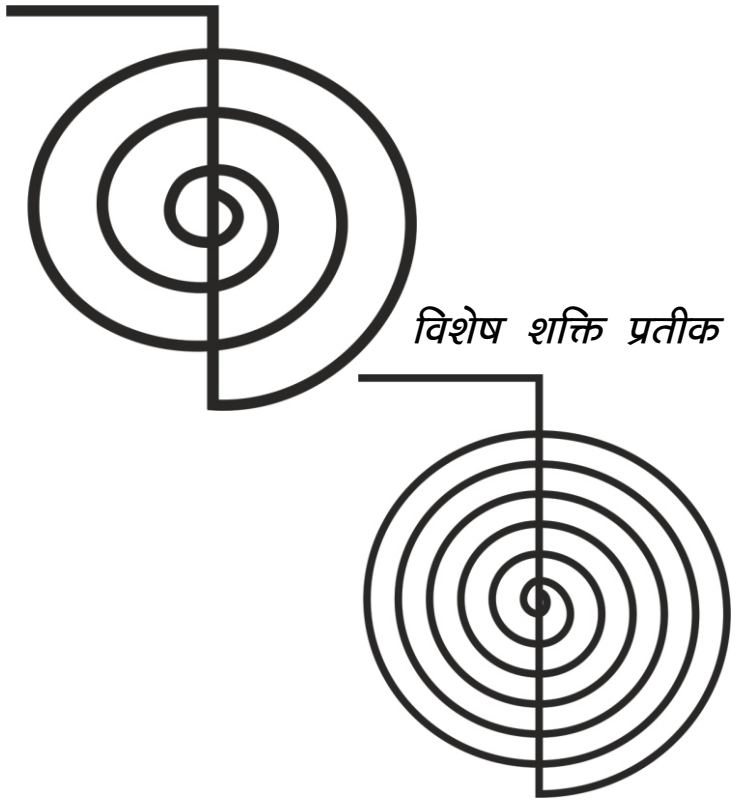

विशेष शक्ति प्रतीक

☞ **क्रमशः बनाने की विधि एट्यूनमेन्ट (शक्तिपात) के समय रेकी गुरू (रेकी मास्टर) आपको सिखाते हैं।**

मानसिक सिम्बल

(से-हे-कि, रंग गुलाबी)

मानसिक सिम्बल

मानसिक सिम्बल (से-हे-कि) का अर्थ-ब्रम्हाण्ड की संतुलन, समन्वय एवं सामन्जस्य बनाने वाले ऊर्जा कोषों को खोलने वाली सर्वोच्च शक्ति आओ और संतुलन, समन्वय एवं सामन्जस्य बनाओ।

संतुलन, समन्वय, सामान्जस्य बनाने के लिए इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं ऊर्जा कोषों को खोलने हेतु सर्वोच्च शक्ति की कुंजी है।

1. दायें व बायें मस्तिष्क के संतुलन हेतु, तनाव से मुक्ति हेतु, मन को शान्त करने हेतु दोनों कनपटी पर इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
2. स्मरण शक्ति, एकाग्रता, प्रखर बुद्धि एवं परामानसिक शक्तियों को सक्रिय करने के लिए आज्ञा चक्र पर प्रयोग करते हैं।
3. भावनात्मक समस्यायें, बुरी आदतें, दिल के दर्द, पुराने आघात, नशा, गलत आदतें हृदय की कमजोरी हेतु हृदय चक्र पर इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
4. भावनात्मक घुटन, द्वेष, पेट सम्बन्धी रोग, डायबिटीज एसिड, एवं आक्रोश के लिए इस प्रतीक का प्रयोग मणिपूरक चक्र पर करते हैं। मानसिक प्रतीक की शक्ति बढ़ाने के लिए मानसिक प्रतीक के पहले और बाद में शक्ति प्रतीक लगाने से मानसिक प्रतीक और अधिक प्रभावशाली हो जाता है। अन्य नीचे लिखी सभी समस्याओं को दूरस्थ उपचार विधि का प्रयोग कर समस्याओं को हल करते हैं।
5. मानसिक रोगों को दूर करने हेतु।
6. भय को हटाने हेतु।
7. क्रोध और कलेश को शान्त करने हेतु।
8. अपने सम्बन्धों को सुधारने हेतु।
9. नकारात्मक मनोभाव को सकारात्मक में बदलने हेतु।
10. बच्चों की याद्दाश्त में कमी को दूर करता है। और पढ़ने के प्रति रूचि पैदा करने हेतु।

11. यह मानसिक अवरोधों जिसके कारण सर्वव्यापी प्राण ऊर्जा शक्ति का प्रवाह अवरुद्ध होता है उस अवरोध को हटाकर उस अंग में ऊर्जा का प्रवाह बनाता है।
12. सजीव वस्तु टोने-टोटके या इस तरह की कोई भी बाधा हो उसको हटाता है।

मानसिक प्रतीक चिन्ह

(से-हे-कि, रंग -गुलाबी)

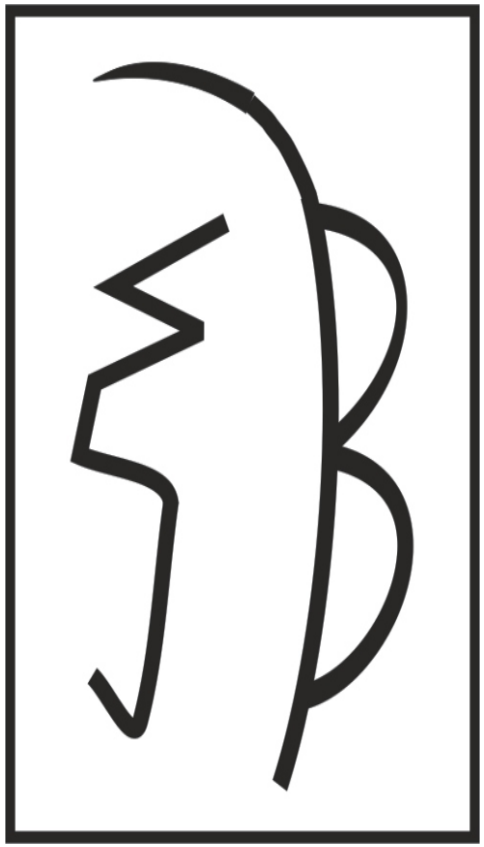

☞ **क्रमशः बनाने की विधि एट्यूनमेन्ट (शक्तिपात) के समय रेकी मास्टर आपको सिखाते हैं।**

सेतु-प्रतीक

(हॉन-शा-जे-शो-नेन, रंग सुनहरा)

सेतु-प्रतीक

सेतु सिम्बल (हॉन-सा-जे-शो-नेन) का अर्थ-मेरी आत्मा आपकी आत्मा से उपचार एवं कल्याण के लिये सम्पर्क बनाती है।

1. दूर की रेकी देने के लिये इस प्रतीक का प्रयोग करते है।
2. ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित करने, जिसका उपचार करना हो उस तक ऊर्जा पहुँचाने के लिये भी इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
3. शरीर के कष्टों को दूर करने के लिए इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
4. प्रारब्ध और श्राप को काटने के लिए भी इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।
5. वातावरण को मन के अनुसार करने के लिए भी इसका प्रयोग करते हैं।
6. ब्रह्माण्ड से किसी भी ऊर्जा (शक्ति) का आह्वाहन करने हेतु भी इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।

☞ **क्रमशः बनाने की विधि एट्यूनमेन्ट (शक्तिपात) के समय रेकी गुरू (रेकी मास्टर) आपको सिखाते हैं।**

पंच तत्व साधना

यह शरीर जिन पांच तत्वों से बना है उन पांच तत्वों की सूक्ष्म ऊर्जा से पुनः-पुनः: अपने को ऊर्जान्वित करके अपने आपको स्वस्थ रख सकते हैं।

• सबसे पहले दोनों स्वर एक साथ चलाकर गहरा श्वांस-प्रश्वांस लेकर मन को श्वांस के साथ बहने दें और श्वांस के आने-जाने के साथ शरीर को शिथिल करते हैं। और शिथिल और शिथिल। चित्र के अनुसार देखें कि आप कमर से तने की तरह जमीन में लगे हुए हों और पैरों में जड़ निकल आयी है। (देखें चित्र 1)

• सिर से नीचे तक की पूरी नकारात्मक ऊर्जा, रोग व्याधियां टॉक्सिन सब नीचे की तरफ चित्रानुसार प्रवाहित होते हुये देखें कि नीचे की तरफ आकर जड़ से निकलकर पृथ्वी में गहराई तक समाहित हो रहे हैं। (देखें चित्र 2)

• अब पृथ्वी की सकारात्मक ऊर्जा से अपने आप को सिंचित होता हुआ, हरा-भरा, स्वस्थ, उपचारित होता हुआ चित्रानुसार देखें। और स्वस्थ और ऊर्जावान अपने को अनुभव करें। (देखें चित्र 3)

• अब अपने पैरों पर ध्यान ले जायें और अनुभव करें कि मेरे पैर मिट्टी हैं और अपने पैरों को मिट्टी में समाहित अनुभव करें यानि मेरे पैर नहीं मिट्टी ही हैं। (देखें चित्र 4)

• अब अपने पेडू को देखें और कल्पना करें मेरा पेडू जल है, पेडू में जल की तरह लहरें उठ रही हैं चारों ओर भी शीतल ठन्डा-ठन्डा जल है उसमें लहरें उठ रही हैं। क्योंकि पेडू भी जल है उसमें भी लहरें उठ रही हैं। चारों ओर जल ही जल और उसमें उठती हुयी लहरें। (देखें चित्र 5)

• मेरा पेट अग्नि है और लाल-लाल अग्नि (भट्टी की तरह) जलती हुयी पेट में देखें जो जितनी तेज लाल अग्नि जलती हुयी देखेगा उतना ही पाचन उसका अच्छा होता जायेगा। कुछ देर तक देखे मेरा पेट अग्नि है और धधकती हुयी अग्नि देखें। (देखें चित्र 6)

• मेरा सीना वायु है वायु है तो वायु की तरह ही इधर से उधर, उधर से इधर वायु के झोंके की तरह चल रहा है कोई लयबद्धता नहीं है इधर झोंका आया उधर उड़ गया। क्योंकि मेरा सीना वायु है। (देखें चित्र 7)

• मेरा सिर आकाश है सूरज-चांद-तारे-पृथ्वी-गृह-नक्षत्र सब अपनी-अपनी कक्षा में घूम रहे हैं और सिर ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से भर रहा है, मैं पूरी तरह विचार रहित हूँ क्योंकि मेरा सिर आकाश है और मैं आकाश की तरह शून्य हूँ सूरज- चांद- तारे- पृथ्वी सब अपनी गति से निरन्तर चल रहे हैं। (देखें चित्र 8)

- अब धीरे से वापस आयें पुनः श्वांस-प्रश्वांस को देखें,
- श्वांस की गति तेज करें,
- अपने शरीर को याद करें,
- अपने नाम को याद करें,
- कहां पर हैं ध्यान करें,
- आपस में दोनों हथेली रगड़ें
- पलकों की सेंक करें,
- फिर आंखे खोलें।

लाभ-तन, मन एवं आत्मा की ऊर्जा बँटेगी। प्रकृति माँ से निकटता होगी।

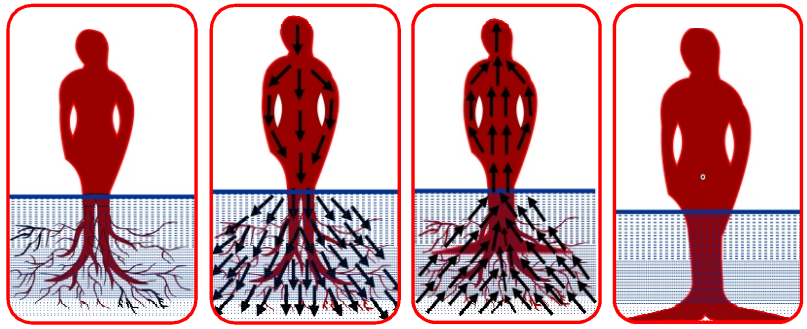

चित्र (1) चित्र (2) चित्र (3) चित्र (4)

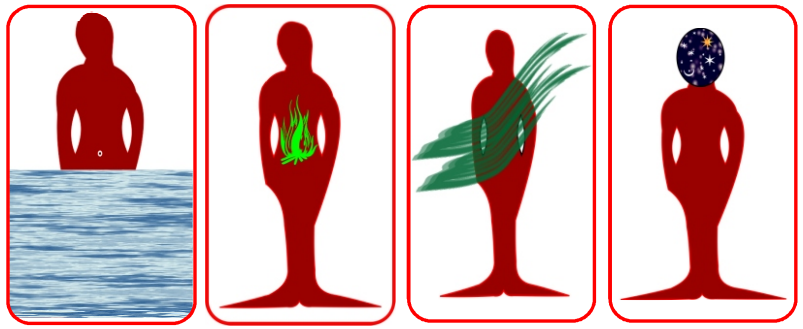

चित्र (4) चित्र (6) चित्र (7) चित्र (8)

चमत्कारी इजिप्सन लैम्प

(रेकी साधना में नकारात्मक (निगेटिव) ऊर्जा को साफ करने वाला लैम्प)

यह एक विशेष प्रकार का लैम्प है जिसके द्वारा हम अपने घर, दुकान, फैक्ट्री आदि की नकारात्मक ऊर्जा को साफ कर सकते हैं। इस नकारात्मक ऊर्जा के रहते हम घर में तनाव, उलझन, अवसाद (डिप्रेशन) का अनुभव कर सकते हैं। किसी ने कुछ बाधा डाल दी है, किसी की कुदृष्टि से भी हमारे घर को यह लैम्प बचाता है और घर में सुख, शान्ति, समृद्धि लाता है।

दुकान यदि सही प्रकार नहीं चल रही है, व्यापार में घाटा ही घाटा लगता चला जाता है तो लोगों का अनुभव है कि इस लैम्प को जलाने से व्यापार में वृद्धि होने लगती है। फैक्ट्री, दुकान, घर में नकारात्मक ऊर्जा से होने वाला नुकसान से यह लैम्प बचाता है।

इस लैम्प को जलाने की विधिः- लैम्प की तांबे की कटोरी बाहर निकालें उसमें रखी स्प्रिंग में रूई की बत्ती लगायें और तांबे की कटोरी में घी भरें उसमें बत्ती लगी स्प्रिंग रखकर दीपक के अन्दर रख दें। दीपक के ऊपर के बर्तन में शुद्ध पानी भरें, उसमें थोड़ा कपूर डाल कर ढक्कन से ढक कर दीपक के ऊपर चित्रानुसार रख दें और दीपक की बत्ती जला दें।

इस दीपक को पूजा घर में बरामदे (लॉबी) में, जहां ज्यादा लोग आते-जाते हैं उस स्थान पर दुकान या फैक्ट्री में रखें। जहां-जहां तक इसकी सुगन्ध जायेगी वहां वहां तक की नकारात्मक ऊर्जा यह अपने में सोख लेगा।

इस दीपक की खास बात यह भी है जब नकारात्मक ऊर्जा कम होगी तो कम काला होगा और जब ज्यादा होगी तो नीचे काला बहुत ज्यादा होगा जब नकारात्मक ऊर्जा नही होगी तो काला नही होगा।

इस दीपक की विशेषता-इसीलिए इस अद्भुत लैम्प को अपने घर में अवश्य जलायें बड़ा घर हो तो कई दीपक घर में जलायें। एक बार जलाने पर यह दीपक 5-6 घंटे तक जलता है।

यदि आपको यह इजिप्शन लैम्प चाहिए तो सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर-25

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975

E-mail : anandyoga133@gmail.com, face Book : Omprakash Anand Kanpur

Website www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

'डाउजर'- एक अद्भुत यंत्र

(खोयी चीजों को ढूंढ़ने या बताने वाला यंत्र)

डाउजर (खोजक यंत्र) क्या है?

किसी भी अन्जान, रहस्यमयी छुपी हुई वस्तु या विषय को एक विशेष प्रकार के यन्त्र (डाउजर) द्वारा खोज करके आप जीवन के किसी भी प्रश्न का सही-सही जवाब व मार्गदर्शन पा सकते हैं। चाहे वह धरती में छुपे हुए जल, तेल, खनिज या खजाने की बात हो, चाहे कोई गुम हो गये व्यक्ति या वस्तु की बात हो चाहे आपको दस वस्तुओं में एक वस्तु का चुनाव करना हो। डाउजिंग विधि द्वारा आपके सवाल का सही जवाब देने वाला यह एक अद्भुत यन्त्र है।

डाउजिंग सीखने से क्या लाभ है?

1. पानी, तेल, सीवर लाइन, गैस पाइप लाइन, केबिल लाइन कहां-कहां से लीक है, और कितनी गहरायी में है जानने के लिए।
2- किसी भी खोये हुए व्यक्ति या वस्तु का दिशा निर्देशन बताने वाला।
3. कोई भी व्यक्ति घर में है या बाहर है या रास्ते में है।
4. शरीर के कौन से अंग में कौन सी खराबी है इसका सही निदान।
5. कौन सा आहार आपके लिए एनर्जिक है।
6. कौन सा व्यापार, कौन सा कैरियर, कौन सा पार्टनर, कौन सा वर, कौन सी वधू, कौन सा शहर, कौन सा नौकर आदि आपके लिए अनुकूल है।
7. शरीर में डायबिटीज कितनी है, ब्लडप्रेशर कितना है, हिमोग्लाबिन कितना है आदि सभी प्रकार के पैथोलॉजिकल रिपोर्ट बिना पैथोलॉजी टैस्टिंग के मात्र डाउजर से आप जान सकते हैं।

इस यन्त्र द्वारा जानने के लिए डाउजर द्वारा डाउजिंग की विधि सीखने के लिए रेकी प्रथम एवं द्वितीय में निःशुल्क प्राथमिक कोर्स सिखाया जाता है। एडवांस कोर्स, प्राथमिक कोर्स के छः महीने बाद सीख सकते हैं। डाउजिंग के अभ्यास करने वाले डाउजर यन्त्र के लिए सम्पर्क करें-

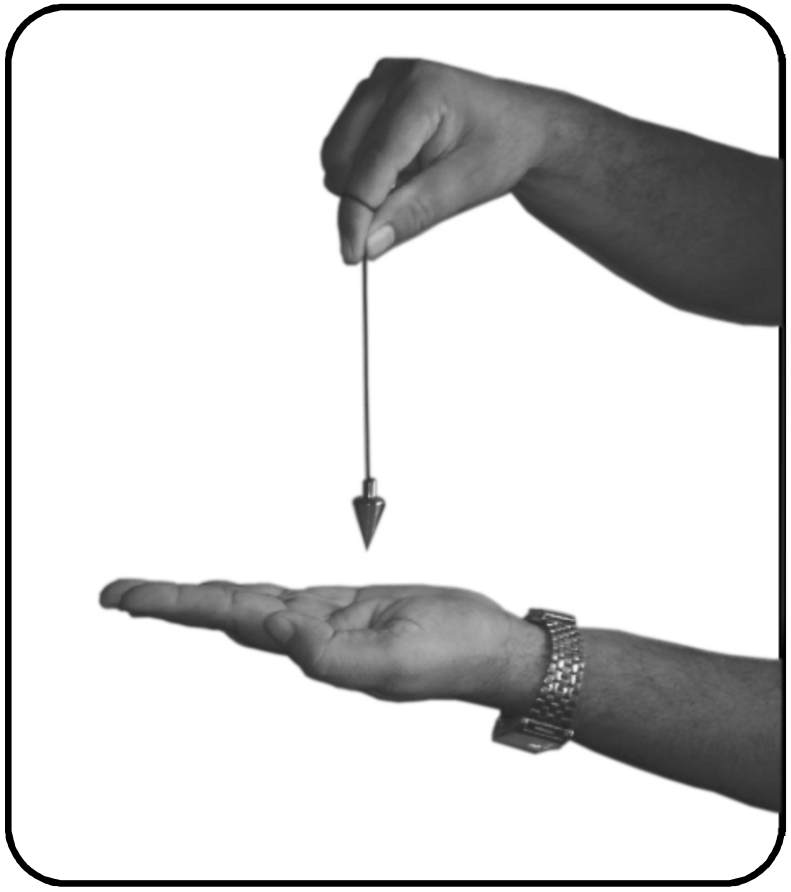

यदि आपको यह डाउजर चाहिए तो
सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर-25

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975
E-mail : anandyoga133@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand Kanpur
Website www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

चक्रा स्कैनर

(शरीर को शुद्ध एवं सक्रिय करने वाला)

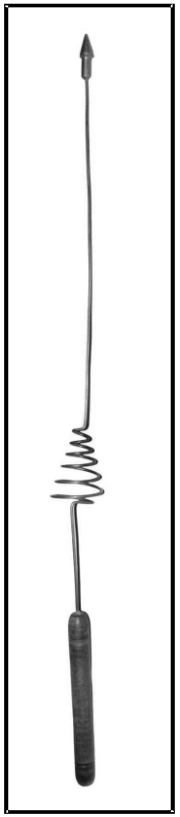

चक्रा स्कैनर एक तांबे की चित्रानुसार स्प्रिंग दार छड़ है जिसके द्वारा हम कई लाभ उठा सकते हैं।

- ऊर्जा नाप सकते हैं।
- औरा की रेन्ज पता लगा सकते हैं।
- औरा नकारात्मक है या सकारात्मक जान सकते हैं।
- कोई अंग बीमार है या स्वस्थ पता कर सकते हैं।
- किसी अंग की ऊर्जा कम है या अंग कमजोर है यह जान सकते हैं।
- किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा अंग की ऊर्जा सक्रिय (चार्ज) कर सकते हैं।
- चक्रा स्कैनर से शरीर को शुद्ध और सक्रिय करने के बाद हम कष्ट का उपचार भी कर सकते हैं।

यदि आपको यह चक्रा स्कैनर चाहिए तो
सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर-25

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975
E-mail : anandyoga133@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand Kanpur
Website www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

औरा स्कैनर

(प्रभामण्डल (औरा) नापने वाला अद्वितीय यंत्र)

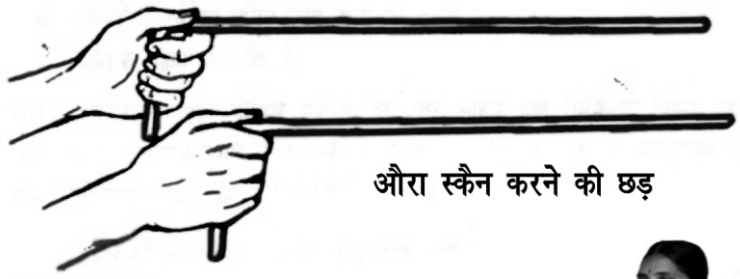

औरा स्कैन करने की छड़

औरा स्कैन
प्रारम्भ करते
समय
छड़ की स्थिति

औरा क्षेत्र में
आने पर फैली
हुयी
छड़ की स्थिति

रेकी के प्रभावशाली मनोकामना पूर्ति करने वाला 'रेकी मनोकामना प्लेट'

मनोकामना पूर्ति की ग्रिड कैसे बनायें?

1. सबसे पहले मनोकामना प्लेट को शक्ति प्रतीक से शुद्ध और चार्ज (सक्रिय) कर लें।
2. एक साफ कागज पर अपना संकल्प लिख लें जैसे-मेरा अमुक...कार्य...अमुक...तारिख तक पूर्ण हो जाती है।
3. उस संकल्प लिखे पेपर को भी शक्ति प्रतीक से शुद्ध और सक्रिय कर लें।
4. इस पेपर का लिखा हुआ हिस्सा अन्दर करते हुये मोड़ लें जब तक मोड़ें जब तक प्लेट के बीच के चौकोर हिस्से जितना न हो जाये।
5. अब इस पेपर को प्लेट के बीच में रख दें।
6. अब एक पिरामिड लें उसे भी नमक पानी के घोल में 24 से 48 घंटे तक भीगोकर शुद्ध कर लें पुनः शक्ति प्रतीक से शुद्ध करके शक्ति प्रतीक से सक्रिय कर लें।
7. अब पिरामिड को संकल्प पेपर पर रख दें।
8. अब चार क्रिस्टल पेन्सिल लें उनको भी पहले नमक पानी के घोल से शुद्ध कर लें। तत्पश्चात् शक्ति प्रतीक से शुद्ध और सक्रिय कर लें। और संकल्प से प्रोग्रामिंग करके प्लेट के चारों कोनों में ज्वाइन वाला हिस्सा पिरामिड की ओर करके सभी पिरामिड रखें। यह ग्रिड तैयार करने के बाद हिलायें नहीं। बिना हिलाये ही प्रतिदिन इस ग्रिड पर 10-15 मिनट तक संकल्प का स्मरण कर रेकी दें।

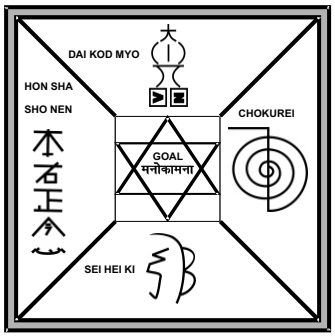

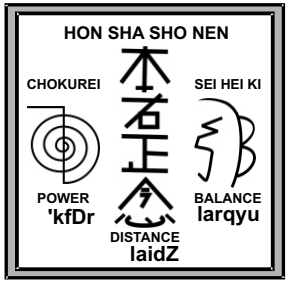

रेकी मनोकामना प्लेट एवं श्री यंत्र आदि के लिये
सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, www.anandyoga.com, colorblindsurecure.com

रेकी को प्रभावशाली एवं लगातार ऊर्जा देने वाले विभिन्न प्रकार के क्रिस्टल

श्री यन्त्र

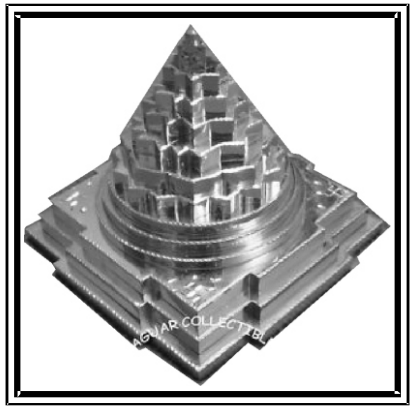

पिरैमिड

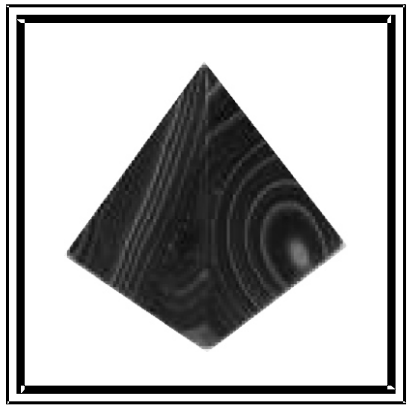

क्रिस्टल ग्रिड

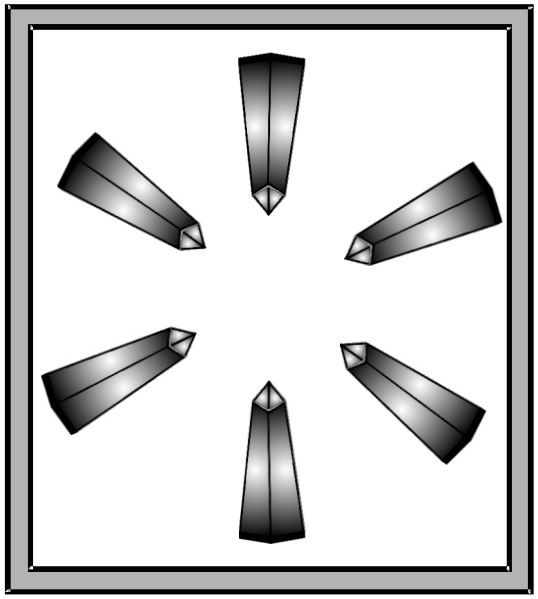

क्रिस्टल पैंन्सिल

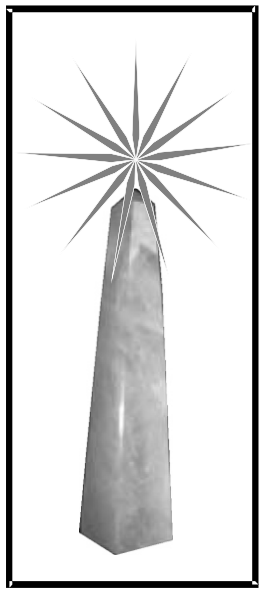

करूणा रेकी

परम्परागत रेकी की तुलना में करुणा रेकी नई है। करुणा रेकी की खोज मिचिगन (यू०एस०ए०) ने 1995 में की। अनेक रेकी विशेषज्ञों ने तन्त्रशास्त्र के गूढ़ रहस्यों को समझकर उनकी शक्तिशाली सूक्ष्म तरंगों को अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के आधार पर खोज निकाला। सांसारिक सुख-सुविधाओं में रहते हुए भी, मनुष्य के जीवन में अनेक कष्ट और कठिनाइयाँ आ जाती है जिससे वह विचलित हो जाता है, मोह-माया जाल में फंसकर अपनी इच्छाओं, कामनाओं आवश्यकताओं एवं जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयास करता है और आवश्यकता पूरी न हो पाने के कारण वह अशान्त और तनाव ग्रस्त रहता है। इन कठिनाइयों के निदान के लिए रेकी विशेषज्ञों ने करुणा रेकी को खोजकर समाज को नई दिशा दी।

करुणा रेकी संस्कृत का शब्द है जिसका प्रयोग हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म में अपने हृदय के प्यार, ममता को समझाने के लिए करते हैं। करुणा रेकी का अर्थ व्यक्तियों के कष्टों को दूर कर सहानुभूति दर्शाना है। कुछ अदृश्य उच्च शक्तियाँ अपनी सहायता कष्ट में पड़े लोगों तक पहुंचाना चाहती है परन्तु इस करुणा के द्वारा उपचार करने की शक्ति उपलब्ध न होने के कारण इन उच्च शक्तियों का करुणामयी उपचार कष्ट में पड़े व्यक्तियों तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसीलिए कुछ ज्ञानियों, योगियों और रेकी विशेषज्ञों ने मिलकर साधना कर करुणा रेकी को विकसित किया। करुणा रेकी के यह प्रतीक अत्यत्न शक्तिशाली और सरल है। और इनके परिणाम आश्चर्यचकित करने वाले है।

करुणा रेकी के कार्य -

1) प्यार, सत्य, खूबसूरती, समरूपता और दया।
2) पिछले जन्मों के कर्मबन्धनों से मुक्ति।
3) भयानकता एवं नकारात्मकता से मुक्ति।
4) उच्च आध्यात्मिक चेतना की जागृति।
5) सम्पन्नता एवं समृद्धि प्राप्त कराना।
6) चक्रों को जाग्रत करना आकाश तत्व और पृथ्वी तत्व के चक्रों से संतुलन स्थापित करना।
7) आध्यात्मिक चेतना जाग्रत कर ज्ञानियों एवं उच्च शक्तियों से सम्पर्क।
8) पृथ्वी के कष्टों को समाप्त करने के लिए उच्च शक्तियों से सहायता प्राप्त करना।
9) तीनों कालों से समानता स्थापित करना।
10) मन को शान्त करना।

करूणा रेकी क्यों?

1. **प्राकृति के अनुसार स्वभाव का होना**–करूणा शब्द सुनते ही लगता है कि यह करूणा, दया, निश्चल प्यार, ममता, अपनापन किसी को कष्ट में देखा तो खुद का भी दिल भर आया और स्वतः बिना प्रयास के मन करूणा मय हो जाये। करूणा का सिद्धान्त है किसी से विरोध नहीं सबसे सम भाव प्रकृति में भी सभी क्रिया कलाप स्वतः होते हैं जैसे सूरज का निकलना, डूबना, नदी का बहना, पक्षियों का कलरव, नीतियों का बदलना पृथ्वी का धूरी पर घूमना सभी कुछ तो स्वतः बिना किसी प्रयास के होता है ऐसे हों बिना किसी प्रयास के करूणा बहने लगे यानि प्रकृति के अनुसार स्वभाव बन जाये।
2. **होश पूर्वक प्रत्येक कार्य को करना**–हम जब भी कोई भी, किसी भी प्रकार का कार्य करते हैं तो कोई भी किसी भी प्रकार कर्म अवश्य बनता है वह किसी भी प्रकार का हो सकता है अच्छा या बुरा जिस प्रकार का कार्य होगा उसी प्रकार की ऊर्जा बनेगी सकारात्मक या नकारात्मक मान लीजिये हमने बबूल का पेड़ बोया तो लाख पूजा करने के बाद भी बबूल का पेड़ ही निकलेगा यदि हमने आम का पेड़ बोया है तो पूजा अर्चना न करें तब भी मीठे फल ही खाने को मिलेंगे मतलब साफ है यदि हम दूसरों को दुःख देने वाले कार्य करेंगे तो हमारे जीवन में भी आस-पास उसी प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होकर हमारे जीवन में भी दुःख और दुर्भाग्य आ जायेगा। यदि हम दूसरों को आनन्द देने का कार्य करेंगे तो दूसरों को प्रसन्न करने वाला जीविकोपार्जन का साधन चुनेंगे हमारे क्रिया कलाप दूसरों को सुख देने वाले होंगे तो हमारे सौभाग्य का निर्माण होगा सुख, समृद्धि, वैभव, सफलता की प्राप्ति होगी इसके लिए हमें अगले जन्म की प्रतीक्षा नहीं करनी होगी जो कुछ होना है यहीं होना है स्वामी विवेकानन्द जी ने

एक जगह कहा है **"हमारे विचार, शब्द और कार्य उस जाल के धागे हैं जिसे बुनकर हम अपने चारों ओर डाल रहे हैं।"**

3. **आत्मा की आवाज सुनने की आदत डालें**–आजकल की भाग दौड़ की जिन्दगी में हम अपनी आत्मा की आवाज सुनना भूल गये हैं जब भी हम कोई भी कार्य करते हैं यदि वह कार्य अनुचित है। हमारे अन्दर से आवाज आती प्रतीत होती है जैसे-कोई मना कर रहा हो यह हमारे अन्तर-मन की आवाज है। यदि हम अपने अन्तर-मन से उठने वाली आवाज को अनसुना कर देते हैं तो अन्तर-मन की आवाज आना बन्द हो जाती है। एक तरह से हमारा सुरक्षा गार्ड हट जाता है जो हमें सही गलत की जानकारी कराता हैं और यह सावधान कराने वाली आवाज बन्द होती है हमारा अपने ऊपर से अंकुश हट जाता है और हम गलत कार्यों को करने की ओर बढ़ने लगते है लगातार अपने या दूसरे के मन को दुःखी करने के कार्य करने लगते है फिर हमें दुःखी होने से कोई नहीं रोक सकता यदि हमें यह समझ में नहीं आ रहा कि सही क्या और गलत क्या है। यह जानने के लिए शान्त होकर बैठ जायें अपने दोनों हाथ हृदय चक्र पर रखें और अपने आप से प्रश्न करें कि अमुक कार्य करना चाहिए या नहीं। पूछने के बाद शान्त होकर बैठ जायें कुछ ही क्षण में एक संवेदना सी महसूस होगी जो दिशा निर्देश देती हुई समझ में आयेगी जो रास्ता दिखे उसी का अनुसरण करने लगह जायें उसी ओर चलने लग जायें क्योंकि हमारे हृदय चक्र के पास हमारे सभी प्रश्नों के उत्तर हैं उसके पास सम्पूर्ण ज्ञान है।
4. **विपरीत परिस्थिति आने पर अपनी गलती स्वीकारना**–विपरीत परिस्थिति आने पर यदि हम उसे स्वीकार नहीं करते और उसके प्रति द्वेष भाव, बदले की भावना रखते हैं तो ऐसी परिस्थिति में रेकी देना और लेना दोनों ही स्थिति में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है रेकी की ऊर्जा में कमी आती है इसका मतलब यह नहीं उसका प्रभाव रेकी देने या लेने वाले पर नहीं पड़ेगा हाँ ऊर्जा में अवरोध अवश्य होगा हम अपनी मनोभावना के स्वयं जिम्मेदार हैं चाहे वह क्रोध हो,

घृणा हो, दया हो, करूणा हो, ममता हो आदि कोई भी मनोभाव हो अच्छा या बुरा हो उसका अच्छा या बुरा दोनों का प्रभाव हम पर पड़ता है इसके जिम्मेदार भी हम स्वयं ही हैं। जैसे ही हम हानि पहुँचाने वाली, दुःख देने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों की गलती स्वीकार लेते हैं या इसकी जिम्मेदारी हम अपने ऊपर ले लेते हैं वैसे ही उसकी प्रतिक्रिया समाप्त हो जाती हैं। और उस कमी को जो पहले हो चुकी है उसे पूरा करने का प्रयास करते हैं, परन्तु कठिनाई यह है कि हम किसी अप्रिय घटना को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। यदि जीवन में प्रतिकूलता हुई घटनाओं की जिम्मेदारी स्वयं ले लें। किसी दूसरे पर दोषारोपण न करें स्वयं भी अपराध बोध न करें यह एक नकारात्मक बोध है। जैसी ही किसी विपरीत परिस्थिति को स्वीकार कर सकारात्मक कार्य करते हैं इससे आत्मबोध हो जाता है। कि इस समस्या के पीछे कोई न कोई सुअवसर छिपा है। वैसे ही उस समस्या का निदान होता दिखने लगता है और वहीं अप्रिय घटना सुअवसर प्रदान करने वाली लगने लगती है। और वातावरण मन को खुश करने वाला लगने लगता है। जो अभी तक मन को कांटे के समान लगने लगता था।

5. **परिस्थिति को स्वीकार करना**–जो लोग प्रतिकूल परिस्थिति को सुअवसर व मार्ग दर्शक न मानकर उसके विरूद्ध मानते हैं जैसे–जरा सी विपरीत परिस्थिति आने पर क्रोध से भर जाते हैं। जैसे मान लीजिए आप को स्टेशन समय से पहुँचना पहले ही देर हो चुकी है आगे पहुँचे तो क्रसिंग बन्द है इतना जानकर आग बबूला होने लगे उल्टा–सीधा दोहराने लगे ऐसा करने से फाटक तो नहीं खुलेगा, फाटक तो अपने समय से ही खुलेगा क्रोध आप अपना स्वयं का नुकसान पहुँचा लोगे फाटक तो गाड़ी निकल जाने परे ही खुलेगा उसके पश्चात ही आप स्टेशन जा सकेंगे ट्रेन मिले या छूटे इस भाव के साथ आराम से अपने वाहन में बैठे रहें **परिस्थितियों से समझौता कर ले जो मेरे हित में होगा वही होगा। हो सकता है जाने में मेरा हित न हो ऐसा सोच लेने मात्र से तनाव या दबाव समाप्त हो जायेगा।**

अति चमत्कारी करूणा रेकी के सिम्बल

(1) जोनर (ZONAR)

इस प्रतीक को साईं बाबा ने अपनी साधना द्वारा निकाला। यह जेड की आकृति वाला है। जेड़ की आकृति पर इनफिनिटी चिन्ह बनाते हैं।

क्या–क्या कार्य करता है?

1) समय ओर सीमा से परे है।
2) दूर की रेकी देने में पहले इसका प्रयोग किया जाता है।
3) यह प्रारब्ध को काटता है।
4) पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे श्राप से मुक्त करता है।
5) जो बच्चे दुर्वचन बोलते है उनके लिए भी यह प्रतीक उपयोगी है।
6) वर्तमान समय के दोष कर्म से भी मुक्त करता है।
7) हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन लाता है।
8) पिछले जन्म के कर्मों मुक्ति के लिए इस प्रतीक का प्रयोग करने से पहले निम्न प्रार्थना करे। प्रार्थना जो हृदय से निकलती है तो हमें ईश्वर से जोड़ती है, प्रार्थना " **हमारे हृदय में जिस ईश्वार का निवास है वह सर्वशक्तिमान प्रभु से प्रार्थना करता है कि मैने अथवा मेरे पूर्वजों ने अपने जीवन में जो भी पाप किया है जिसे मैं इस जन्म में या आने वाले जन्मों में मैं या मेरा परिवार भोगने (प्राप्त) वाला है उससे मुझे दूर कर, शुद्धता प्रदान करें।**" इसमें आप अपनी समस्या और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन कर सकते हैं। परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि जीवन प्रवाह में जो मेरे हित में हो वही मैं प्राप्त करूँ, जिनके कारण कष्ट हो रहा है उनसे मैं मुक्त हो जाऊँ उनकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। और मैं स्वयं भी सब प्रकार के बुरे कर्मो से बचा रहूँ।

जोनर

1. जब करूणा रेकी के प्रतीकों से दूरस्थ उपचार दिया जाता है तब जोनर प्रतीक से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। दूरस्थ सम्बन्ध स्थापित करने हेतु जोनर से अधिक प्रभावशाली सेतु प्रतीक कार्य करता है। जब उसुई और करूणा दोनों के प्रतीकों का चुनाव करते हैं तो सेतु प्रतीक से ही सम्बन्ध स्थापित करते हैं परन्तु यदि सभी प्रतीक करूणा रेकी के हैं तो जोनर से ही संबंध स्थापित करेंगे।

2. प्रारब्ध काटने, श्राम से मुक्ति एवं ग्रहदोषों को शान्त करने हेतु सेतु से अधिक प्रभावशाली तरीके से जोनर कार्य करता है। प्रारब्ध श्राप से मुक्ति, एवं ग्रहदोषों को शान्त करना ही इस प्रतीक का प्रमुख कार्य है।

(2) हालू (HALU)

यह प्रतीक, जोनर प्रतीक पूरा होने बाद उस पर पिरामिड और बना देते है जिससे यह अधिक शक्तिशाली हो जाता है और गहरे जाकर और व्यापक स्तर पर कार्य करता है।

हालू शरीर के कष्टों को दूर करने हेतु सेतु से अधिक प्रभावशाली हालू प्रतीक कार्य करता है।

1. गहराई तक पहुँचकर रोग दूर करता है – जब व्यक्ति रोगी हो जाता है उस समय रोग की अवस्था में शरीर की जीवनी शक्ति के प्रवाह में बाधा होती है और वह असंतुलित हो जाता है जिस कारण से रोग के कीटाणु उस स्थान पर अधिक तीव्रता से बढ़ने लगते हैं, रोग की अवस्था में रोग को ध्यान में रखकर जब हालू प्रतीक बनाया जाता है तो रोग के कीटाणु या विषाणु टूटकर बिखरने लगते हैं। रोग की गहराई तक इस की शक्ति पहुँच कर रोग को दूर करती है।

2. अवचेतन मन की नकारात्मक भय की भावना को हटाता है – जो व्यक्ति को सकारात्मक चिन्तन या सच्चाई से दूर, नकारात्मक भावना, भय, अंधकार से घिरे होते हैं उदाहरण - रात में फोन की घंटी बजी तो तुरन्त सोचेगे अमुक बीमार था परलोक तो नहीं सिधार गया, या किसी को आने में देरी हो गयी तो तुरन्त यह सोचेगे कहीं दुर्घटना तो नहीं हो गयी। जब कि यह सच नहीं होता। फोन किसी शुभ समाचार का भी हो सकता है, देरी किसी कार्य के देर से पूरा होने के कारण भी हो सकती है। इस प्रकार के

विचार अवचेतन मन में बैठ गये है उसको हालू प्रतीक तोड़ता है और अवचेतन मन को सकारात्मक बनाता है यानि कि धीरे-धीरे वह व्यक्ति हर बात को सकारात्मक सोचने लगेगा।

3. इन्कार की प्रवृत्ति – कभी-कभी हम देखते हैं कि कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जिनसे आप कोई बात पूछे, या किसी कार्य को शुरू करने से पहले कोई सलाह लें तो वह बिना किसी प्रकार का चिन्तन या मनन किये तुरन्त यह कह देगें कि यह कार्य तो हो ही नहीं सकता इसको करने में अमुक-अमुक कठिनाइयां होगी आदि-आदि ऐसे व्यक्तियों से आप अपने किसी भी विषय में निर्णय के लिए न जायें। इस प्रकार के नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति जीवन में असफल होने लगते है और उनके जीवन में निराशा, क्रोध और भय आ जाता है, जिसके कारण वह डिप्रेशन के रोगी हो जाते है। हालू प्रतीक इस प्रकार की इन्कार की प्रवृत्ति को तोड़ता है और डिप्रेशन से बाहर निकालता है। जबकि किसी भी परम्परागत चिकित्सा प्रणाली में इसका उपचार अत्यन्त कठिन है।

4. अनावश्यक भ्रम की प्रवृत्ति – देखने में आया है कि कुछ लोगों को भ्रम की बीमारी होती है। और भ्रम का किसी भी चिकित्सा पद्यति में इलाज नहीं है। किसी को आपस में बात करता दिखता है ता यह भ्रम हो जाता है कि वह मेरी बुराई कर रहा है, या अमुक ने मेरे ऊपर टोटका करा दिया है तभी इतने बीमार हैं या अंधेरें में किसी के चलने का भ्रम होने लगता है, किसी के आचरण पर सन्देह होने लगता है और लम्बे समय तक इस प्रकार के विचार लम्बे समय तक अवचेतन मन में रहते है तो इसका प्रभाव चेतन मन पर भी होने लगता है। इस प्रकार के भ्रम को हालू प्रतीक हटाकर व्यक्ति को निर्भय और साहसी बनाता है।

5. नकारात्मक छाया को हटाता है – कभी-कभी व्यक्ति किसी नकारात्मक छाया से घिर जाता है उसे हर समय प्रेत छाया दिखने लगती है या किसी ने कोई टोना-टोटका कर दिया है उस समय हालू प्रतीक का प्रयोग करने से इन सबका प्रभाव समाप्त हो जाता है। वैसे-इस प्रकार के विचार मन में नहीं बैठाने चाहिए। क्योंकि सौ में निन्यानवें लोगों का मात्र भ्रम होता है किसी एक पर यह घटना सच होती है। इस प्रकार की नकारात्मक छाया का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पाश्चात्य देशों के अनेक रेकी विशेषज्ञों ने भी इस नकारात्मक छाया को स्वीकारा है और रेकी से निश्चित मुक्ति

दिलाने की बात भी कही है। इस प्रकार हालू प्रतीक शरीर से नकारात्मक शक्तियों प्रेतबाधा, प्रेतात्मा को बाहर करता है उच्च मनोभावों को जाग्रत कर मन की ग्रन्थि से नकारात्मक भावना के सांचे को तोड़ अच्छी प्रकार कार्य करने को प्रेरित करता है, प्राण ऊर्जा का संतुलन कर गहन उपचार करता है, एवं सेक्स प्रताड़ना से भी मुक्ति दिलाता है।

(3) हर्थ (HARTH)

मनुष्य के रोगों पर अनेक मनो रोग विशेषज्ञों ने शोध कार्य किये। शोध कार्य से एक बात उभर कर आयी कि जितने भी रोग है। वह नकारात्मक मनोभाव के कारण होते है और नकारात्मक मनोभाव कहीं न कहीं किसी न किसी पक्ष में प्यार की कमी के कारण होते हैं। अगर हृदय से निश्चल प्याार बहता रहे, किसी को देखकर दिल भर आये, दिल दुःखी हो उठे, हर व्यक्ति के प्रति दिल के प्रति करुणा, ममता हो वह कभी बीमार नहीं पड़ सकता। मनुष्य विपरीत परिस्थिति के कारण हुए नकारात्मक मनोभाव, कटुता, दुश्मनी, क्रोध को ढोते रहते है, जब कि पशु पक्षी जानवर भी अपने भोजन के लिए लड़ भी जाते है परन्तु कुछ देर में सब भूलकर एक हो जाते हैं। हर्थ प्रतीक इस प्रकार के कटुता के भाव को दूर कर हृदय में प्रेम भाव उत्पन्न करता है। सम्बन्धों को सुधारता है।

हर्थ और मानसिक प्रतीक दोनों ही मन के कष्टों को दूर करने हेतु प्रयोग किये जाते हैं। जहां पर केवल मन से सम्बन्धित समस्या हो और कोई दूसरा कार्य साथ में नही करना हो उस समय हर्थ प्रतीक का प्रयोग करते हैं। जैसे-शराब या कोई गलत आदत, पढ़ने में मन न लगना, डिप्रेशन, इरीटेशन, दिल के घावों को भरना, क्रोध आदि। जबकि मन की जॉब, अच्छा पार्टनर, किसी भी कार्य को उचित प्रकार से करना आदि में मानसिक प्रतीक कार्य करता है।

1) यह प्रतीक एक ही परिवार के सदस्यों पड़ोसियों, रिश्तेदारों, या किसी भी प्रकार के सम्बन्धों में कटुता आ गयी हो, भाइयों-भाइयों में आपस में झगड़ा, बेटे,बहू में मतभेद, माता-पिता की अपनी शिकायत हो इन सभी सम्बन्धों को कटुता दूर कर आपस में प्यार सौहार्द पैदा कर एक सुखमय वातावरण बनाता है और पुनः जीवन के प्रति प्रेम पैदा करता है।

2) **समरूपता लाता है** - यह प्रतीक अधिक प्यार, सच्चाई, सुन्दरता की अधिकता और कमी में समरूपता स्थापित कर सन्तुलित करता है।

3) **व्यसनों की लत को दूर करता है** - इस प्रतीक का सम्बन्ध मन से है, इसलिए प्रतीक का प्रयोग करने से मन पर अतिशीघ्र प्रभाव डालकर व्यक्ति मन में परिवर्तन ला देता है अतः जब व्यसन करने वाला व्यक्ति व्यसन छोड़ने के संकल्प के साथ इस प्रतीक का प्रयोग करता है तो उसका व्यसन करने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है और छोड़ने के कारण जो कष्ट होता है वह भी नहीं होता इस कारण व्यसन बहुत ही सहजता से छूट जाता है। जो व्यक्ति व्यसन नहीं छोड़ना चाहता उसको बिना बताये अगर दूसरा व्यक्ति इस प्रतीक का प्रयोग कर रेकी देता है तो भी उस व्यक्ति की व्यसन की लत छूट जाती है।

4) **डिप्रेशन और इरिटेशन को दूर करता है** – आज की भौतिक दौड़ में कहीं पर भी विपरीतता आ जाती है तो व्यक्ति डिप्रेशन या इरीटेशन में चला जाता है या अपराध बोध करने लगता है, व्यक्ति को इस अवस्था से निकालने में यह प्रतीक बहुत सहायक होता है।

5) **दिल के घावों को भरता है** – किसी ने कुछ बुरा भला कह दिया, दिल दुःखाने वाली बात कह दी या मन का नहीं किया या कोई ऐसी घटना घट गयी जिससे मन पर बहुत गहरा आधात लग गया और दुःख में डूब गये इन परिस्थितियों से, यह प्रतीक व्यक्ति को बाहर निकालता है, क्रोध, ईर्ष्या, कटुता दूर कर, प्यार, करुणा, ममता से भरता है एवं स्वयं के दोष बोध से मुक्त करता है।

6) **कुरुपता के कारण हीन भावना** – अगर मन में अपने शरीर के प्रति हीन भावना आ गयी कि हम कुरूप हैं या मेरे अन्दर योग्यता नहीं है तो हीन भाव का प्रभाव मन पर पड़ने लगता है और इस कारण जीवन के हर क्षेत्र में असफलता मिलने लगती है, असफलता के कारण नकारात्मक विचार आते है जिसके प्रभाव से क्रोध व चिड़चिड़ापन बढ़ने लगता है इस प्रकार की परिस्थिति में हर्थ प्रतीक प्रयोग करने से लाभ होता है।

7) **सुन्दरता से लगाव न होना** - कभी-कभी घर में बड़ों को सुन्दरता व शौक पसन्द नहीं होते उस समय यदि बच्चे कुछ शौकीनी की वस्तु लाते है तो उन्हें अच्छा

नहीं लगता उनको इसमें समय और पैसा बर्बाद होता दिखता है। इस कारण से बच्चे फिर अपना शौक पूरा करने से डरते है कि पिता जी नराज होगें परिस्थतियों में हर्थ प्रतीक परिवर्तन लाता है।

(4) रामा (RAMA)

रामा प्रतीक में सात धारियां, सातों चक्रों को दर्शाती है इसमें पाँच चक्रों की गोलाई पूर्ण है दो चक्र अर्धचन्द्राकार है सबसे ऊपर अर्ध चन्द्राकार सहस्त्रार चक्र का द्योतक है सबसे नीचे का अर्धचन्द्राकार, मूलाधार चक्र का द्योतक है। बीच के गोलाकार चक्र क्रमशः आज्ञा चक्र, विशुद्ध चक्र, हृदय चक्र, मणिपूरक चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र के द्योतक हैं। जिस स्थान पर दोनों सही के निशान आपस में एक दूसरे को काटते है उस स्थान पर गोलाई का घेरा हृदय चक्र का द्योतक है। इसमें दो सही के निशान है जो चारों दिशाओं के द्योतक है।

1) चक्रों को संतुलित करता है – यह प्रतीक छः दिशाओं की अलौकिक शक्ति को आकर्षित कर व्यक्ति तक पहुंचाता है। कुछ लोग नीचे के चक्रों को महत्वहीन समझते हैं जब कि ऐसा नहीं है सभी चक्र ऊर्जा के केन्द्र हैं और इनका अपना महत्व है। एक भी चक्र में किसी प्रकार की कभी आ जायेगी तो उसका प्रभाव सभी चक्रों पर पड़ता है नीचे के तीन चक्र मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक इनका सम्बन्ध पृथ्वी तत्व से है और ऊपर के तीन चक्र सहस्त्रार, आज्ञा और विशुद्ध आकाशीय तत्व से सम्बन्ध रखते है। नीचे के तीन चक्रों पर साधना करने से हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति, प्रचुरता सम्पन्नता प्राप्त होती है नीचे के तीन चक्र में किसी भी प्रकार की कमी आने पर आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयां और परेशानियां आ जाती है, परिवारिक कलह, तरह-तरह की हानियां, विवाद प्रारम्भ हो जाते है, साथ ही व्यक्ति की कामनायें, इच्छायों, वासनायें, चंचलता, कटुता, मिथ्या आचरण बढ़ने लगता है। ऐसी परिस्थिति में 'रामा' प्रतीक का प्रयोग करने से आकाश तत्व और पृथ्वी तत्व के चक्रों में समन्वय स्थापित हो जाता है और व्यक्ति में परिवर्तन होकर वह सभी परेशानियों से मुक्त होने लगता है एवं मन भी संतुलित रहने लगता है। चक्रों को संतुलित करने के लिए क्रिस्टल की माला प्रोग्रामिंग करके भी पहनाया जा सकता है।

माला प्रोग्रामिंग करने की विधि - क्रिस्टल या तुलसी माला को नमक पानी के

घोल में 48 घंटे तक भिगो दें, इससे उसका नकारात्मक प्रभाव हट जायेगा उसके पश्चात् उस माला को रेकी प्रार्थना करने के बाद माला को हाथों में लें और माला को रामा प्रतीक से 10 मिनट तक रेकी दे उसके पश्चात् जिस व्यक्ति के लिए माला प्रोग्रामिंग करनी है उसका दृश्यीकरण करके 40 मिनट तक रामा प्रतीक से रेकी दें। अब प्रोग्रामिंग की हुई माला तैयार हो गयी। दो-तीन महीने में माला की पुनः प्रोग्रामिंग कर दें।

2) प्रेत बाधा से मुक्त करता है – यह प्रतीक जड़ वस्तुओं की जैसे -फैक्ट्री दुकान, कार्यालय, घर की किसी प्रकार का टोना, टोटका, बुरी नजर या प्रेत बाधा से मुक्त करता है। बाधा हटाने की विधि डिग्री **II** के समान ही है इसमें हर स्थान पर रामा प्रतीक ही बनाते हैं जबकि डिग्री **II** में द्वितीय और तृतीय दो प्रतीक का प्रयोग होता है शेष विधि एक ही प्रकार है।

3) लक्ष्य प्राप्ति की भावना का दृढ़ करता है–मान लीजिये आपकों किसी साक्षात्कार या परीक्षा के लिए जाना है तो जाने से पहले उस लक्ष्य को रामा प्रतीक से रेकी दे कर जाये तो लक्ष्य प्राप्ति में आसानी होगी और यह प्रतीक दृढ़ता और निश्चय शक्ति का और बढ़ाकर सफलता प्राप्ति में सहायक होगा।

(5) नोसा (GNOSA)

इसमें एक इनफिनीटी लम्बवत और एक इनफिनीटी चौड़ाई में बनाकर एक त्रिभुत बनाते है और बीच में एक गोल घेरा बनाते है।

1) यह प्रतीक आध्यात्मिक एवं भौतिक स्तर में संतुलन स्थापित करता है। मान लीजिये एक व्यक्ति बहुत अधिक भोग लिप्सा में डूबा है जितना भी मिल जाय वह और अधिक प्राप्त करना चाहता है एक मकान बनाया तो दो-चार-छः बढ़ाते जाना चाहता है और कभी संतुष्ट नहीं होता दूसरी ओर अधिक आध्यात्मिक है अपने कर्तव्यों की भी निर्वाह नहीं करता, हर समय अपने ध्यान-पूजा-पाठ में लगा रहता है इस परिस्थितियों में नोसा प्रतीक का प्रयोग करने से संतुलन स्थापित होता है और व्यक्ति आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार कार्य करने लगता है।

2) काल्पनिक उड़ान से छुटकारा – यह प्रतीक काल्पनिक उड़ान करने वाले

व्यक्ति के अचेतन मन को संतुलित करता है और चेतन मन को शक्तिशाली बनाता है। जिससे मन स्थिर हो जाता है और वह फिर किसी भी कार्य को अच्छी प्रकार करने लगता है, और काल्पनिक उड़ान लगाना बन्द कर देता है।

3) युवा पीड़ी को संतुलित करता है - जो बच्चे अधिक टी०वी०, घूमने-फिरने, खेलकूद में अधिक व्यस्त रहते है और पढ़ते नहीं है उनको इस प्रतीक से रेकी देने से वह सजग हो जाते हैं और सही दिशा में चलने लगते हैं कि हमें क्या करना है यह समझ अपने आप आने लगती है।

4) दो पीढ़ियों के अन्तर को दूर करता है।

5) सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।

6) आध्यात्मिक साधना करने वालों का ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित करता है।

(6) क्रिया (KRIYA)

रेकी डिग्री **II** का शक्ति प्रतीक है जो उसई के दो प्रतीकों को शक्ति प्रदान कर विस्तारित करता है उसी तरह का एक और चिन्ह इस क्रिया प्रतीक में शामिल है। इसमें दूसरे चिन्ह में विपरीत दिशा की ओर घुमाव है यानि की दूसरे चिन्ह में घुमाव क्लाकवाइज है। और पहले चिन्ह में घुमाव एन्टीक्लाक वाइज है और यह दोनों चिन्ह मिलकर करुणा रेकी में भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करते है।

यह प्रतीक हमारे समस्त प्रकार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है यह आवश्यकता व्यापार में लाभ, किसी भी अचल सम्पत्ति की आवश्यकता खरीद, बेच, सुख-वैभव की प्राप्ति, परीक्षा में सफलता, चल सम्पत्ति वैवाहिक सम्बन्धों की पुष्टि आदि किसी भी प्रकार की भौतिक आवश्यकता हो इस प्रतीक के प्रयोग से सफलता मिलती है।

जो भी इच्छा हो वह पूरी तरह स्पष्ट हो जैसे हमें कार चाहिए हमें अमुक महीने की अमुक तारीख तक कार मिल जाती है अमुक मॉडल की, अमुक रंग की कार मिल जाती है। यानि कि जो भी वस्तु चाहिए उसका नाम, आकार रंग और कब तक चाहिए यह सब स्पष्ट, सकारात्मक और वर्तमान में होना चाहिए उसके बाद आज्ञा चक्र में यह सब दृश्यीकरण करके क्रिया प्रतीक का प्रयोग देर तक करें। उस कार्य की पूर्ति के लिए

प्रयत्न भी बराबर करते रहें। करुणा रेकी के इस प्रतीक से कठिन से कठिन कार्य पूर्ण होते देखे गये हैं। सामूहिक लोगों को शान्त करने, शक्ति देने एवं उपचार हेतु भी इस प्रतीक का प्रयोग करते हैं।

(7) ई-आह-वाह (EE-AH-VAH)

यह ओऽम् की आकृति से लगभग मिलता हुआ प्रतीक है। यह जागरूकता, वास्तिकता का बोध कराता है।

1) यह प्रतीक मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं को क्रियान्वित कर भौतिक उनके कष्टों को दूर करता है।

2) यह वास्तविकता को पहचान कर उसी क्षेत्र में, कार्य को क्रियान्वित करवाता है। कई कार्य है जो सभी आवश्यक है कौन सा कार्य पहले किया जाय यह समझ में नहीं आता है उस समय सभी कार्यों को नम्बर डाल कर क्रम से लिख लें और ई-आह-वाह प्रतीक से रेकी दें तो थोड़ी देर तक इस प्रतीक से रेकी देने के बाद तुरन्त मस्तिष्क में आ जायेगा की कौन-सा कार्य पहले करें, फिर उस कार्य की कल्पना करके इस प्रतीक से रेकी दे वह कार्य कैसे सफल होगा दिशा निर्देश मिलते जायेगे। कभी-कभी हम दूसरे के विचारों को सुनकर प्रभावित होकर उस कार्य को करने का निर्णय कर लेते है और अन्दर से लगता है कि वह निर्णय उस पर लादा गया है तब इस प्रतीक का प्रयोग करने से हममें जागरूकता पैदा हो जाती है कि यह निर्णय हमारे योग्य है या नहीं। जो कार्य हमारे अनुकूल होता है उस ओर हमारी ऊर्जा को प्रवाहित कर देता है।

- आत्म विश्वास को बढ़ाता है।
- आकाश, पृथ्वी, पाताल को तथा चक्रों की नकारात्मकता को दूर कर उनमें ऊर्जा का संचार करता है।

(8) शान्ति (SHANTI)

करुणा रेकी में यह प्रतीक बहुत महत्वपूर्ण है जैसा ही नाम से प्रतीत होता है कि यह शान्ति प्रदान करता है।

1) यह करुणा रेकी के सभी प्रतीकों का प्रयोग करने के बाद उनके और अच्छे परिणाम के लिए अन्त में प्रयोग किया जात है।

2) अशान्ति को दूर कर शान्ति स्थापित करता है।

3) कोई व्यक्ति डरा हुआ हो या कोई बुरा स्वप्न देखा हो उस स्थिति को सामान्य करने के लिए शान्ति प्रतीक का प्रयोग करते हैं।

4) भूत वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में समन्वय स्थापित करता है। **भूतकाल** – तनाव और दबाब का काल है। **भविष्यकाल** – चिन्ता व फिक्र का काल है। **वर्तमान** – उपहार का काल है। सोच और कल्पना में हम अपने जीवन का 60 प्रतिशत समय हम इसमें लगा देते हैं मनुष्य आठ घंटे सोता है, सोलह घंटे का 60 प्रतिशत का मतलब है प्रतिदिन 9 ½ घंटे से अधिक समय अपने भूत के चिन्तन और भविष्य की कल्पना में लगा देते है वर्तमान काल यानि उपहार का समय यानि समय हमारा है। इसे हम प्यार, करुणा, ममता, कृतज्ञता, प्रसन्नता में लगा दें तो जीवन हमें आनन्द रुपी उपहार प्राप्त हो जाता है।

5) तीव्र कष्ट में इसका प्रयोग करने कष्ट की तीव्रता एकदम शान्त हो जाती है और व्यक्ति राहत की अनुभूति करता है।

6) कोई भी कार्यक्रम अच्छी प्रकार शान्तिपूर्वक पूर्ण हो जाये, किसी प्रकार का व्यवधान न आये इसके लिए शान्ति प्रतीक से कार्यक्रम के पहले रेकी देते हैं।

7) शान्ति प्रतीक का लम्बे समय तक प्रयोग करते रहने से आन्तरिक प्रभामण्डल साफ हो जाता है और मन में शान्ति और आनन्द रहने लगता है।

(9) होसाना (HOSANA)

यह प्रतीक भी बहुत शक्तिशाली है। यह प्रायः पुराने मकानों और गांवों के मकानों की दीवारों पर बना पाया जाता है।

जब कोई कार्य होते-होते बीच में रुक जाये यानि सभी कार्य अच्छी प्रकार चल रहे थे, किसी प्रकार का व्यवधान नहीं था, पता नहीं होते-होते कैसे कार्य रुक गया, जब

इस प्रकार की परिस्थिति हो तो होसाना प्रतीक का प्रयोग करने से रुके हुए सभी प्रकार के भौतिक कार्य पुनः प्रारम्भ हो जाते है।

होसाना का प्रतीक स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है। अगर दूर का उपचार (डिसटेन्स) रेकी करनी हो तो साथ में जोनर प्रतीक का भी प्रयोग करें।

(10) मैंलंग/सर्पेंट फायर

रीढ़ की किसी भी प्रकार के कष्ट में मैलंग/सर्पेंट फायर का प्रयोग किया जाता है ।

(11) आरोग्यम्

क्रानिक डिजीस, राजरोग, घातक रोग में आरोग्यम् प्रतीक का प्रयोग करते हैं ।

(12) षड्गम्

कठिन से कठिन नकारात्मकता को हटाने हेतु षड्गम् प्रतीक का प्रयोग करते हैं ।

❄ ❄ ❄

करूणा रेकी के सिम्बल

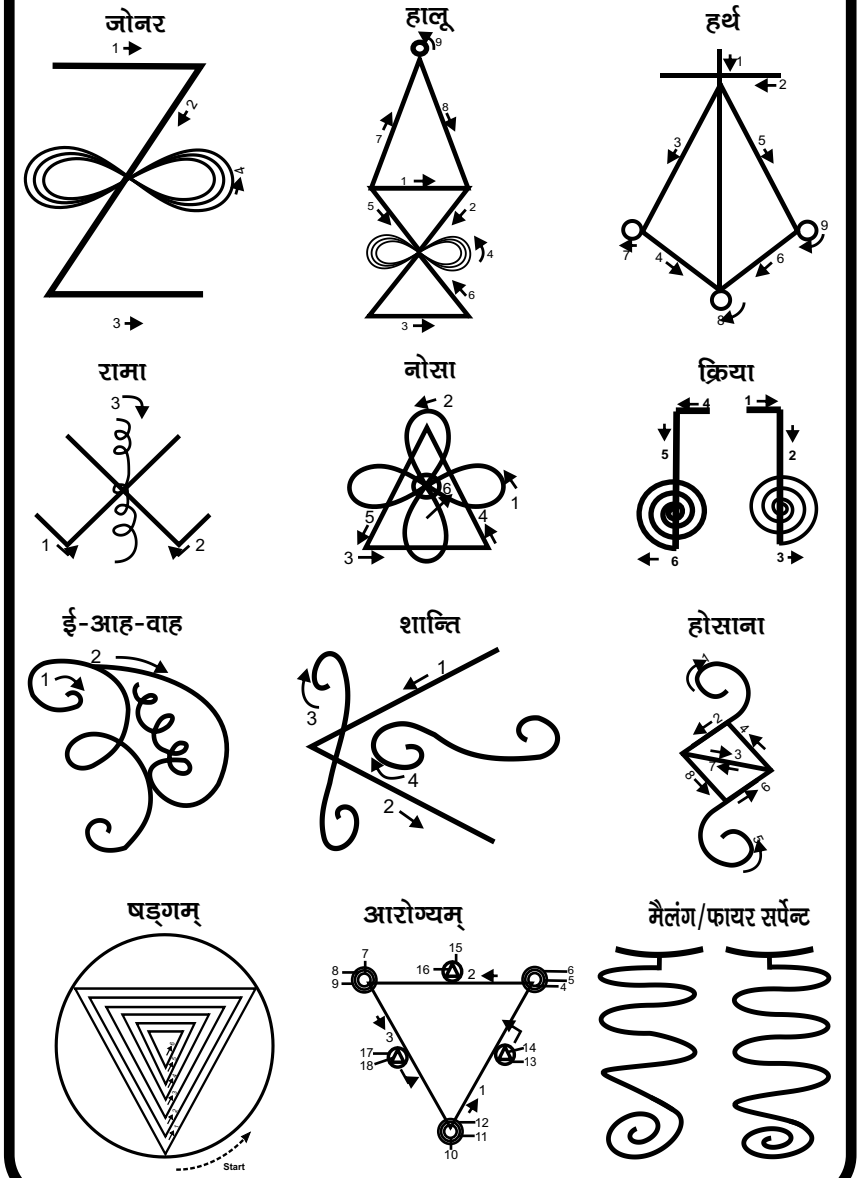

रेकी विद्या के अद्भुत चमत्कार

1. एक दिन मेरे बेटे को तेज बुखार था। सिर, दर्द से फटा जा रहा था। उसको मैने 20 मिनट रेकी दी। औरा (प्रभामण्डल) क्लीन (स्वच्छ) किया। उसी समय वह तेज नींद में सो गया। जब सोकर दो घण्टे बाद उठा। तब उसका बुखार जो 103^0 था। नार्मल 98.4^0 रह गया, सर दर्द बिल्कुल ठीक था। उसने और मैंने रेकी को धन्यवाद दिया।

2. मेरे छोटे बेटे का एक्सीडेन्ट हो गया था। उसके कन्धे, पीठ तथा घुटनें में चोट आयी थी, दर्द से वह तड़प रहा था, मैने 3 दिन उसको सुबह शाम रेकी दी, औरा (प्रभामण्डल) क्लीन किया। अब वह ठीक है, दर्द समाप्त हो गया।

3. मेरे पास मकान की समस्या थी। मैं बहुत परेशान रहती थी। अर्थ व्यवस्था डगमगा गयी थी। भाभी जी (रेकी आचार्या पूनम जी, जो मेरी रेकी गुरू हैं) के समझाने पर मेरी हिम्मत बंधी। मैंने रेकी लगातार दी और मेरी मकान की समस्या हल हो गयी अब मैं व मेरा परिवार खुश है। मैं रेकी गुरू भाभी पूनम जी को हृदय से धन्यवाद देती हूँ। उनके आर्शीवाद से मुझे अपने मकान का सुख प्राप्त हुआ। मैं रेकी को भी धन्यवाद देती हूँ। जब कि आर्थिक स्थिति को देखते हुये मुझे कल्पना तक नहीं थी कि कभी मेरा अपना मकान हो पायेगा।

-उपर्युक्त तीनों अनुभव योग शिक्षिका श्रीमती बीना निगम ने बताये

4. जिद्दी बच्चा ठीक हो गया-गोरखा रेजीमेण्ड से कर्नल राजेन्द्र सिंह आए और बताया कि मेरा लड़का 7 साल का है बहुत उधमी व चिल्लाता है, सामान फेंकता है, किसी की इज्जत नहीं करता है। लगता है जैसे की कोई राक्षसी वृत्ति उसमें आ गई है, कोई उपाय करें। हमने कहा ठीक है। 21 दिन का समय लगेगा हम प्रयास करेंगें कि 21 दिन में ही बच्चा लाभान्वित हो जाये। उसे यहाँ लाने लगे उसे प्रतिदिन रेकी, औरा-क्लीन व शब्द-सम्मोहन का प्रयोग दिया गया। 18 दिन में वह बच्चा ठीक हो गया। अब वह ठीक से बात करता है, स्कूल जाता है और सामान्य बच्चों की तरह रहता है। वास्तव में उसको भय व्याप्त था। जब वह नर्सरी में था तो उसकी टीचर उसका टिफिन खा लेती थी जिसका उसमें बदले की भावना आ गई थी। माताओं को रेकी विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।

5. डाउजर ने खोयी अँगूठी ढूंढ़ दी-बाजार से लौटी थी। अचानक देखा कि मेरी अँगूठी हाथ में नही है। एक दम धक्का लगा। इतनी पुरानी एवं महंगी अँगूठी कहां गिर गयी। हम लोग रेकी ट्रेनिंग में डाउजिंग सीख कर आये थे। मेरे पति डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' ने कहा 'डाउजर जी' से पूछा जाये। हम लोगों के पास डाउजर था ही। उसमें रेकी का आवाहन किया और क्रमशः उसकी भाषा में एक-एक प्रश्न करते गये। उसने जहां बताया वहाँ पहुँचे ठीक उसी स्थान पर अँगूठी पड़ी मिली। धन्यवाद डाउजर व रेकी को, धन्यवाद पति देव डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' को जिन्होंने डाउजर विद्या की याद दिलायी।

-उपर्युक्त दोनों अनुभव रेकी आचार्या माँ पूनम रानी जी के हैं

6. मेरी फैमिली शादी में जा रही थी। घर की ही शादी थी। सब तैयार थे जाने के लिये, कि अचानक मेरे बहनोई के पेट में बहुत तेज दर्द हुआ। मेरी बहन ने उनको डायजीन दी, और दवाइयाँ दी उनको कोई फायदा नहीं हुआ तब हमने बहन से कहा रेकी दे दें, उन्होनें कहा रेकी भी करके देख लो। मैने 30 मिनट रेकी दी, उनको डकार आने लगी और नीचे से गैस पास होने लगी। उनको आराम मिला, पेट दर्द भी ठीक हो गया, तब हम लोग शादी में आराम से चले गये। रेकी को धन्यवाद।

7. जयपुर से योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर एक पेसेन्ट आयी थी। उनको 104^0 बुखार आ गया था। तब हमने डा० साहब को बताया उन्होनें कहा रेकी दे दो। औरा-क्लीन करो। हमने 40 मिनट रेकी दी तो उनका बुखार 100^0 रह गया था। उनको आराम मिल गया और रात को वो सो गयी थी। सुबह बिल्कुल बुखार नही था। वह बिल्कुल ठीक थी।

-उपर्युक्त दोनो अनुभव योग शिक्षिका, रेकी चैनल बीना झा ने बताये हैं।

8. मेरी बेटी डेढ़ वर्ष की है। उसका नाम नेहा श्रीवास्तव है। वह चल नही पाती थी एक-एक कर के कदम चलती थी और गिर जाती थी। लगभग 8-9 महीने से उसका यह हाल था। जब मैंने यहां (डिवाइन रेकी सेन्टर, गीतानगर, कानपुर) पर रेकी I&II को सीखी और ग्रुप रेकी में यहां उसे भी डिस्टेन्स रेकी दी गई और मैंने घर जाकर देखा, वह कुछ-कुछ चलने लगी और उसे नियमित रेकी देने से हमें यह प्रतीत हुआ कि वह एक हफ्ते में छत पर चढ़ने लगी है उसमें ताकत आ गई। वह अब दौड़-दौड़ कर चलने लगी। मैं रेकी को धन्यवाद देती हूँ। जब से मैंने यहां रेकी सीखी, तब से मैं उसे रोज रेकी देती हूँ अब तो वह जल्दी-जल्दी आने की कोशिश भी करती है। उसे रेकी से बहुत लाभ हुआ।

- रेकी चैनल अलका श्रीवास्तव का रेकी का अनुभव

9. 'डाउजिंग चमत्कार' शत-प्रतिशत वे ही प्रश्न आये जो डाउजिंग ने बतायाः- मेरी बहन नीतू केशवानी बी० काम फाइनल की परीक्षा, तीन बार अच्छी मेहनत करने के बावजूद पास नहीं हो पाई तो गुरूजी से संपर्क किया। गुरूजी के मार्गदर्शन में हमने शशी खन्ना जी से संपर्क कर डाउजिंग करवाई। जिन्होंने मुझसे 10 साल के प्रश्न पेपर मंगवाये परन्तु मैने उन्हें 20 साल के प्रश्न पत्र लाकर दे दिये। एक सप्ताह पूरी मेहनत कर शशी खन्ना ने 600 प्रश्नों में से 35 प्रश्न डाउजिंग द्वारा छांटकर हमें दे दिये। परीक्षा में ठीक शत-प्रतिशत वो ही 35 के 35 प्रश्न आये। एक प्रश्न भी इधर-उधर का नही आया था।

-Ms. Shashi Khanna, GH13/1015, Paschim Vihar, ND-87

10. दर्द एवं सूजन गायब-जब हम यहां (देव अं० योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर) से दस दिन की छुट्टी लेकर गए थे उस समय हम घर में मात्र 3 दिन रहे उस समय माता जी के दांये घुटने और कोहनी में सूजन और दर्द था हमने उन्हें 21 दिन बिना बताए सुबह-शाम डिस्टेंस-रेकी दी तो उनकी सूजन और दर्द गायब हो गया अब उनकी बीमारी ठीक है।

-योगाचार्य महेश 'आत्मानंद' जी

रेकी मास्टर सत्येन्द्र तिवारी के रेकी पर स्वयं के अनुभव

1. रेकी शिक्षा की I व II डिग्री प्राप्ति के बाद जबकि उसका प्रयोग स्वयं पर चल रहा था, उस समय एक महिला जो आकस्मिक बिजली के आघात के कारण काफी बुरी तरह जल चुकी थी। बहुत समय से कमर दर्द के साथ रीढ़ के दर्द से पीड़ित थी। प्रथम दिवस 20 मिनट उपचार दिया गया। जिससे उसका 30 प्रतिशत दर्द समाप्त हो गया। जिसको चार फुट की सीढ़ियां चढ़ना मुस्किल था, वह पूरे आराम से चढ़ने उतरने लगीं 7 दिन की रेकी उर्जा जो कि 20-20 मिनट दी गई उसका सम्पूर्ण शरीर का दर्द जाता रहा।

2. एक महिला उम्र 45 वर्ष पिछले 25 साल से खूनी बवासीर से पीड़ित थी। आयुर्वेद के साथ-साथ अंग्रेजी दवाओं का सेवन भी कर चुकी थी। आप्रेशन के नाम उसे डर लगता था। मात्र 7 दिन प्रतिदिन 20 मिनट रेकी देने से दर्द, सूजन, रक्त का गिरना बन्द हो गया। कुछ दिन बाद पुनः मुलाकात के बाद उसने बताया कि 7 दिन के उपचार के बाद मस्से काफी नरम व छोटे हो गये हैं। रेकी के इस चमत्कार से मैं स्वयं चकित था कि जिस महिला को पिछले 22-25 साल का इलाज जितना फायदा नहीं दे सका उसे 7 दिन रेकी उपचार एवं औरा-क्लीन कैसे संभव कर सका?

3. एक व्यक्ति उम्र 38 वर्ष स्वप्न दोष के समस्या से ग्रस्त था। जिसके 2 बच्चे व 3 लड़कियां हैं। मुझसे सम्पर्क से पूर्व सहारनपुर, इटावा इत्यादि स्थानों से आयुर्वेद की दवायें जो कि कई सेक्स रोग के स्पेशलिस्ट करने वाले लोग जिनके विज्ञापन दीवारों पर लिखे देखे चुका था। महीनों से 2200-2500 रूपये तक की दवायें खाकर निराश हो चुका था। इस व्यक्ति के आज्ञा चक्र, मणिपूरक चक्र, हृदय चक्र व मूलाधार चक्र पर क्रमशः 15 दिन रेकी दी गई जिससे कि उसकी समस्या पूर्णतः समाप्त हो गई इस दौरान इसे इसबगोल की भूसी भिगोकर का सेवन भी शाम के समय कराया गया। रेकी के लाभ से मैं भी स्तंभित हूँ।

4. हमारी एक गाय जिसके मुंह के पास एक बहुत बड़ा फोड़ा निकल आया जिसे देखकर डर लगने लगा। गाय ने खाना-पीना छोड़ दिया। देखने वाले उसको फुटने की दवा बताने लगे। परन्तु मुझे रेकी पर पूरा विश्वास होने के कारण प्रार्थना करके अपना एक हाथ फोड़े वाले स्थान व दूसरा हाथ उसकी गर्दन के स्थान पर रख दिया व 30 मिनट तक रेकी सुबह व शाम को दिया प्रथम दिन के उपचार से फोड़ा 50 प्रतिशत कम हो गया सूजन समाप्त हो गई। गाय भोजन ग्रहण करने लगी 3 दिन पश्वात् फोड़ा समाप्त हो गया सभी लोग चकित थे मैं रेकी व रेकी गुरूओं को धन्यवाद दिया।

5. एक महिला रूमा देवी जो कि पिछले 6 साल से कमर दर्द से पीड़ित थी। अंग्रेजी दवायें फेल हो चुकी थी। आने पर 20 मिनट प्रतिदिन उपचार दिया गया। प्रथम दिवस पेट के बल लेटाने पर मात्र 2 मिनट ही लेट पाई इसके उपरान्त कुर्सी पर बैठाकर उपचार दिया गया प्रथम दिवस 20 प्रतिशत लाभ हुआ 15 दिन के उपचार से 90 प्रतिशत फायदा हुआ। 21 दिन में बिल्कुल ठीक हो गयी।

6. हमारा बच्चा जो कि 2 महीने का था उसे उल्टी व दस्त एक साथ होने पर अस्पताल ले जाया गया। संयोग से हम घर पर नही थे। आने पर सबने स्थिति को कन्ट्रोल से बाहर

बताकर जिला अस्पताल ले जाने कि बात कही उसका पैर फूलता जा रहा था। मैने रेकी प्रार्थना के बाद मुस्किल से 2 मिनट ही रेकी का प्रवाह किया कि एक दम उसे दस्त पुनः हुआ और पैर पिचक कर पूर्ववत हो गया। उस समय मन में यह विचार रेकी के द्वारा प्रेषित हुआ कि एक दस्त और होगा उसके बाद कोई कठिनाई नही आएगी। सच मानिए कुछ देर के बाद एक दस्त हुआ और उल्टी-दस्त बंद हो गया। ये अनुभव अविस्मरणीय है।

7. जुलाई 05 में मेरे एक रिश्ते के भाई आये कि हमारे पड़ोस में एक साइटिका के दर्द से विस्तर में पड़ा लोट-लोट कर रो रहा है। आप बाहर से कुछ सीखकर आए हैं जरा देख लीजिए शायद कुछ आराम हो जाए। शायद शब्द ने मुझे उसके अविश्वास को प्रकट कर दिया। रिस्ते को देखते हुए मजबूर होकर जाना पड़ा जाने पर उसकी स्थिति वास्तव में नाजुक थी। परिवार के सभी सदस्य उसे घेर कर बैठे हुये थे जो कि बताए अनुसार ही रो रहा था उठना बैठना कुछ भी सम्भव नहीं था। मैंने सबको सांतवना देने के बाद आराम होने की बात कही। तुरन्त रेकी प्रार्थना करके 25-30 मिनट रेकी को प्रेषित होने दिया। मुख्यतः 15 मिनट दाहिने कूल्हे पर रेकी उपचार दिया। 20 मिनट में दर्द 70 प्रतिशत कम हो गया व 30 मिनट में समाप्त हो गया। कुछ नार्मल होने पर उसे एक एलोपैथिक डाक्टर के पास ले गए सुनकर मुझे मालुम हुआ कि वे समझे थे कि न जाने कि किस मंत्र के द्वारा दर्द ठीक हुआ था। जाने क्या मंत्र पढ़कर झाड़ दिया था ऐसा इलाज ठीक नही परन्तु मैं रेकी के तुरन्त मिलने वाले परिणाम से बहुत ही ज्यादा उत्साहित था और रहूँगा।

8. एक 4 वर्षीय लड़के ने लापरवाही वश मिट्टी के तेल का सेवन कर लिया। जिसको उल्टियां भी कराई गई पर तेल नही निकला। डाक्टर के पास ले गए जिन्होनें जिला अस्पताल को रिफर कर दिया। ये सूचना मुझे मिली तो हमारी बहन ने कुछ करने को कहा हमने दूरस्थ रेकी का प्रयोग किया और कहा कि अब वह सुरक्षित है। तब उसने कहा कि कैसे?मैंने कहा रेकी स्वयं बुद्धि है उसे किसी दिशा निर्देशन की आवश्यकता नही होती है मन की चेतना ने उसको सुरक्षित होने की बात कही है कुछ समय बाद फोन पर सूचना आई कि वह ठीक प्रकार से है कोई चिन्ता की बात नही है। 25-30 मिनट की दूरस्थ (रेकी II) की घटना को रेकी द्वारा किसी तरह मन में भाव के कारण विचार आया मैं स्वयं कभी-कभी आश्चर्य में पड़ हो जाता हूँ।

रेकी द्वारा रुका पैसा मिला

मैं पवन कुमार शर्मा, फेथफुलगंज, छावनी कानपुर से हूँ। मैं एक सेल्स एक्जक्यूटिव हूँ। मार्केट से मेरा पैसा फंस जाने से मैं बहुत परेशान रहता था। इसलिए अपना काम सिद्ध करने के लिए मैंने रेकी विद्या की सहायता ली, हर्थ-क्रिया और शान्ति सिम्बल से उस डीलर को आज्ञा चक्र में देखकर 21 दिन रेकी दिया। अभी 21 दिन भी पूरे नही हो पाये थे कि उस व्यक्ति ने बड़ी ही आसानी से मेरा पेमेन्ट मुझे दे दिया और मेरा सम्मान भी किया। इतना देखकर मैंने रेकी विद्या एवं रेकी गुरूमाँ को धन्यवाद् दिया।

-पवन कुमार शर्मा, फेथफुलगंज छावनी, कानपुर, मो.-9935900168

रेकी ऊर्जा से मुझे पुत्र की प्राप्ति हुयी

गुरूजी सादर प्रणाम, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि कैसे आपके आर्शीवाद से मेरा जीवन अंधकार से प्रकाश की ओर मुड़ गया मैंने तो समझ लिया था कि केवल 27 वर्ष की आयु में ही मेरा जीवन समाप्त हो गया लेकिन आपके आर्शीवाद से मेरे जीवन में एक नया सबेरा आया। गुरूजी करीब दो साल पहले पारिवारिक स्थिति को देखते हुये हमने यह निश्चय किया कि हमें एक बच्चा और चाहिए तो हम सूरज नर्सिंग होम की डाक्टर सविता लूथरा के पास गये तो उन्होंने मेरा एक अल्ट्रासाउन्ड करवाया और कहा कि सब कुछ ठीक है। कुछ समय बाद मैं गर्भवती हो गयी तो पुनः उन्ही से इलाज करवाया लेकिन कुछ ही दिनों के बाद मुझे बहुत परेशानी होने लगी मैं लगातार दवायें और इंजेक्शन लगवा रही थी लेकिन मेरी परेशानी कम होने की बजाय बढ़ रही थी और मैं शारीरिक रूप से कमजोर होने लगी। मैं फिर डाक्टर के पास गयी और उन्होंने फिर अल्ट्रासाउन्ड करवाया और कहा सब ठीक है। कुछ समझ में नही आ रहा था कि क्या करें? फिर मैंने डाक्टर बदली और डाक्टर... गुप्ता को दिखाया तो उन्होंने मेरी सारी पुरानी रिपोर्ट देखी और कहा कि इन रिपोर्ट में गर्भाशय में गांठ है तब मुझे पता चला कि मेरे गर्भाशय में गांठ है। फिर मैंने उन्ही से गर्भपात करवा लिया। उन्होंने बताया कि एलोपैथिक में इसका इलाज आप्रेशन है जो 30 वर्ष से पहले नहीं हो सकता। फिर मैंने एक साल तक होम्योपैथिक इलाज करवाया लेकिन गांठ कम होने की बजाय बढ़ गयी तब मैं और परेशान हो गयी फिर मेरे पति ने मुझे समझाया और कहा कि हम लोग गुरूजी के पास चलते हैं। उनको परेशानी बतायेंगे और उसके बाद एक साल पहले हम गुरूजी के पास गये और उन्हें सारी बात बतायी तब उन्होंने मुझे रेकी सीखकर स्वयं इलाज करने की सलाह दी और मैंने वैसा ही किया और रेकी सीखी जब मैंने रेकी ऊर्जा से अपना इलाज किया तो मुझे बहुत आराम मिला कुछ माह पूर्व मुझे एहसास हुआ कि मैं पुनः गर्भवती हो गयी हूँ इस पर मैंने पुनः डा... गुप्ता को दिखाया। तो उन्होंने अल्ट्रासाउन्ड करवाने को कहा फिर मैंने सिग्मा पैथोलॉजी से अल्ट्रासाउन्ड कराया और रिपोर्ट डा. को दिखायी तो उन्होंने कहा कि रिपोर्ट के आधार पर कि अल्ट्रासाउन्ड में बच्चा तो दिख नहीं रहा है। और उन्होंने गर्भपात कराने की सलाह दे दी। फिर मैंने एक बार उन्हीं से फिर अल्ट्रासाउन्ड कराया मुझे लगा कि कभी-कभी कुछ रिपोर्ट गलत भी होती है तो उसमें भी वही निकला लेकिन मैं इस बार पूरी तरह स्वस्थ थी मुझे कोई परेशानी नही थी एक बार फिर मैं अपने पति के साथ गुरू जी के पास गयी क्योंकि हमें समझ में नही आ रहा था कि क्या करें फिर गुरू जी को सारी बात बतायी तो **उन्होंने हमें डा. नीना कपूर वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ मरियमपुर हॉस्पिटल, कानपुर** से मिलने की सलाह दी मैंने उन्ही को दिखाया तो उन्होंने मेरी पूरी बात सुनी और मुझे 15 दिन का इंतजार करने के लिए कहा और कुछ दवाइयां लिखी और उसके बाद जांच के लिए कहा मैंने वैसे ही किया 15 दिन के बाद मैंने फिर से अल्ट्रासाउन्ड करवाया तो सब कुछ ठीक था। मेरे गर्भ में पल रहा बच्चा बिल्कुल ठीक था और मैं अनावश्यक तकलीफ से बच गयी। यदि मैं गुरूजी के पास नहीं जाती तो डा. गुप्ता के गलत निदान से मेरी तो की जिन्दगी ही बरबाद हो जाती।

गुरू जी (डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी') आपके आर्शीवाद से तथा रेकी गुरू माँ पूनम जी की कृपा से व रेकी ऊर्जा के कारण आज मैं एक बार फिर मातृत्व सुख उठा पा रही हूँ ।

-कल्पना सिंह पत्नि श्री अजय सिंह, न्यू इण्डिया इन्सोरेन्स कम्पनी, बेनाझाबर, कानपुर

रेकी के कमाल

मैं रीतू वर्मा, अम्बाला शहर (हरियाणा) की रहने वाली हूँ। आज से तीन वर्ष पूर्व देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर में अपनी चिकित्सा करवाने हेतु आयी थी, मुझे रोग इस प्रकार जकड़े हुये थे कि समझ में नही आती थी कि किस-किस बीमारी का इलाज करवाऊँ। मन हताश रहता था और स्वभाव बहुत गुस्सैल एवं झगड़ालू था! गुरूजी के समझाने पर यहां से मैंने उपचार के साथ-साथ चिकित्सा पद्धतियां सीखने का मन बनाया। मैंने गुरू जी से प्राकृतिक चिकित्सा, योग एवं साक्षी ध्यान साधना के साथ-साथ चुम्बक चिकित्सा सीखी। फिर मुझे लगा कि रेकी के बिना विकास की प्रक्रिया एवं चिकित्सा पद्धति कुछ अपूर्ण सी है। इसलिए माँ पूनमरानी जी जो कि ग्रैंड रेकी मास्टर हैं जी से रेकी प्रथम एवं रेकी द्वितीय और करूणा रेकी सीखी। धीरे-धीरे मेरा स्वास्थ्य सुधरने लगा। मन हमेशा खुश रहने लगा। फिर लगा कि रेकी जैसी दिव्य शक्ति का लाभ जैसे मैंने उठाया है, वैसे सभी उठा पायें, इसी भाव के साथ मैंने रेकी मास्टर करने की ठानी और आज मेरा खुद का एक बहुत सुन्दर रेकी सेंटर है, **ताकि अधिक से अधिक लोक कल्याण में सहायता प्रदान कर सकूँ और इस यात्रा में मेरे गुरूजनों विशेषकर रेकी आचार्या पूनमरानी जी और योग आचार्या डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' का भरपूर सहयोग, प्रेम एवं दिव्य आर्शीवाद है।**

अब ईश्वरीय कृपा से और मेरे गुरूजनों की कृपा से 21 सितम्बर 2015 में मैं रेकी ग्रैंड मास्टर होने का सौभाग्य प्राप्त कर रही हूँ। अपने क्लीनिक, सेंटर के प्रयोगों में मैंने कई व्यक्तियों का सफलतापूर्वक उपचार किया। रेकी के मात्र दो सैशन में मैंने कई व्यक्तियों को कालाजादू और निगेटिव एनर्जी से मुक्त करने में सफलता हासिल की है। इसके अलावा जो स्त्रियां बार-बार गर्भपात से पीड़ित थी, वह भी सफलतापूर्वक माँ बन पाने में सक्षम हैं। कई व्यवसायी जो अपने घर और आफिस में निगेटिव एनर्जी की उपस्थिति एवं विचारों के कारण दुःखी रहते थे, वह भी रेकी एवं ध्यान के माध्यम से अच्छा महसूस करने लगे हैं। कुछ किसान जैसे कालाजादू के प्रभाव के कारण फसल पकने के बाद एकदम सूख जाने की वजह नही समझ पा रहे थे, वह भी रेकी शक्ति के प्रयोग के कारण अब खुद को धनी मानने लगे हैं। इस प्रकार रेकी शक्ति, परमपिता परमात्मा एवं मेरे गुरूओं के माध्यम से आज मैं जो भी हूँ, खुद को अत्यन्त किस्मत का धनी महसूस करती हूँ। मुझे इस हेतु चुनने के लिए इन्हें कोटि-कोटि प्रणाम, कोटि-कोटि धन्यवाद!

-रीतू वर्मा, 148, फेस-3, जग्गी कालोनी, अम्बाला शहर (हरियाणा)-134003

रेकी से गांठ गल गयी

मैं गौरव गुप्ता, निवासी कर्नलगंज, तीन माह पूर्व गले में गांठ होने के कारण परेशान था। सर्वप्रथम एलोपैथी चिकित्सा करायी जिसमें डा. ने कुछ हाई एण्टीबायोटिक दी जिसे कुछ समय के लिए सूजन तो कम हो गयी पर गांठ बनी रही। फिर होम्योपैथी दवायें भी ली मगर लाभ आंशिक ही हुआ। डा. ने कहा कि अगर दवा से ठीक नहीं हुआ तो आप्रेशन करना पड़ेगा और फिर भी भविष्य में दुबारा गांठ होने की सम्भावना बनी रहेगी।

मैंने कई सालों से डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' के यहां योग साधना, रेकी, चुम्बक चिकित्सा आदि सीखता रहा हूँ। एक दिन रेकी साधना में बैठे-बैठे मुझे अन्दर से आवाज आई कि, मैं क्यों इधर-उधर भटक रहा हूँ मुझे तो डा. आनन्द जी के पास जाना चाहिए अगले दिन में डा. साहब से मिला, उन्होंने मुझे चुम्बक चिकित्सा व रेकी साधना करने की सलाह दी, बीस दिन के अन्दर मैं पूर्णतः स्वस्थ हो गया। गांठ गायब हो गयी, मैं पूरे हृदय से डा. आनन्द जी को रेकी मास्टर माँ पूनमरानी जी को धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन दिया।

-गौरव गुप्ता, जवाहर नगर, कानपुर, मो.-9651782515

कलर ब्लाइंड से छुटकारा मिला

मेरा नाम शिवम है मैं कानपुर का ही रहने वाला हूँ। मुझे कलर ब्लाइंड का पता चला और कानपुर के आई स्पेशलिस्ट डा. महमूद रहमानी जी कानपुर ने मुझे देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र के संस्थापक डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' के बारे में बताया। **मैं आनन्द जी से मिला। ईश्वर की कृपा और गुरू जी के आर्शीवाद से मेरा कलर ब्लाइंड अब पूर्ण रूप से ठीक हो गया है। मेरा चयन इण्डियन एयर फोर्स में भी हो गया है।**

-शिवम, आई-810, गुजैनी, कानपुर नगर, मो.-8726516858

☞ **विचित्र किन्तु सत्य-**कलर ब्लाइंड का किसी भी मेडिकल पैथी में इलाज नही है। श्रद्धेय डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' की यह अद्वितीय खोज है। अभी तक (26 जनवरी 2016) तक 70 रोगी कलर ब्लाइंड के ठीक कर चुके हैं। जिसका रिकार्ड योग केन्द्र में है। **-सम्पादिका पूनमरानी**

आश्चर्य किन्तु सत्य

बिना डायलिसिस-बिना गुर्दा प्रत्यारोपड़ (ट्रान्सप्लांट) के गुर्दे ठीक हो गये

मेरी माता जी के गुर्दों में इन्फेक्शन हो गया था और उनका Cretinin 9.9 हो गया था। डॉक्टरों के अनुसार इस रोग में पहले दवायें चलती हैं फिर डायलेसिस करवाना ही पड़ता है। देर सबेर फिर गुर्दा बदलवाना पड़ता है। यह जानकर मैं घबरा गया कि इतनी जटिल प्रतिक्रिया और फिर भी गुर्दा बदलवाना पड़ता है। बाद में 15 हजार रूपये की प्रतिमाह की दवा आजीवन चलेगी। तभी यह बात मेरे संज्ञान में आयी कि हमारे एक रिश्तेदार (श्री हरीश कलवानी के पिता श्री रीजूमल कलवानी,) जो कि चारबाग लखनऊ में रहते हैं उनको भी यही गुर्दे की बीमारी थी बल्कि उनका रोजाना डायलेसिस भी होता था और वह बिल्कुल स्वस्थ हैं। वर्तमान में न डायलेसिस की आवश्यकता है और न ही कोई गुर्दे की बीमारी की दवा खा रहे हैं। सिरेमिक क्रेटिनिन भी बिल्कुल नारमल हो गया है।

हमने भी डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' से सम्पर्क किया तथा पन्द्रह दिन उनके योग केन्द्र में ही माता जी की चुम्बक चिकित्सा के साथ प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर चिकित्सा, रेकी आदि का इलाज लिया। बाहर से काफी स्वस्थ दिखने पर उनका क्रेटिनिन जांच कराई तो 5.8 हो गया। उसके पश्चात् डा. आनन्द जी के मार्गदर्शन में चिकित्सा लेते रहें। आज मुझे यह बताते हुये अत्याधिक हर्ष हो रहा है कि दो महीने पूरे हो जाने पर हमारी माता जी का क्रेटिनिन 2 हो गया है वह भी बिना दवा-बिना डायलेसिस एवं बिना गुर्दे बदले।

-नरेन्द्र पंजवानी, 106/287, गाँधी नगर, कानपुर

रेकी का अद्भूत चमत्कार-मैं गुरू आशीष घोष दिनांक 25 मार्च को करूणा रेकी सिखा मेरा सत्तरह सौ रुपया एक सज्जन को मेरा इलेक्टकन लाइसेन्स रिनू कराने के लिये दिया था। आज चार वर्ष न तो लाइसेन्स रिनू हुआ न मुझे लाइसेन्स रिनू कराया उनका कहना हे कि लाइसेन्स लखनऊ दफ्तर से खो गया। और लाइसेन्स रिनू कराने के लिए रिश्वत के तौर पर पन्द्रह सौ रुपया और रिनूवल के भी तीन सौ रुपये हमसे लिया था। जो कि काम न होने पर न पैसे वापस किये न लाइसेन्स वापस किया। करूणा रेकी सीखने के दो दिन पश्चात् हमने रेकी किया और ठीक दूसरे दिन हमें तेरह सौ रुपये उसने किसी के हाथ से भेज दिया और हमें मिल गया। मैं रेकी शक्ति को धन्यवाद करता हूँ। रेकी गुरू और रेकी गुरूमां को भी दिल से धन्यवाद करता हूँ।

-G.A. Ghosh, 22, Munshipara Lane, Kolkata-700006

I lost Vision of my right Eye for that the help of one Reiki Master was able to Cure with the problem within 2 months so I am also learning Reiki to help, self my family & Other's.

Date-10.01.2016

-Saurabh Talreja, 120/500-A, Lajpat Nagar, Kanpur, Mob.:09936274444

श्रीमती अर्पणा, जिन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व डिवायन रेकी सेन्टर गीतानगर, कानपुर से रेकी मास्टर (III A & IIIB) का कोर्स किया है, उसके पूर्व उन्होंने करुणा रेकी का कोर्स किया था। उसके पूर्व रेकी I & II का कोर्स लिया था। उन्होंने अपने व्यक्तिगत निम्नलिखित अनुभव लिख भेजे हैं - रेकी जिज्ञासुओं की श्रद्धा बढ़ाने के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे।

1) जब हमने रेकी I & II कर ली थी। तब हमने रेकी II के सिम्बल बनाकर चाचा-चाची और मम्मी-पापा के परिवार में घनिष्टता हो जाये, ये इच्छा डिब्बी में लिखकर 20 मिनट रोज तीन महीने लगातार रेकी दी थी। जिसका हमें चमत्कारी लाभ दिखा।

2) करुणा रेकी सीखने के बाद हमने अपने भाई की सर्विस में उन्नति के लिए डिब्बी में करुणा रेकी के जोनर क्रिया और शान्ति सिम्बल लगाकर 21 दिन तक 20 मिनट लगातार रेकी दी। महीने भर में उसकी उन्नति हो गई।

3) मेरा भाई, मम्मी-पापा जी का कहना बिल्कुल भी नहीं सुनता था। अगर कभी मम्मी की तबीयत खराब हो जाये तो मम्मी के कहने पर दवा भी नहीं लाकर देना था। पापा जी बाहर से कोई सामान सब्जी या दूध लाने को कहते थे तो साफ मना कर देता था। मम्मी जी खाना बनाती थी, उसमें हमेशा कमी निकालता था कि सब्जी अच्छी नहीं बनी है, भाई की

इन सब आदतों से मम्मी-पापा चिंतित रहते थे। अपने छोटे-छोटे खर्चे के रु० भी पापा जी से माँगता था। मम्मी पापा को उसके कारण चिंतित देखकर हमने जोनर, हर्थ और शान्ति सिम्बल लगाकर, यह इच्छा लिखकर कि मेरा भाई मम्मी पापा की बहुत आज्ञा मानता है। उनको सब कहना सुनता है। 21 दिन तक 20 मिनट रेकी की, हमें बहुत लाभ हुआ।

श्रीमती कुसुम निगम जिन्होंने रेकी I, रेकी II रेकी करुणा एवं रेकी IIIA का कोर्स कर चुकी है। उनके अनुभव उन्हीं की कलम से -

- मेरी माता जी (सास) का संकल्प रामेश्वरम के दर्शन और पूजा अर्चना का था। मन्दिर में बाइस कुन्डों के स्नान व पूजा के बाद हम जब वापस होटल पहुँचे, तो उनके पैरों में बहुत सूजन और दर्द था और वह चलने में असर्मथ हो रही थी। मैनें सोचा कि क्यों ने स्पर्श चिकित्सा (रेकी) का उपयोग किया जाय और उन्हें आरामे दिलाया जाय। मैनें उन्हें आराम से लिटा दिया और रेकी देनी शुरू की। पहले उनके दर्द वाले स्थान पर बीस मिनट रेकी दी। फिर उनको पेट के बल लिटाकर पन्द्रह मिनट रुट चक्र (मूलाधार) पर रेकी दी। साथ में ईश्वर से प्रार्थना भी करने लगी, आधे घंटे में उनके पैर की सूजन कम हो गई और उनके चेहरे से कृतज्ञता का भाव झलकने लगा। इसी प्रकार हम जहाँ-जहाँ भी पर्यटन व दर्शनार्थ गये। शाम को जब माता जी बहुत थकान अनुभव करती थी तब मैं वापस अपने कमरे में आकर उन्हें बीस मिनट पूरे शरीर पर Distant Healing (दूरस्थ उपचार) करती थी और वह सो जाती थीं। रेकी का

चमत्कार है कि अस्सी वर्ष की आयु व क्रशकाय शरीर होते हुए भी उनके साथ हमारी तीर्थयात्रा सफल हुई।

दूरस्थ रेकी से टूटते दाम्पत्य जीवन में फिर एकता आयी:- मेरे परिचित पति-पत्नी के बीच आपस में मन मोटाव बढ़ता जा रहा था। पत्नी चाहती थी कि उनके जीवन में पहले जैसी ही फिर से मधुरता और सरसता आ जाय। उसने मुझसे सम्पर्क किया मैने उसे रेकी I&II सीखकर स्वयं रेकी से लाभ उठाने की प्रेरणा दी और साथ में पति-पत्नी के बीच पुनः मधुरता वाला ऑटो सजेशन किया। आश्चर्य उनके मध्य लगभग पूर्व जैसा ही प्रेम एवं मधुर व्यवहार पैदा हो गया है।

-सतीश कपूर, 120-B, अशोक बिहार, दिल्ली

रेकी का चमत्कार-मेरे बच्चे की स्कूल से शिकायत आयी कि आपका बेटा बड़ी गन्दी हरकतें करता है। और किसी भी टीचर की इज्जत नहीं करता और न ही अनुशासन में रहता है। स्कूल से आये दिन ये शिकायतें आने लगी। हम लोगों को स्कूल में बुलाकर बच्चे की हरकतें बताकर शर्मिंदा किया जाता था। उसकी बढ़ती हरकतें व गुस्सा देखकर दो बार तो स्कूल से भी निकाल दिया गया। फिर उसी स्कूल के एक टीचर ने कहा कि एक बार आप

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर में इस बच्चे को लेकर जाओ। उनके पास ऐसी विद्यायें हैं कि यह बच्चा ठीक हो जायेगा मैंने वहाँ के संचालक-डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' से समय लेकर बच्चे को दिखाया। सारी बात सुनकर उन्होंने बच्चे को 21 **दिन 'डिस्टेंस-रेकी' श्रद्धेया रेकी आचार्या पूनम जी से दिलाया। और छुट्टी में वहीं बुलाकर 'टच-रेकी' दिया। साथ ही श्रद्धेय डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' ने शुभ स्वीकृति (पॉजिटिव आटो सजेशन) का शक्तिपात किया।** आज पूरे 21 दिन हो गये। बच्चा न केवल सामान्य व्यवहार करने लगा है बल्कि मधुर व विनम्र हो गया है। सारा स्कूल आश्चर्य में है कि यह वही लड़का है। मैं डा० आनन्द जी का एवं दीदी पूनम जी का बहुत-बहुत आभारी हूँ कि उनकी **'रेकी साधना एवं पॉजिटिव आटो सजेशन शक्तिपात'** से मेरा बच्चा बिलकुल ठीक हो गया।

-अनिल कुमार सचान, 185/2, जूही लाल कालोनी, कानपुर

रेकी से व्यापार में वृद्धि व तनाव से मुक्ति-मैं अपने व्यापार को लेकर पिछले कई वर्षों से परेशान था। इस व्यापारिक परेशानी के कारण मैं काफी तनाव ग्रस्त था तथा नकारात्मक विचार भी उत्पन्न हो गये। तब मैं इस समस्या से छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगा, अचानक मुझे याद आया कि मेरे भइया व भाभी ने वर्षों पूर्व रेकी आचार्या माँ पूनम रानी गीतानगर कानपुर से रेकी विद्या का कोर्स किया था इससे उन्हें बहुत लाभ हुआ था। उसी समय मैंने भी इस विद्या को सीखने का दृढ़ संकल्प किया। मैंने तत्काल श्रद्धेय डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' से सम्पर्क किया तथा उनकी धर्म पत्नी रेकी मास्टर श्रीमती पूनमरानी जी से रेकी प्रथम, रेकी द्वितीय व करूणा रेकी का कोर्स किया, इसके बाद मुझे आश्चर्य जनक लाभ हुआ, मेरा व्यापार बढ़ गया, मेरे अन्दर आये नकारात्मक विचारों के कारण जो लोग मुझसे दूर भागते थे वे सभी मेरे समीप आने लगे। मेरे पिताजी जो मेरे इन्हीं विचारों के कारण नाराज थे उनकी नाराजगी दूर हो गयी। रेकी बाक्स के द्वारा छात्रों की समस्या का भी निदान हो गया उनका परीक्षा प्रतिशत 60% से बढ़कर 75% हो गया। मैं डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती पूनमरानी जी का आभार व्यक्त करता हूँ।

-अरूण गर्ग, LIG-163, बर्रा-2, कानपुर

रेकी से माइग्रेन ठीक हुआ-मैं काफी समय से माइग्रेन की बीमारी से पीड़ित थी। सर्दी के मौसम में इस बीमारी से अत्यधिक परेशानी होती थी इसका मैंने बहुत इलाज कराया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ तब मैंने रेकी आचार्या माँ पूनम जी से रेकी विद्या सीखी, इसके बाद मुझे आश्चर्यजनक लाभ हुआ और मेरा माइग्रेन ठीक हो गया। अब मुझे सर्दी में कोई परेशानी नहीं होती। मैं रेकी विद्या व रेकी आचार्या पूनमरानी जी को धन्यवाद देती हूँ।

-श्रीमती कुन्ती त्रिवेदी, 117/Q/677, शारदानगर, कानपुर

विचित्र किन्तु सत्य

गर्दन एवं कमर के कष्ट से छुटकारा

(सरवाइकल स्पांडलाइटिस एवं लम्बर पेन से मुक्ति)

मैं पिछले छः माह से सरवायकल स्पांडलायटिस (गर्दन कष्ट) एवं लम्बर पेन (कमर दर्द) से पीड़ित था। इसके लिये इन कष्टों से छुटकारा पाने हेतु मैं अनेक आर्थोपेडिक्स से मिला। उनके कई टेस्टिंग कराने के उपरांत उपरोक्त रोगों का इलाज आरम्भ हुआ किन्तु कोई लाभ नही हुआ। दवा बंद करने के उपरांत पुनः दर्द होने लगता था। इन दर्दों ने मेरा सुख चैन छीन लिया। इसी दौरान मेरे अति परिचित श्री शक्ति नारायण गर्ग जी से बातचीत में मैंने अपनी बीमारी के विषय में उन्हें बताया। तो उन्होंने बताया कि मेरी एक परिचिता सुषमा रामचन्दानी भी इन्हीं रोगों के कारण अत्यधिक परेशान थी। तो वह देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर में जाकर डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' से मिली। तो उन्होंने चुम्बक चिकित्सा, रेकी विद्या एवं पोस्चर थिरेपी के द्वारा मात्र दस दिनों में उन्हें बिल्कुल ठीक कर दिया। श्री गर्ग जी ने मुझे भी डा० आनन्द जी को दिखाया। तो उन्होंने मुझे भी दस दिनों तक गीतानगर योग केन्द्र (कानपुर) में आने की सलाह दी। दस दिनों में मैं भी इन दोनों कष्टों से छुटकारा पा गया साथ में हाई बी. पी. भी कन्ट्रोल में हो गया कब्ज में भी बहुत आराम मिल गया। मैं डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' एवं रेकी आचार्या पूनमरानी जी का धन्यवाद करता हूँ। जिनकी कृपा से भी इन कष्टों से छुटकारा मिल गया साथ ही मुझे उनके कुछ विचार-सूत्रों से मन को भी बहुत चैन मिला।

-भगवान दास, 122/531, शास्त्री नगर, कानपुर, मो०-9839151505

रेकी चैनल श्रीमती अंजना शर्मा के रेकी के चमत्कार

● घर पर काम करते-करते अचानक चाकू से हाथ कट गया। बहुत खून बहने लगा। नल के नीचे ठंडे पानी से हाथ धोया फिर भी खून बहना बंद नही हुआ। अचानक मन से आवाज आयी। रेकी करो! तुरंत हाथों को दबाकर रेकी देनी शुरू की 2-3 मिनट तक, खून बहना बंद! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। खुशी से मेरी आंखों में आंसू आ गये! **मैं मंदिर में (घर के) भगवान को बहुत धन्यवाद दिया! रेकी जरूर सभी को सीखना चाहिए! जब कोई साधन पास नहीं होता उस समय रेकी ही काम आती है। ईश्वर का आर्शीवाद सबको ग्रहण करना चाहिए। आदरणीय गुरू माँ परम पूजनीय गुरू जी को प्रणाम जिनके सानिध्य में मैं रेकी शिक्षा ग्रहण की।**

● **शराब पीने की आदत छूट गई**-मैं अंजना शर्मा अपने रेकी के चमत्कारी अनुभव बताना चाहती हूँ। मेरे पति को पिछले 40-45 सालों से शराब पीने की लत थी। रेकी के चमत्कारी अनुभव से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। घर का वातावरण जो पति की खराब आदतों (शराब पीकर परेशान करना) से बहुत दुःखी रहता था। सबसे पहले मैंने पति को रेकी दी। जो किसी भी कीमत पर इस आदत को छोड़ना नही चाहते थे। जब भी पीकर आते शोर मचाते, मैं चुपचाप रेकी देती रही। 3-4 महीने हो गये। अब शराब पीने का मन नहीं करता और कभी अगर पी भी लेते हैं तो खुद कहते हैं। मुझको रेकी दे दो। रेकी गुरू माँ के चरणों में कोटि-कोटि धन्यवाद, मेरे परिवार में सुख शांति का वातावरण हो गया।

-अंजना शर्मा, केशव नगर, कानपुर

● **रेकी से मच्छरों ने काटना बंद कर दिया**-कानपुर में बहन पूनमरानी जी से रेकी प्रथम एवं द्वितीय का प्रशिक्षण लेने के बाद एक बहुत मनोरंजक प्रयोग मैंने किया। अपने पुत्र के पास गुड़गांव में कुछ दिनों के प्रवास के समय पहले ही दिन रात में मच्छरों के बड़े दलों के प्रकोप ने अंततः रात्रि 11-12 बजे उठने पर मजबूर कर दिया। रोशनी में देखा मेरे चारों ओर मच्छरों की पूरी बस्ती ने घेर रखा था। ताजा-ताजा रेकी प्रशिक्षण का प्रयोग पूरे समर्पण भाव से किया लगभग 7 बार एक साथ करने के बाद बत्ती बंद कर सो गया। मुझे पता नहीं चला कि किसी मच्छर ने मुझे काटा भी हो। सचमुच एक आश्चर्यजनक प्रयोग है।

-सुरेन्द्र नाथ अवस्थी, योग शिक्षक मेरठ मण्ड पतंजलि यो. पी. ट्रस्ट, मो०-9897736873

रेकी चैनल अखिलेश कुमार के रेकी के अनुभव

● मुझे सन् 1993 में रात में हड्डियों के प्रत्येक जोड़ में तेज दर्द हुआ जो दोपहर तक रहा। तभी से मैं अस्वस्थ हो गया। फिर मुझे रोगों में जलन होने लगी दवा खाते-खाते मुझे आंव, सिर दर्द, आंखों में दर्द, पैरों में दर्द हो गया 10-12 दस्त होना सामान्य बात थी। काफी इलाज कराने के बाद मुझे दवा भी नुकसान करने लगी फिर मुझे मथुरा रहने का मौका मिला वहां पर जाते ही मुझे दस्त में आराम आ गया। फिर सन् 2010 में मुझे डा. पूनमरानी जी से रेकी I-II & IIIA Degree सीखने का मौका मिला। मैं आज सामान्य जीवन जी रहा हूँ मैं रेकी मास्टर का धन्यवाद करता हूँ।

1. मेरी शादी की बाधा को रेकी ने दूर किया। मेरे मनमुताबिक शादी हो गयी।

2. मेरी माता जी के गले में दर्द रहता था। और खाना या पानी निगलने में भी दर्द होता था। मेरी रेकी IInd Degree के सिम्बल से जैसे ही रेकी दी वैसी ही तुरन्त माता जी ने मेरे हाथ हटा दिये माता जी डर गयी कि यह क्या था मुझे करन्ट सा लग गया इतने में ही उनका दर्द चला गया।

3. इन्हीं गर्मियों में मेरी माता जी को गुर्दे में तेज दर्द होने लगा। परीक्षण से पता चला कि दर्द पथरी का है दो महीने ऐलोपैथी का इलाज चला दर्द में कोई आराम नहीं आया। मेरे चार बार के रेकी सर्जरी से दर्द चला गया। रेकी को मैं धन्यवाद करता हूँ।

4. मेरे दोस्त के मोबाइल की आवाज कम हो गयी। मेरे टच रेकी देते ही मोबाइल की आवाज सही हो गयी।

5. मेरे पास एक महिला मरीज आयी जिन्हें आधे सिर में दर्द था जो एलोपैथी इलाज करवा चुकी थी। उनकी मैंने रेकी हीलिंग, चुम्बक और सिर में मसाज दी। तीन दिन में पूरी तरह ठीक हो गयी।

6. गर्मियों में मेरे छोटे भाई ज्ञानेश्वर को सायं के समय (8-9 बजे) तेज बुखार हो गया और पेट में दर्द उल्टी होने लगी। रात के समय गांव में चिकित्सा की कोई सुविधा नहीं थी। तब मैंने ज्ञानेश्वर का रेकी IInd Degree के सिम्बल से इलाज किया 20 मिनट के इलाज से कष्ट में आराम हो गया और वह सो गया। धन्यवाद रेकी के लिये।

7. एक परिचित मेरे पास आये नपुंसकता और शीघ्रपतन की समस्या थी उन्हें मैंने चुम्बक के दोनों ध्रुवों से चार्ज जल दोनों समय पीने के लिये दिया और पैरों में चुम्बक लगाये 10 दिन की चिकित्सा से पूरा लाभ हो गया। मैं देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र कानपुर को धन्यवाद करता हूँ जहां मैंने ज्ञान प्राप्त करके स्वयं को लाभ पहुंचाया।

-अखिलेश कुमार, ग्राम-खितौली, पो०-सरावन, जिला-जालौन मो०-9695254899

रेकी विद्या पर कुमुद शर्मा के अनुभव-

पहले जब हम पूजा या कोई पाठ करते थे तो वो एक औपचारिकता सी लगती थी। पर रेकी की साधना में जो Vibration Feel होती है, जो मन में एहसास होता है उससे ऐसा महसूस होता है जैसे कोई पवित्र शक्ति मेरे साथ है। इसके कारण साधना में बहुत मन लगता है। और जब भी खाली समय मिलता है तो मन करता है टी.वी. देखने की जगह रेकी की साधना कर लो।

2. पहले स्कूल से लौटने पर बहुत थकान सी महसूस होती थी। पर पिछले दो महीने से जब से रेकी की साधना शुरू की है, दिन के किसी भी समय थकान महसूस नहीं होती। पिछले दो महीने से शरीर में कहीं कोई दर्द नहीं हुआ। जबकि पहले अक्सर घुटने और गर्दन के पीदे दर्द होता था। पिछले दो महीने में एक भी दवाई लेने की जरूरत नही पड़ी। एक अलग सा अनुभव है। मुझे ऐसा लगता है जब से मैंने रेकी साधना शुरू की है तब से लगभग सभी का व्यवहार मेरे प्रति और सकारात्मक और अच्छा हो गया है।

3. रेकी साधना के उपरान्त मुझे अब संसार पहले से ज्यादा अच्छा और सकारात्मक लगने लगा है जबकि रेकी जानने के पूर्व इसका उल्टा लगता था।

रेकी साधना से मैं सकारात्मक हो गयी एवं मेरा मकान भी बन गया-गुरू माँ पूनमरानी एवं डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' के सानिध्य एवं आर्शीवाद से मैंने वर्ष 2012 में रेकी विद्या सीखा। शुरू में तो कठिनाई लगी और कई बार मन भी उचट गया। किंतु अपने पति श्री अरविंद राय (कानपुर यूनिवर्सिटी) और अपने विश्वास के कारण मैंने रोज रेकी विद्या का अभ्यास किया। इसके बाद मैंने अनुभव किया कि मेरी सोचने की क्षमता काफी बढ़ हो चुकी है। याद्दाश्त का स्तर भी बढ़ गया है। जीवन में नकारात्मकता की स्थिति आज भी आती है पर अब स्थायी नहीं रहती। रेकी की कृपा से एक वर्ष के भीतर अपना निजी निवास बना लिया है। **रेकी की कृपा से आज मैं 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' की एक सफल एन. जी. ओ. चला रही हूँ। रेकी का धन्यवाद!**

-श्रीमती ज्योति वर्मा W/o श्री अरविंद राय, 126-LIG, चैतन्य विहार, कानपुर

मेरी घोर नकारात्मकता दूर हो गयी-मैं सर्वप्रथम अपने योग के गुरू डा० ओमप्रकाश आनन्द जी एवं अपनी रेकी गुरू माँ पूनम जी का धन्यवाद देती हूँ। जिनकी कृपा से मुझे यह अद्भुत शक्ति मिली। रेकी सीखने से पहले मेरे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं था। मैं हमेशा नकारात्मक सोचती थी। मन बहुत जल्दी निराश हो जाता था। लेकिन जब से मैं आदरणीय डा० आनन्द जी एवं रेकी गुरू के सम्पर्क में आयी। मेरा तो जीवन ही बदल गया। मेरे पैरों में बहुत दिनों से दर्द रहता था। जो कि किसी भी दवा से नहीं ठीक हो पाया। फिर मैंने नेचुरोपैथी का भी कोर्स किया जिसके पढ़ने के साथ मैंने किसी दवा के बिना अपने दिनचर्या, अपने खान-पान से मुझे बहुत लाभ हुआ और जब से मैंने रेकी सीखी ऐसा लगता है कोई जादू सीख लिया अब मुझे किसी से सलाह लेने की जरूरत नहीं पड़ती अब मुझे अपने आप ही अनुभव हो जाता है मेरे लिये क्या सही और क्या गलत है। रेकी ने मेरे जीवन को बदल दिया मेरा अनुभव है कि बहनों को रेकी जरूर सीखना चाहिए। इससे वे अपनी परिवारिक समस्या हल कर सकते हैं। मैं रेकी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ।

-पिंकी, नर्स, काकादेव, कानपुर

- **रेकी ज्ञान के द्वारा घुटने के दर्द से छुटकारा-**मैं रेकी विद्या से परिचित तो थी। किन्तु इसकी गहराइयों व सूक्ष्मता से अपरिचित थी। इसके ज्ञान के लिये मैंने देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, कानपुर से सम्पर्क किया। वहां पर रेकी आचार्या माँ पूनमरानी से रेकी प्रथम व रेकी द्वितीय का ज्ञान अर्जित किया तथा उनकी लिखी पुस्तक **'रेकी विद्या के चमत्कार'** का अध्ययन करने के उपरान्त इसकी गहराइयां तथा सूक्ष्मता का पता चला जिसके कारण विभिन्न रोगों का उपचार कैसे करें एवं मन को शक्तिशाली कैसे बनायें का भी ज्ञान मिला। रेकी ज्ञान के बाद मेरे अन्दर असीम उत्साह व शक्ति का संचार अनुभव हुआ। मैंने अपनी विभिन्न बीमारियों जैसे-घुटनों का दर्द तथा रक्त की कमी के लिये क्रमशः घुटनों व मणिपूरक चक्र को रेकी ऊर्जा देनी आरम्भ की, जिससे मैं शीघ्र ही उपरोक्त कष्टों से मुक्त हो गयी। रेकी विद्या के सूक्ष्म ज्ञान से परिचित कराने के लिये रेकी गुरू माँ पूनम जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूँ।

-श्रद्धा कटियार, इन्द्रानगर, कानपुर

● **रेकी द्वारा आंख की लालिमा ठीक हो गयी**–मैं ध्यान में बैठा था। मेरी दो साल की नातिन खेलते-खेलते मेरी गोदी में आ गयी। उछलने लगी। उसको संभालने में मेरी अंगुली उसकी आंख में लग गयी जिससे उसकी आंख लाल हो गयी। और जोर-जोर से रोने लगी। फिर मैंने रेकी प्रार्थना करके अपना हाथ उसकी आंख पर रख दिया उस समय और कोई साधन नही था। लगभग एक-दो मिनट बाद ही चुप हो गयी। पुनः वैसे ही खेलने लगी। आंख की लालिमा भी खत्म हो गयी और आंख सामान्य हो गयी।

-श्री डी. पी. मिश्रा, 417-B, शिवकटरा, जी.टी. रोड, कानपुर, मो.-9450938562

● **रेकी विद्या से ईश्वरी ज्ञान प्राप्त हुआ**–आध्यात्म में रूचि होने के कारण मैंने एक गुरू की शरण में जाकर कुण्डलिनी शक्ति की साधना प्रारम्भ करी। इसी साधना के दौरान मुझे डिवाइन रेकी सेन्टर, गीतानगर, कानपुर में रेकी गुरू माँ पूनम रानी जी से रेकी साधना सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में कुडलिनी शक्ति की साधना ही रेकी साधना है। रेकी प्रथम व द्वितीय करने के बाद मुझे अपनी आध्यात्मिक यात्रा में बहुत बल मिला। रेकी प्रथम व द्वितीय के सिम्बल डालने के बाद मुझे ध्यान की गहराई में जाना आसान प्रतीत होने लगा। रेकी के बाद से मुझे आन्तरिक ज्ञान (ईश्वरीय ज्ञान) प्राप्त होने लगा। शरीर में ऐसी दिव्य ऊर्जा विकसित होने लगी जो दूसरों को भी लाभ पहुँचाने लगी। कई बार ऐसा हुआ कि मेरे कहे शब्द और किसी के लिये बोली गयी बातें सत्य होने लगीं। लोगों को मेरे ऊपर अटूट विश्वास हो गया। वर्तमान में मैं अपनी आध्यात्मिक यात्रा की ओर बढ़ने का प्रयास करता जा रहा हूँ और रेकी गुरू माँ पूनमरानी जी तथा डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' को मैं धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे इस विद्या के माध्यम से बहुत कुछ दे दिया।

-राहुल सुरेश चन्द्र, J-2-56, विजय नगर, कानपुर

● **मेरा अति जरूरी पेपर रेकी विद्या से मिल गया**–मैं नीना कौर रेकी आचार्या बहन पूनम रानी जी से मैंने रेकी सीख रखी थी। सिर्फ एक दिन की क्लास ली। मेरा कोई अति जरूरी पेपर नहीं मिल रहा था। मैंने उनसे पूछा क्या रेकी से हम अपनी इस समस्या को हल कर सकते हैं। उन्होंने बताया है यह ईश्वरीय शक्ति है। आप अपनी किसी भी चीज के लिये रेकी कर सकते हैं। मैंने उनकी क्लास में सिर्फ एक बार पांच मिनट की रेकी की और मुझे अंदर से आभास हुआ कि वह पेपर इस जगह ढूंढे वह दूसरे दिन मिल गया। इस पेपर के समय पर न मिलने से मेरा लाखों का नुकसान हो जाता। मैं उसके लिये आभारी हूँ। अपना Experience Share करना चाहती हूँ। सब लोग इस विद्या का लाभ उठायें जो समय आप लोग इधर-उधर नष्ट करते हैं आप यह विद्या सीखकर लाभ उठायें। मैं रेकी आचार्या पूनमरानी जी और डा० आनन्द जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूँ। उनकी व्यवस्था भी बहुत अच्छी है।

-नीना कौर, 112/225, स्वरूप नगर, कानपुर

रेकी का चमत्कार-मेरा बेटा आदित्य वी.आई.टी. में इंजीनियरिंग के फाइनल इयर में पढ़ता है। 6.3.2014 को अचानक ही उसका फोन आया कहने लगा कि मम्मी मेरी तबियत बिल्कुल ठीक नहीं है, अंदर से बुखार लग रहा है पर है नहीं, आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है, खड़े होते नहीं बन रहा, मम्मी मैं क्या करूँ। मैं अपनी दो मित्रों के साथ रेकी कोर्स IIIB करने डिवायन रेकी सेंटर गीतानगर, कानपुर आई हुयी थी।

सुनते ही मुझे घबराहट होने लगी। लगा कि मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है। हम तीनों सहेलियों ने निश्चय किया कि तुरंत उसे ग्रुप-रेकी दिया जाये। हम कमरे में आये। तुरंत हाथ-पैर धोकर ग्रुप-रेकी दी। आधे घंटे के बाद उससे पूछा तो उसे आराम हो गया था। उसने कहा मम्मी शायद आपने मुझे रेकी दी, अब अच्छा लग रहा है। मैं ठीक हूँ।

बेटा पढ़ने में तेज हो गया-मैं संचिता मित्रा मेरा बेटा पढ़ने में बहुत अच्छा था मगर कुछ दोस्तों के साथ वह भटक गया उसकी पढ़ाई छूट गयी। मगर मैं करूणा रेकी और IIIA कानपुर गुरू माँ पूनम जी के पास सीखने के लिये आये थे, मैं दीप के बारे में पूनम दीदी से बात की। दीदी जो-जो बोलीं मैं करती गयी आज मेरा बेटा पढ़ाई में तेज हो गया इस साल पास भी हो जायेगा। वह भी अच्छे नम्बरों से।

-उपर्युक्त दोनों अनुभव-संचिता मित्रा, हिंगना टी प्वाइंट, नागपुर

रेकी साधना से वजन बढ़ा और पुत्र की प्राप्ति हुयी-मैं अतुल कुमार पाण्डेय इलाहाबाद का रहने वाला हूँ। मेरी आयु 26 वर्ष की है, प्राकृतिक चिकित्सा की डिग्री लेने के बाद मुझे देव अं० योग केन्द्र, कानपुर में आदरणीय गुरू जी डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' के मार्ग दर्शन में मुझे प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रयोगात्मक अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्राप्त कर रहा हूँ। इसी दौरान मुझे ईश्वर की प्रेरणा तथा मां रेकी आचार्या पूनम रानी जी से मुझे रेकी सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं रेकी प्रथम एवं द्वितीय डिग्री सीखने के बाद इसकी नियमित साधना के बाद इसके जो-जो चमत्कार मैंने स्वयं तथा अपने परिवार पर देखा जो कि मेरे लिये आश्चर्य से कम नहीं है। उनमें से निम्नलिखित हैं-

मैंने सर्वप्रथम अपने ऊपर रेकी लेकर अपना वजन दो किलो मात्र एक सप्ताह में बढ़ाया तथा इसका दूसरा आश्चर्य चकित करने वाला मेरा अनुभव-मैंने अपनी पत्नी पर देखा मेरी पत्नी गर्भवती थी। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे पुत्र चाहिए। लेकिन मुझे तथा मेरे परिवार वालों को सारे लक्षण पुत्री होने के लग रहे हैं। पुत्री एक पहले हो गयी थी। मैं क्या करूँ। उनकी यह बात सुनकर मैंने कहा तुम चिंता मत करो। मैं रेकी करूँगा और तुम्हें घर पर या चिकित्सा में ही नार्मल डिलिवरी के द्वारा स्वस्थ सुंदर और पुत्र की ही प्राप्ति होगी। **केवल तुम यही कहो कि जो कहोगे वही होगा और इस प्रकार मैं रेकी देना प्रारम्भ किया और दो-तीन माह में ही डिलीवरी हुई और स्वस्थ सुंदर पुत्र की प्राप्ति हुई। मैं रेकी शक्ति को तथा गुरू माँ श्रीमती पूनमरानी जी को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।**

-अतुल कुमार पाण्डेय, योग शिक्षक देव अं० योग केन्द्र, कानपुर

चलती ट्रेन में डाक्टर फेल, रेकी पास-दि० 15.12.2014 को मैं अहमदाबाद से ट्रेन द्वारा दिल्ली आ रहा था। ट्रेन को अभी अहमदाबद से चले करीब दो ढाई घंटे हुये होंगे। ट्रेन में एक सूचना प्रसारित हुई कि A-5 वोगी में एक बेटी की तबियत खराब हो गयी है। यदि कोई चिकित्सक इस आवाज को सुन रहे हों तो कृपया सहायता करने की कृपा करें। मैंने इस आवाज को सुनकर उठने का मन बनाया तो मेरी श्रीमती जी ने कहा चिकित्सक बुलाये गये आपको नहीं। और फिर 4-5 बोगी अपनी बोगी से 12 बोगी आगे है क्योंकि मैं मेरी बोगी B-10 थी कहां पहुँच पाओगे। लेकिन मैंने निश्चय किया और पत्नी की आज्ञा लेकर पहुँच गया मैंने देखा कि एक बेटी जिसकी उम्र करीब 18-20 वर्ष होगी बड़े ही कष्ट प्रद स्थिति में थी उसे करीब 10-12 उल्टी और दस्त हो चुके थे। अहमदाबाद में दवा ली थी परन्तु तीन घंटे होने के बाद भी कोई आराम नहीं मिल पा रहा था तथा पेट में मरोड़ के साथ दर्द भी था। उसे दो या तीन डाक्टर, जो कि ट्रेन में सहयात्री थे परन्तु दवा के आभाव में वे लाचार थे। उनके जाने के बाद मैंने बच्ची के अभिभावक से कहा यदि आप सहमत हों तो मैं टच रेकी (छूकरके) से ठीक करने का प्रयास करूँ। कोई चारा न होने के कारण वह राजी हो गये मैं वहीं फर्श पर बैठकर बिटिया को रेकी दी। थोड़ी देर में वह बिटिया सो गयी क्योंकि उसे आराम मिल रहा था। करीब 40-45 मिनट रेकी देने के बाद मैंने उनके अभिभावक से कहा सो गयी है। इसे जगाना नहीं। साथ ही मैंने पानी की एक बोतल में रेकी ऊर्जा प्रवाहित करा दी और कहा कि आप जब तक बिटिया स्वयं न जगे इसे जगाना नहीं। जागने पर यह पानी पिला देना। मैं अपनी बोगी पर वापस आ गया सुबह 4-5 बजे फोन आया कि बिटिया अभी सो रही है। दिल्ली स्टेशन आने पर अभिभावकों ने फिर फोन किया। मैं शोरगुल में सुन न सका। घर पहुँचकर मैंने उनसे बात की तो उन्होंने बताया बिटिया एकदम ठीक और स्वस्थ महसूस कर रही है मैंने धन्यवाद हेतु फोन किया था तथा आपसे प्लेटफार्म में मुलाकात भी न हो सकी मैं आपसे मिलकर धन्यवाद देने आपके घर आना चाहती हूँ। बिटिया का घर द्वरिका में था और मेरा कौशाम्बी में। दूर होने के कारण मैंने कहा कि आपका धन्यवाद स्वीकार हो गया।

-रेकी साधक विमलेश अवस्थी, 223, **लखनपुर, कानपुर**

रेकी चैनल श्री जीतेन्द्र कुमार गुप्ता के रेकी साधना पर कुछ अनुभव

(ग्राम-परसौनी खुर्द, पोस्ट-बिहार बुजुर्ग, जिला-कुशीनगर (उ.प्र.)

स्मरण शक्ति तेज हो गयी-मुझे पहले भूख खुलकर नहीं लगती थी। स्मरण शक्ति तेज नही थी। आंखों में पढ़ने की वजह से दर्द रहता था। और भी बहुत शारीरिक और मानसिक बिमारियों से परेशान रहता था। लेकिन जब मैं रेकी गुरू माँ पूनम जी के मार्गदर्शन में सीखकर गया और उसका अभ्यास करने लगा तो हमें भूख खूब लगने लगी, आंखों का दर्द गायब हो गया। स्मरण शक्ति तो बढ़ गयी। मैं जब भी रेकी का अभ्यास करता हूँ। मन पूर्णतः शान्त हो जाता है। शारीरिक रूप से भी हष्ट-पुष्ट हो गया हूँ।

रेकी से बुखार, खांसी व पेट का दर्द ठीक हो गया-एक बार मेरे भांजे को पेट में दर्द अचानक होने लगा, मैं उसको रेकी दिया। तुरन्त सही हो गया। ऐसे ही एक बार मेरी माता जी को अचानक बुखार और खांसी से परेशान हो गयी तो मैं बिना बताये उन्हें डिस्टेंस रेकी दिया और वह ठीक हो गयी। मैं तो रेकी दिव्य शक्ति को मन ही मन बहुत धन्यवाद करता हूँ। रेकी गुरू को भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। जिनके कृपा से ये विद्या मुझे प्राप्त हुई।

रेकी से दांतों का दर्द चला गया-पहले मैं दांतों के दर्द से परेशान रहता था। जब से रेकी सीखी और रेकी अपने पर लेता हूँ मेरे दातों का दर्द पता नही कहां गायब हो गया। लगभग दो साल से दांतों में दर्द नही हआ। मैं रेकी शक्ति और रेकी गुरू माँ पूनम जी को धन्यवाद देता हूँ। और अपने योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के गुरू डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' को भी धन्यवाद देता हूँ। जिनकी कृपा से **'साक्षी ध्यान'** हाथ लगा।

रेकी से मन की सर्विस मिल गयी-मैं पहले सोचता था कि माता-पिता के पास रहकर उनकी सेवा करूँ और मेरी आमदनी भी अच्छी खासी हो जाये। मैं रेकी का अभ्यास करता रहा कि एक बार एक परिचित स्कूल में गया तो वह स्वयं बोले अगर आप खाली हों तो, मेरे यहां पढ़ाने आ जायें। मैं वहां पढ़ाने जाने लगा तो बच्चे और मैनेजर साहब दोनों मुझसे संतुष्ट रहने लगे। मुझे भी कुछ समय घर पर रूकना था, जो रूकने के साथ-साथ आमदनी भी मेरी हो रही है। अब मैं कुछ भी करता हूँ तो पहले रेकी देकर ही जाता हूँ और वह काम सफल हो जाता है।

रेकी से मोटर साइकिल मिल गयी-मुझे एक मोटरसाइकिल चाहिये थी। ओर मेरे पास पैसे नही थे। मैं सोचा चलो, रेकी का उपयोग करता हूँ और यही संकल्प करके रेकी दिया और आटोसजेशन (शब्द सम्मोहन) में कहा कि मुझे दस दिन के अन्दर एक मोटरसाइकिल चाहिए। अचानक 2-3 दिन बाद मेरे भइया मुझे बोले, छोटू तुम्हे मोटरसाइकिल चाहिए तो मेरी तू ले ले। मैं कल नयी खरीद लूंगा। इस प्रकार ३ दिन के रेकी ने मुझे मोटरसाइकिल दिला दिया। धन्यवाद रेकी दिव्यशक्ति को, धन्यवाद रेकी गुरू माँ को, जो ऐसी विद्या का प्रचार-प्रसार करते हैं। यह विद्या तो सबको सीखनी चाहिए।

कु. मयूरी बेरीवाल, C.A. (Stu...) के रेकी पर कुछ अनुभव

जाम ताला खुला-हमारी स्कूटी की डिक्की में पैसे और मोबायल रह गया था। उसका ताला नहीं खुल रहा था। सब लोग बड़े परेशान थे कि अब ताला तुड़वाना पड़ेगा। चूँकि मैंने रेकी विद्या सीख रखी थी तो मैंने रेकी दी मात्र दस मिनट रेकी के बाद ताला खुल गया। सभी लोग हैरान थे। मैं रेकी विद्या को धन्यवाद देता हूँ।

माइग्रेन का दर्द 10 **दिन में चला गया**-मुझे बचपन से सिर में भयंकर दर्द रहता था। एक दिन जब मैं देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर में भर्ती था तभी मुझे बहुत

दर्द हुआ और लगा मानो मेरा सिर फट जायेगा। मुझे मेरी रेकी गुरूमाता रेकी आचार्या पूनम जी ने मात्र 10 दिन रेकी दी। जिससे मेरा दर्द चला गया। उसके बाद आज तक मुझे सिर में माइग्रेन का दर्द नहीं उठा।

घर का माहौल शांत एवं खुशनुमा हुआ–हमारे घर में बहुत कलेश होता था और घर में रहने का मन नहीं करता था। **इजिप्सन लैम्प जलाने एवं घर को रेकी द्वारा क्लीन एवं एनर्जी चार्ज करने के बाद से हमारे घर का माहौल बहुत शांत हो गया है। अब सब प्रेम से रहते हैं और बिना लड़ाई के सभी काम हो जाते हैं।**

कंधे का भयंकर दर्द बिना दवाई के ठीक हुआ–मेरी मम्मी को कंधे में चोट लग गयी थी। दो दिन बाद अचानक उन्हें उसी कंधे में बहुत तेज दर्द उठा मानों कंधा उतर रहा हो। उन्हें दर्द में तड़पता देख मैंने फौरन रेकी देनी शुरू करी। मात्र 2 मिनट की रेकी देने के बाद उनका दर्द जड़ से समाप्त हो गया और आज तक दुबारा नही हुआ।

स्पाइन की सूजन चली गयी–मेरी स्पाइन में सूजन हो गयी थी। और चार जगह गुरिया खिसक गई थी। जिसकी वजह से मैं चल फिर नहीं पाती थी और बहुत दर्द होता था। मात्र 3 महीने के चिकित्सा (40 दिन योग केन्द्र में भर्ती होने के बाद) और पूरे समय स्पाइन मैगनेटिक बेल्ट बांधने से अब मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मैं डा. आनन्द जी का पूरे दिल से धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने मेरे पर इतना ध्यान दिया। और गुरूमाता पूनम जी का जिन्होंने लगभग नियमित रेकी सर्जरी दी। और उन्हीं की प्रेरणा से मैंने उनसे अब टच रेकी, डिस्टेंस रेकी, करूणा रेकी, रेकी सर्जरी भी सीख ली। धन्यवाद प्राकृतिक चिकित्सा को जिसके कारण मेरा पेट ठीक हो गया। धन्यवाद मैगनेट थिरेपी को जिसके कारण मुझे पेन-किलर नही खाना। धन्यवाद एक्यूप्रेशर (रि.) को जिसके कारण नाड़ियों में लचीलापन आया। धन्यवाद साक्षी ध्यान को जिसके कारण मन को शकारात्मक शक्ति मिली। धन्यवाद पुस्तक-**'अवचेतन मन की शक्ति', 'सकारात्मक सोच का चमत्कार' एवं 'साक्षी ध्यान' तथा 'योग द्वारा कायाकल्प'** लेखक-डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी'। धन्यवाद मामा श्री अशोक अग्रवाल एवं श्री अजय अग्रवाल जी को जिनकी प्रेरणा से देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर का परिचय मिला एवं भरपूर आर्थिक सहयोग मिला।

रेकी विद्या के द्वारा अद्भुत लाभ के ऐसे हजारों अनुभव रेकी चैनलों के हमारे रिकार्ड में हैं। उपर्युक्त अनुभव उनमें से कुछ हैं। आप भी रेकी विद्या के अनुभव हमें भेजकर दु:खी लोगों को लाभ पहुँचाने में सहयोग करें

-रेकी आचार्या माँ पूनमरानी

रेकी आचार्या
पूनमरानी, ग्रैंड रेकी मास्टर

रेकी जिज्ञासु जानें

- यदि आप स्पर्श चिकित्सा (टच रेकी) सीखना चाहते हैं, तो रेकी I डिग्री सीखिये।
- यदि आप दूरस्थ चिकित्सा (डिस्टेंस रेकी) सीखना चाहते हैं, तो रेकी II डिग्री सीखिये।
- यदि आप 12 सिम्बल वाली एडवांस रेकी सीखना चाहते हैं, तो करूणा-रेकी सीखें।
- यदि आप रेकी द्वारा सर्जरी चिकित्सा सीखना चाहते हैं, तो रेकी IIIA सीखिये।
- यदि आप रेकी द्वारा शक्तिपात (एट्यूनमेन्ट) करना या सीखना चाहते हैं? तो रेकी IIIB (मास्टर रेकी) सीखिये।
- यदि आप रेकी शक्तिपात का एडवांस कोर्स (सामूहिक शक्तिपात, मंत्र मेकिंग, सम्मोहन, चिकित्सा, लक्ष्मी सिद्ध मंत्र आदि) सीखना चाहते हैं? तो ग्रैंड रेकी मास्टर सीखिये।
- यदि आप क्रिस्टल थिरेपी, डाउजिंग विद्या, औरा स्कैनिंग आदि भी सीखना चाहते हैं। तो अवश्य-अवश्य सम्पर्क करें-**डिवायन रेकी सेन्टर गीतानगर, कानपुर**

सूचना

- उपर्युक्त सभी चिकित्साओं एवं विद्याओं की ट्रेनिंग सूचना के लिये प्रतिमाह घर बैठे जानकारी के लिये SMS या पत्र द्वारा अपना पता हमें भेजें।

विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें पुस्तक 'रेकी के चमत्कार' With 'साक्षी ध्यान', मूल्य Rs. 100/-

रेकी विद्या का प्रशिक्षण विवरण

☞ रेकी-प्रथम

- रेकी का अर्थ एवं इतिहास
- रेकी के 5 अनिवार्य नियम एवं उसके 5 चरण
- प्रभामण्डल क्या एवं उसकी सफाई क्यों?
- रेकी के चिकित्सा सिद्धान्त — 1½ दिन
- रेकी के पूर्व प्रार्थना आदि आवश्यक क्यों ?
- रेकी I में सहस्त्रचक्र, आज्ञाचक्र, विशुद्ध चक्र एवं हृदय चक्र का एट्यूनमेन्ट (सुसंगता/शक्तिपात)
- रेकी द्वारा स्वयं या दूसरों के उपचार में हथेलियों की स्थिति
- सातो चक्रों के जागरण एवं संतुलन की जानकारी
- रेकी देने की अन्य विधियाँ एवं सावधानियाँ
- चक्र प्राणायाम, सुदर्शन चक्र एवं केन्द्रीयकरण क्रिया की विधि
- साक्षीदर्शन का अभ्यास
- रेकी द्वारा स्वयं को निरोगी एवं शक्तिवान बनाने की विधि

☞ रेकी-द्वितीय

- टच-रेकी एवं डिस्टेन्स-रेकी की विधि
- रेकी सिम्बल द्वारा चक्रों का एट्यूनमेन्ट
- शक्ति सिम्बल, संतुलन सिम्बल एवं सेतु सिम्बल का अभ्यास
- घर, आफिस आदि का वातावरण स्वच्छ करने की विधि
- रेकी बाक्स विधि से कार्य सिद्धि की साधना विधि
- चक्र खोलकर रेकी देना — 1½ दिन
- रेकी सिम्बल (प्रतीक) ध्यान
- उर्ध्वरेता (काम वासना पर संयम) की अनोखी विधि
- रेचक ध्यान द्वारा निगेटिव थॉट निकालने की विधि
- विभिन्न रोगों में रेकी देने की विधि
- स्वयं के चक्रों को शक्तिशाली बनाने की विधि
- रेकी द्वारा समूह उपचार विधि
- रेकी से नवजात शिशुओं, पशुओं एवं वृक्षों आदि की उपचार विधि
- रेकी से जल, दूध, भोजन को पाचक एवं पोषक बनाने की विधि
- क्रिस्टल, डाउजर, औरा मैपिंग के प्राथमिक व्यावहारिक प्रयोग

☞ रेकी-करुणा

- करुणा रेकी का अर्थ, कार्य एवं इतिहास
- करुणा रेकी का शारीरिक, मानसिक रोगों व अन्य समस्याओं के हल करने में विशेष शक्ति क्यों ?
- करुणा रेकी के प्रतीक (सिम्बल) — समय 1 दिन
  - 'जोनर', 'हालू', 'हर्थ', 'रामा', 'होसाना', 'नोसा', 'क्रिया', 'ई-आह-वाह', 'शान्ति' आदि सिम्बलों के कार्य एट्यूनमेन्ट एवं अतिरिक्त तीन अन्य सिम्बल।

☞ रेकी IIIA का कोर्स

- रेकी IIIA का एट्यूनमेन्ट
- सायकिक हीलिंग • सायकिक सर्जरी
- सायकिक अटैक हीलिंग — समय 2 दिन
- मनोकामना सिद्ध ध्यान
- क्रिस्टल हीलिंग
- पाँचों स्तर का ओरा क्लीन करना
- अतिरिक्त विशेष 6 सिम्बल का अभ्यास

☞ रेकी मास्टर IIIB का कोर्स

- टेकनिक आफ एट्यून्मेन्ट रेकी-I&II, रेकी-करुणा, रेकी-IIIA — समय 2 दिन
- विशेष धन लक्ष्मी साधना
- प्रैक्टिस आफ 50 एडवांस सिम्बल्स

☞☞ ग्रैंड रेकी मास्टर

- टेकनिक आफ रेकी मास्टर (रेकी III-B) एट्यूनमेन्ट — समय 2 दिन
- टेकनिक आफ विद्या-एट्यूनमेन्ट, सामूहिक एट्यूनमेन्ट, मधुरम् एट्यूनमेन्ट, सामूहिक ग्रिड थिरेपी, मंत्र मेकिंग, टू रिमूव मेंटल प्राब्लम्स, हिप्नोटिज्म एवं एनर्जी मल्टीप्लीकेशन

☞ रेकी I & II की ट्रेनिंग एक साथ होती है।

सरवाइकल स्पांडलायसिस पिलो (गर्दन कष्ट निवारक तकिया)

गलत (✕)

← ऊंची तकिया लगाकर देर तक पढ़ते रहना या सोना (✕)

← ऊंची तकिया लगाकर बायें या दांये करवट सोना (✕)

← तकिया हटाकर बांयां या दांयां हाथ मोड़ करके सिर के नीचे लगाकर सोना (✕)

← बिना तकिया एवं बिना हाथ मोड़कर बायें या दायें करवट सोना (✕)

← सोते-सोते तकिया से दूर हट जाना व तिरछा-मिरछा सोना (✕)

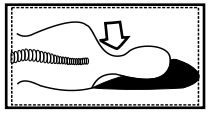
← गर्दन की गुरियां (सरवायकल वरटेब्राज) तिरछी अवस्था में हो जाने से वहां की नाड़ियां दबने लगती हैं फलस्वरूप गर्दन में कष्ट (सरवायकल स्पांडलायसिस) रहने लगता है।

सही (✓)

सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो/ मैगनेटिक सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो (गर्दन रोग नाशक चुम्बकीय तकिया) (✓) →

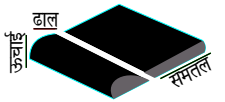

मैगनेटिक सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो लगाकर सीधा सोना और गर्दन ऊँचाई पर रखना (✓) →

मैगनेटिक सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो लगाकर सीधा सोना और गर्दन ऊँचाई पर रखना (✓) →

मैगनेटिक सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो लगाकर दांयीं करवट सोना और कान ऊँचाई पर (✓) →

मैगनेटिक सरवायकल स्पांडलायसिस पिलो लगाकर सीधा सोना और गर्दन ऊँचाई पर रखना व सिर समतल में (✓) →

परिणाम

रीढ़ सीधी अवस्था में (✓) →

इस तकिया का मूल्य मात्र 400/-
कोरियर से प्राप्त करने के लिये 100/- अतिरिक्त भेजें।

☞ विचित्र किन्तु सत्य ☜

कलर ब्लाइंड या कलर विजन दोष

जिसका अभी तक नहीं था

कोई इलाज किंतु

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ

पंचांग योग ऋषि

डा. ओमप्रकाश 'आनन्द जी' एवं रेकी आचार्या पूनमरानी

के

संयुक्त प्रयास से

उन्हें इस रोग पर मिल गयी सफलता।

☞ विश्वास के लिये मंगाइये नि:शुल्क ☜

पुस्तक 'कलर ब्लाइंड व कलर विजन और उसकी सफल चिकित्सा'

हम आभारी हैं, निम्नलिखित आई सर्जनों का जिन्होंने इस अनुसंधान में हमारी चिकित्सा के पहले और बाद की अपनी मेडिकल रिपोर्ट देकर हमें इस रोग के ठीक होने की प्रामाणिकता दी

डा. शरद बाजपेयी
आई सर्जन

डा. दिलप्रीत सिंह
आई सर्जन

डा. योगेन्द्र सिंह यादव
आई सर्जन

डा. एस. के. सचान
आई सर्जन

डा. वाई. के. महेन्द्रा
आई सर्जन

Formerly Head, Deptt. of Ophthalmology, G.S.V.M. Medical College, Kanpur
Eye Surgeon-L.L.R. & Associated Hospitals, Kanpur

कलर ब्लाइंडनेस एवं कलर विजन दोष से मुक्ति पा चुके कुछ रोगियों का विवरण

1 प्रखर श्रीवास्तव,
2 आशीष यादव,
3 राजू C/o डा. अरूण शुक्ला
4 आनन्द प्रकाश पा०
5 नवनीत सिंह,
6 राहुल यादव,
7 ओमप्रकाश भूर्तिया
8 पवन कुमार
9 वैभव श्रीवास्तव
10 श्याम कुमार,
11 मोहित कुमार,
12 सत्यार्थ कुमार
13 जनाब इमरान खां,
14 राघवेन्द्र सिंह,
15 अंकित,
16 पवन दुबे,
17 अखिलेश मिश्रा,
18 अरविन्द्र कुमार,
19 मोहित कुमार,
20 विशाल यादव,
21 प्रियंक प्रसून,
22 शिवम,
23 विश्वजीत सिंह,
24 तन्मय त्यागी,
25 विकास कुमावत,
26 अरविन्द,
27 पवन कुमार,
28 सुनील कुमार,
29 गौरव कुमार,
30 शिवओम त्यागी,
31 संदीप कुमार,
32 अजय मलिक,
33 राजेश सिंह,
34 सुमित कुमार,
35 वेद प्रकाश जी,
36 अनुज कुमार गुप्ता,
37 खगेश रंजन,
38 उमेश तोमर,
39 योगराज सिंह,
40 अनुराग दुबे,
41 कृष यादव,
42 विकास पाण्डेय,
43 अतुल कुमार,
44 राहुल मदाना,
45 शिव बली प्रजापति,
46 सत्यम यादव,
47 अभिषेक तिवारी,
48 मदन मोहन,
49 अनुज कुमार गुप्ता,
50 अभय सिंह चौहान,
51 सरनाम सिंह यादव,

☞ नोट-सभी रोगियों का नाम, पता व मोबायल नं० केन्द्र में सुरक्षित है।

C/o देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर

Mob.: 9336115528, 9336235850, 9838444486, Email:anandyoga133@gmail.com
Web.:www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

अद्भुत

फोल्डिंग एवं मोबायल स्टीम बाथ चैम्बर

(भाप स्नान का सरल चैम्बर)

वजन (वेट) मात्र 2 किग्रा

इस फोल्डिंग एवं मोबायल स्टीम चैम्बर से स्वयं घर में ही भाप स्नान (स्टीम बाथ) ले सकते हैं। और हेल्थ क्लब में आने जाने का अपना समय बचा सकते हैं।

भाप स्नान (स्टीम बाथ) क्यों लें?

- A. C. में अधिक रहने वालों को नित्य पसीना निकालना (स्वेटिंग) आवश्यक है।
- श्रम विहीन जीवन जीने वालों को नित्य पसीना निकालना (स्वेटिंग) आवश्यक है।
- रक्त के विकारों को निकालने के लिए नित्य पसीना निकालना (स्वेटिंग) आवश्यक है।
- भविष्य में गुर्दे खराब न हों उन्हें नित्य पसीना निकालना (स्वेटिंग) आवश्यक है।
- कोलस्ट्राल न बढ़े, हृदय रोग न हो, उन्हें पसीना निकालना (स्वेटिंग) आवश्यक है।
- जोड़ों के दर्दों से छुटकारा पाने के लिए नित्य पसीना निकालना आवश्यक है।

जो लोग नित्य व्यायाम करके खूब पसीना नही बहा पाते उन्हें भाप स्नान (स्टीम बाथ) से नित्य पसीना निकालना आवश्यक है।

- प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार मोटे लोग यदि स्टीम बाथ लें, तो 100 ग्राम से 250 ग्राम तक स्थायी (परमानेन्ट) वजन नित्य घटता है।

स्टीम चेम्बर - फोल्डिंग स्थिति में

स्टीम चेम्बर - खुलने की स्थिति में

स्टीम चेम्बर - कुर्सी रखने की स्थिति में

स्टीम चेम्बर में स्टीम बाथ (भाप स्नान) लेते हुये

इस अद्भुत स्टीम चैम्बर के लिये सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर

Mob.: 9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975

अब यह सब सम्भव है घर बैठे इस फोल्डिंग एवं मोबायल स्टीम बाथ चैम्बर से

विधि-

- एक मिनट में छाते की तरह घर में ही बाथरूम के पास इस मोबायल एवं फोल्डिंग स्टीम चैम्बर को खोल लीजिये और उसके अन्दर चित्रानुसार स्टूल या कुर्सी रख लीजिये
- अब जिसे स्टीम बाथ लेना हो वह स्टीम बाथ के पहले सूप या गरम पानी+शहद+नींबू का शरबत पी लें।
- अब अंडर वियर या अंडर गारमेन्ट छोड़कर, सारे कपड़े उतार कर चित्रानुसार, स्टीम चैम्बर में बैठ जायें। चित्र - सबसे नीचे वाला
- सिर पर ठंडे पानी की पट्टी रखना न भूलें।
- जाड़ों में 15 से 30 मिनट में-गर्मियों में 10 से 20 मिनट में खूब पसीना निकल आता है।
- स्टीम चैम्बर से बाहर निकलकर साधारण जल से स्नान कर के पसीना पोछ लीजिये।
- बाहर से ट्यूब के द्वारा स्टीम चैम्बर से भाप जाने का इंतजाम करें इसके लिये स्टीम चेम्बर के बगल में गैस चूल्हा रख लें उसमें छोटा कुकर जिसमें लगभग एक लीटर पानी डाल लें कुकर की सीटी निकाल कर रबर की ट्यूब लगा दें। और ट्यूब का दूसरा सिरा स्टीम चैम्बर में अपनी सुविधानुसार छेद करके। डाल दें।

- स्टीम चैम्बर का केवल मूल्य अब With ट्यूब रु. 2000/-
- स्टीम चैम्बर With Tube & Frame मूल्य रु. 3000/-
- स्टीम चैम्बर का स्टीमर यह व्यवस्था कुकर व गैस चूल्हा से स्वयं भी कर सकते हैं। घर बैठे कोरियर से प्राप्त करने के लिये 500/- अतिरिक्त भेजें।

वर्तमान मूल्य 31/1/2016

- आर्डर के साथ एडवांस रुपये एम. ओ., ड्राफ्ट, मल्टीसिटी चेक 'स्वस्थ सहित्य प्रकाशन' के नाम से भेजें अथवा हमारे ICICI बैंक A/c No. 032601508492 (IFC Code-ICIC0000832) या SBI A/c No. 20109900181 शारदा नगर (IFS Code-SBIN0050517) कानपुर में ओमप्रकाश आनन्द के नाम से नकद जमा करायें।

विचित्र किन्तु सत्य
बिना दवा-बिना इंजेक्शन-बिना आप्रेशन
निम्नलिखित दर्द एवं सूजन के रोगों में रामबाण चिकित्सा

चुम्बक चिकित्सा (मैगनेट-थिरेपी)

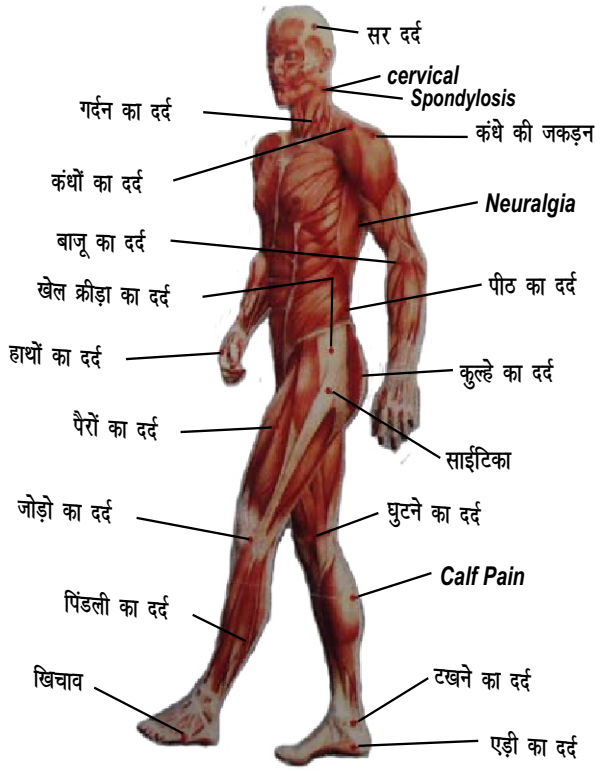

चुम्बक चिकित्सा कि विद्या सीखने के लिये 'चमत्कारी चुम्बक चिकित्सा' पुस्तक अवश्य-अवश्य पढ़ें। चुम्बक चिकित्सा के अन्य सैकड़ों रोगियों के लाभ प्राप्त अनुभव के लिये इसका दूसरा भाग पढ़ें।

परसेवा ज्ञान के लिये दस दिवसीय प्रशिक्षण में अवश्य भाग लें

चुम्बक चिकित्सा के हजारों अनुभवों में कुछ

1. **सायटिका दर्द से छुटकारा-** मैं चार-पांच साल से बायें पैर के सायटिका दर्द से परेशान था। सभी प्रकार के इलाज से तंग आकर डा० ओमप्रकाश 'आनन्द' जी से मिला। उनके द्वारा बताई गयी चुम्बक चिकित्सा से मैं 8-10 दिन में ही सायटिका के दर्द से पूर्णतया ठीक हो गया।

   सुरेश कुमार, 12-3-A लाल बंगला, कानपुर

2. **गठिया वात रोग से मुक्ति-** करीब 10 साल से मैं गठिया-वात रोग से पीड़ित था। दर्द के कारण उठना-बैठना मुश्किल हो जाता था। सब प्रकार का इलाज करके हार चुका था। श्रद्धेय डा० ओमप्रकाश 'आनन्द' जी से मिला। उनके यहां दस दिन रहकर चुम्बक चिकित्सा करायी, तत्पश्चात घर में ही उस विधि से तीन महीने में बिल्कुल ठीक हो गया।

   कृष्ण कुमार सिंह, ग्राम व पो०- वानगॉव, शाहजहॉपुर

3. **गॉठ एवं सूजन ठीक हो गयी-** मेरे दोनों गाल की तरफ अर्द्धचन्द्राकार अण्डे की तरह गांठ एवं सूजन थी। सब प्रकार की चिकित्सा से हारकर पिता श्री के सुझाव से डा० ओमप्रकाश 'आनन्द' जी से मिला। उन्होंने लगभग 15 दिन नियमित रुप से अपने यहां बुलाया और चुम्बक चिकित्सा दी। फिर मैं वैसे ही घर में करता रहा। मेरी पत्थर की तरह गांठ न जाने कहाँ गायब हो गयी। मेरे फेमिली डाक्टर भी जिन्होंने आपरेशन बताया था उन्हें भी आश्चर्य हुआ।

   ज्ञानेन्द्र कुमार जायसवाल, जायसवाल कार्ड, चौक, कानपुर

4. **स्लिप डिस्क से छुटकारा-** तीन साल पहले मुझे स्लिप डिस्क का कष्ट हो गया था। अनेक डाक्टरों को दिखाया, M.R.I. करवाया, ट्रैक्सन लिया, अन्त में 'आनबेड' हो गया तो आपरेशन का निर्णय लिया गया, वह भी जर्मनी में। कष्ट इतना था कि बयान नही कर सकता। भजन गायक प्रिय गोविन्द भार्गव के सुझाव से डा० ओमप्रकाश जी 'आनन्द' को दिखाया। उनकी चुम्बक चिकित्सा प्लस से तीन माह में बिल्कुल ठीक हो गया।

   चन्द्रेश भार्गव, 7/141A, स्वरुप नगर, कानपुर

5. **भयंकर सरवायकल स्पांडलाइटिस से छुटकारा-** मेरी उम्र 28 वर्ष है। सन् 2007 में मैं बैंगलूर में एक साफ्टवेयर कम्पनी में काम करता था, जहां मुझे स्पांडलाइटिस इतना तीव्र हो गया था कि कइ बार मैं गिर भी पड़ा था। एक माह एलोपैथिक इलाज के बाद भी मैं स्वस्थ नहीं हुआ। फिर मैं डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' के सम्पर्क में आया। उन्होंने मुझे अपने यहां इनडोर में 10 दिन भर्ती किया। मैं धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा और शारीरिक कमजोरी जाती रही। सर ने मुझे रेकी, नेचरोपैथी एवं चुम्बक चिकित्सा द्वारा स्वस्थ किया। अब मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।

   नितिन गौतम, स्वरूप नगर, कानपुर मो०-9450686255

6. **लुंज पैर 15 दिन में ठीक-** मेरी दाहिनी टांग में एकाएक भीषण दर्द प्रारम्भ हुआ। और पैर की शक्ति पूरी तरह खत्म हो जाने के कारण खड़ा हो पाना भी असम्भव हो गया। सीधे मैं डा० ओमप्रकाश जी 'आनन्द' से मिला। उन्होंने मुझे चुम्बक चिकित्सा की विधि समझाई और दिन में पांच-छः बार चुम्बक रखवाया। तीन दिन में चलने लगा और 15 दिन में बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

   वाई. के. रहेजा, रिटायर मुख्य अभियन्ता, कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर

छात्र-छात्रायें एवं बड़ी उम्र के लोग

कन्सन्ट्रेशन, मेमोरी पावर व स्प्रीच्युअल पावर कैसे बढ़ायें ? टेंसन, डिप्रेसन, इरीटेशन,निगेटिव थॉट, फियर से कैसे मुक्ति पायें? मात्र 5 दिन की ट्रेनिंग से

साक्षी ध्यान विशेषज्ञ
डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी'

Join

शक्तिपात विशेषज्ञ
रेकी आचार्या पूनम रानी

साक्षी ध्यान With शक्तिपात

समय < प्रात: 6:00 से 7:30a.m. (मोतीझील में)
सायं 6:00 से 7:30p.m. (गीतानगर में)

स्थान सीमित प्रथम आवें-प्रथम पावें, पूर्व पंजीकरण अनिवार्य

प्रवेश अनुदान Rs. 1100/-

'प्रमाण पत्र', 'साक्षी ध्यान', 'रेकी विद्या' की पुस्तकें एवं 'ध्यान सिद्धि बेल्ट' नि:शुल्क प्राप्त करें।

शिविर एवं पंजीकरण स्थल

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975
E-mail : anandyoga133@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand Kanpur
Website www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

उपरोक्त शिविर प्रत्येक माह के प्रथम सोमवार से शुक्रवार तक होता है।

साक्षी ध्यान एवं विद्या एट्यूनमेंट के चमत्कारी अनुभव

1. **मेरा मन पॉजिटिव हो गया**–माननीय आचार्य जी–आपकी ध्यान ज्ञान एवं मनोविज्ञान की बातें बहुत अच्छी लगीं। साक्षी ध्यान, **'ऊँ'** उच्चारण, किंग व क्वीन इक्सरसाइज और माँ सरस्वती के ध्यान से मुझे बहुत अच्छा लगा। अब मेरा माइन्ड पॉजिटिव ऊर्जा से भरा रहता है। पढ़ाई के साथ हर काम में मन लगता है।

–प्रदीप सिंह, कोचिंग स्टूडेन्ट, काकादेव, कानपुर

2. **मेरी लक्ष्य पर एकाग्रता बढ़ गयी**–साक्षी ध्यान के द्वारा मैने अपने मन को एकाग्र करना सीखा। और एकाग्र मन से मैं अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करूंगा। पहले मैं तनाव व घबराहट में रहता था, आपके ध्यान ज्ञान एवं भ्रामरी प्राणायाम से अब मैं इन सब चीजों से मुक्त हो गया हूँ।

–शैलेन्द्र मिश्र, कोचिंग स्टूडेन्ट, काकादेव, कानपुर

3. **दुर्लभ ध्यान ज्ञान मिला**–मैं श्रद्धेय श्री ओमप्रकाश 'आनन्द जी' को अपना आभार व्यक्त करती हूँ क्योंकि आपने अपने अमूल्य समय में से थोड़ा समय R.A.C. क्लास (साक्षी ध्यान) के लिये निकालकर हमें दुर्लभ ज्ञान दिया है। इस ज्ञान को आचरण बनाकर हम एक आनन्दमय जीवन जियेंगे।

–साक्षी ध्यान (R.A.C.) शिविर में आयी एक बहन

4. **टेंशन, निगेटिव थॉट व डिप्रेशन से मुक्त हुआ**–जबसे मैं साक्षी ध्यान (R.A.C. मेडीटेशन) शिविर में सम्मिलित हुआ उसके बाद से मेरी सारी टेंसन, निगेटिव थिंक खत्म होती गयी। साक्षी ध्यान की सहायता से अब मैं एकाग्रता हासिल करने में पूर्ण सफल हूँ।

–आदित्य नारायण, कोचिंग स्टूडेन्ट, हरदोई

5. **मन शान्त व सकारात्मक हो गया**–साक्षी ध्यान (R.A.C. मेडीटेशन) में आकर मैं सकारात्मक सोच से भरी रहती हूँ। हमेशा अच्छी बातों को मन में लाते हैं। सभी से शान्त एवं सकारात्मक भाव से बोलने लगी हूँ। साक्षी ध्यान, ऊँ ध्वनि, भ्रामरी प्राणायाम एवं शवासन से पूरी बॉडी, मन रिलैक्स हो जाता है।

–अर्चना, कोचिंग स्टूडेन्ट, काकादेव, कानपुर

6. **मानसिक रोगों से मुक्त हो गया**–मैं कुछ दिनों से मानसिक रोगों से ग्रस्त हो गया था जिससे मन में हमेशा निगेटिव थॉट रहते थे। साक्षी ध्यान (R.A.C. क्लास) के बारे में पता चला और मैंने क्लास को ज्वाइन किया जिससे मेरी सारी समस्याओं का हल मिल गया इतना ही नही मन में काफी देर तक एकाग्र होकर पढ़ने लगा हूँ।

–मंजेश कुमार, कोचिंग स्टूडेन्ट काकादेव, कानपुर

साक्षी ध्यान द्वारा अब तक हजारों लोग शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्ति पा चुके हैं। आप भी लाभ उठायें

स्थापित 1979 ई.

आनन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय

पत्राचार माध्यम से एक वर्षीय 'प्राकृतिक चिकित्सा प्लस' की शिक्षा तथा पांच सप्ताह में उसकी पूर्ण व्यावहारिक प्रशिक्षण (प्रैक्टिकल ट्रेनिंग)

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, मोतीझील, कानपुर द्वारा संचालित सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के तहत रजिस्टर्ड

प्राकृतिक चिकित्सा with योग शिक्षा, चुम्बक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर(रि), एवं होम हर्बल के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से ***देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, कानपुर*** द्वारा इनकी प्रामाणिक शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है। शिक्षार्थी एक वर्ष तक अपने घर पर ही रहकर हमारे मार्ग दर्शन में कोर्स की सैद्धान्तिक पुस्तकों का अध्ययन करें। फिर पाँच सप्ताह ***देवअन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर कानपुर*** में रहकर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें। उपर्युक्त अवधि में ही योग-प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी, योग शिक्षक with चुम्बक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर चिकित्सा(रि) एवं होम हर्बल चिकित्सा कोर्स में प्रवेश लेकर अंत में परीक्षायें (लिखित, व्यावहारिक, मौखिक) उत्तीर्ण करने पर डी. एन.एस-सी., डी.वाई.एड., डी.एच.एच.टी. (डिप्लोमा इन होमहर्बल थिरेपी), डी. एक्यू. टी. (डिप्लोमा इन एक्यूप्रेशर थिरेपी), डी.मैग.टी. (डिप्लोमा इन मैगनेट थिरेपी) एवं डि.इन. रेकी विद्या, का प्रमाण पत्र प्राप्त कर पूर्ण प्राकृतिक चिकित्सक बनिये और पुण्य व यश कमाइये तथा बेरोजगारी मिटाइये।

☞ नामांकन के लिए न्यूनतम आवश्यकतायें :

- बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण या समकक्ष योग्यता
- शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा
- हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य
- अच्छी आदतें एवं अच्छा चरित्र
- न्यूनतम उम्र 18 वर्ष
- विज्ञान वर्ग को प्राथमिकता
- रिटार्यड सेना के सैनिकों एवं समाज सेवी व्यक्तियों को प्राथमिकता।

☞ प्रवेश के नियम • कृपया निशुल्क पाठ्यक्रम प्राप्त करें या मंगायें-

पत्र व्यवहार का पता :

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र

117/133, 'ओ' ब्लाक गीतानगर, कानपुर-208 025

(रावतपुर रेलवे स्टेशन से - गीतानगर क्रासिंग के पास - श्री विश्नोई पार्क के बगल से)

Mob.:9336115528, 9336235850, 9838444486, 8887669975

E-mail : anandyoga133@gmail.com, Face Book:Omprakash Anand Kanpur

Website www.anandyoga.com, www.colorblindsurecure.com

स्व रोजगार योजना-योग शिक्षक-प्राकृतिक चिकित्सक शीतकालीन सम्पूर्ण ट्रेनिंग प्रोग्राम

कम समय में पाँचों कोर्स with रेकी सीखने का एक अद्भुत अवसर

शीतकालीन समय-1 दिसम्बर से 10 जनवरी (पांच सप्ताह)-प्रतिवर्ष

	समय	कोर्स का नाम
A.	प्रातः 6:30 से 8:30	योग शिक्षक की थ्योरी व प्रैक्टिकल (1 दिसम्बर से 10 जनवरी प्रति वर्ष)
B.	शाम 6:00 से 7:30	प्राकृतिक चिकित्सा की थ्योरी व प्रैक्टिकल (1 दिसम्बर से 10 जनवरी)
C.	शाम 7:30 से 8:30 *(प्रथम 10 दिन)*	होम हर्बल चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (1 दिसम्बर से 10 दिसम्बर)
D.	शाम 7:30 से 8:30 *(द्वितीय 10 दिन)*	मैगनेट चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (11 दिसम्बर से 20 दिसम्बर)
E.	शाम 7:30 से 8:30 *(तृतीय 10 दिन)*	एक्यूप्रेशर (रि.) चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (21 दिसम्बर से 31 दिसम्बर)
F.	प्रत्येक माह केद्वितीय शनिवार एवं रविवार को प्रातः 9 से शाम 5	रेकी Ist & रेकी IInd थ्योरी, प्रैक्टिकल एवं एट्यूनमन्ट
G.	1 जनवरी से 10 जनवरी सायं-7 से 8:30 तक	शिवाम्बु चिकित्सा एवं गौमूत्र चिकित्सा तथा हास्य चिकित्सा का विशेष प्रशिक्षण

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये पाठ्यक्रम With प्रवेश फार्म केन्द्र से प्राप्त करें या देखें वेबसाइट- www.anandyoga.com & colorblindsurecure.com

स्व रोजगार योजना-योग शिक्षक-प्राकृतिक चिकित्सक ग्रीष्मकलीन सम्पूर्ण ट्रेनिंग प्रोग्राम

कम समय में पाँचों कोर्स with रेकी सीखने का एक अद्भुत अवसर

ग्रीष्मकालीन समय-25 मई से 30 जून (पांच सप्ताह)-प्रतिवर्ष

	समय	कोर्स का नाम
A.	प्रातः 5:30 से 7:30	योग शिक्षक की थ्योरी व प्रैक्टिकल (25 मई से 30 जून प्रतिवर्ष)
B.	शाम 6:00 से 7:30	प्राकृतिक चिकित्सा की थ्योरी व प्रैक्टिकल (25 मई से 30 जून)
C.	शाम 7:30 से 8:30 *(प्रथम 10 दिन)*	होम हर्बल चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (25 मई से 3 जून)
D.	शाम 7:30 से 8:30 *(द्वितीय 10 दिन)*	मैगनेट चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (4 जून से 13 जून)
E.	शाम 7:30 से 8:30 *(तृतीय 10 दिन)*	एक्यूप्रेशर (रि.) चिकित्सा, थ्योरी एवं प्रैक्टिकल (13 जून से 20 जून)
F.	प्रत्येक माह के द्वितीय शनिवार एवं रविवार को प्रातः 9 से शाम 5	रेकी Ist & रेकी IInd थ्योरी, प्रैक्टिकल एवं एट्यूनमेन्ट
G.	21 जून से 30 जून सायं-7 से 8:30 तक	शिवाम्बु चिकित्सा एवं गौमूत्र चिकित्सा तथा हास्य चिकित्सा का विशेष प्रशिक्षण

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये पाठ्यक्रम With प्रवेश फार्म केन्द्र से प्राप्त करें या देखें वेबसाइट- www.anandyoga.com & colorblindsurecure.com

प्राकृतिक चिकित्सा की इण्टर्नशिप की सुविधा

व अन्य शीघ्र लाभकारी तथा आय वृद्धि कारक डिप्लोमा कोर्स

आपने कहीं से भी प्राकृतिक चिकित्सा का सर्टिफिकेट या डिप्लोमा अथवा डिग्री प्राप्त की हो और अब प्राकृतिक चिकित्सा की अच्छी प्रैक्टिकल ट्रेनिंग (इण्टर्नशिप) करना चाहते हैं, तो आज ही देव अं० योग केन्द्र से सम्पर्क करें-

हमारे यहां प्राकृतिक चिकित्सा की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के साथ-साथ अन्य सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स भी कराये जाते हैं। जिससे आपको अपने रोगियों को विशुद्ध प्राकृतिक चिकित्सा से ठीक होने में जितना समय लगेगा उसके चौथाई समय में अब उसे ठीक कर लेंगे तथा प्राकृतिक चिकित्सा के उभाड़ नही होंगे। वे कोर्स निम्नलिखित हैं-

1. **प्राकृतिक चिकित्सक (D.N.Sc.)**-डिप्लोमा इन नेचरोपैथी-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग एक माह**
2. **योग शिक्षक (D.Y.Ed.)**-डिप्लोमा इन योगा एजूकेशन-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग एक माह**
3. **चुम्बक चिकित्सक (D.Mag.)**-डिप्लोमा इन मैगनेट थिरेपी-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दस दिन**
4. **एक्यूप्रेशर(रि.) (D.Ac.-रि.)**-डिप्लोमा इन एक्यूप्रेशर(रि.)-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दस दिन**
5. **होमहर्बल थिरेपी (D.H.H.)**-डिप्लोमा इन होमहर्बल थिरेपी-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दस दिन**
6. **पोलियो (D.Polio, Paralysis)**-डिप्लोमा इन पो० एवं फा०-**प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दस दिन**
7. रेकी I & II, रेकी करूणा, रेकी सर्जरी, रेकी मास्टर, ग्रैंड रेकी मास्टर कोर्स, आटो सजेशन-मंत्र मेकिंग, औरा मैपिंग, डाउजिंग आदि सीखने की अब सुविधा हो गयी है।

☞ नोट-हमारे यहां से इण्टर्नशिप एवं अन्य कोर्स करने वालों को संस्था बनाना, संस्था चलाना, आवश्यकतानुसार मंहगाई के अनुरूप स्वायत्य व्यवस्था में आय बढ़ाने की विधि, कैम्प कैसे लगायें और स्वस्थ्य-साहित्य एवं उपर्युक्त चिकित्सा उपकरणों की सुविधा मंगाने, रखने एवं बेचने की भी कला सिखाई जाती है।

सम्पर्क करें-

देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र, गीतानगर, कानपुर-208025

नेत्र ज्योति विकासक जल नेति का लोटा

यदि आप किसी योगाश्रम अथवा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र से सम्बन्धित हों और जलनेति के लोटों को अपने रोगियों अथवा योगाभ्यासियों के लिए अधिक संख्या में बिक्री के लिए चाहते हों तो आपको ये लोटे हमारे यहाँ से विशेष छूट के साथ मिल सकते हैं:-

Mob.:9336115528, 9336235850, 9415594579

हमारा एकाउण्ट नं० ICICI बैंक A/c No.-032601508492, तथा SBI बैंक A/c No.- 51045771325, (IFS Code-SBIN0031623) गीतानगर, कानपुर है।

☞ आवश्यक सूचना ☜

एक्यूप्रेशर, चुम्बक, प्राकृतिक चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल एवं योग चिकित्सा में

प्रयोग होने वाले सभी प्रकार के उपकरणों एवं साहित्य थोक या फुटकर के लिये मिलें या निःशुल्क सूची पत्र मंगायें-

पत्र व्यवहार का पता

'स्वस्थ साहित्य प्रकाशन'

C/o देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र गीतानगर, कानपुर

Mob.: 9336115528, 9336235850, 9838444486, 9415594579

☞ आर्डर के साथ एडवांस रुपये एम. ओ., ड्राफ्ट, मल्टीसिटी चेक भेजें अथवा हमारे ICICI बैंक A/c No. 032601508492 (IFC Code - ICIC0000832) तथा SBI बैंक A/c No. - 51045771325, (IFS Code-SBIN0031623) गीतानगर, कानपुर में ओमप्रकाश आनन्द एवं पूनमरानी के नाम से जमा करायें।

पंचांग योग ऋषि डा० ओमप्रकाश 'आनन्द जी' एवं रेकी आचार्या पूनमरानी जी द्वारा लिखित या सम्पादित अथवा समर्थित पुस्तकें

पुस्तकों के नाम	मूल्य	संख्या	योग
(1) योग द्वारा कायाकल्प	100/-		
(2) सम्पूर्ण योग के व्यायाम	100/-		
(3) प्राणायाम की सही विधि	100/-		
(4) पेट रोगों की अचूक चिकित्सा	100/-		
(5) प्राकृतिक चिकित्सा अनुभव पुराण	200/-		
(6) ध्यान योग क्या, क्यों, कब और कैसे?	100/-		
(7) साक्षी ध्यान क्या, क्यों, कब और कैसे?	50/-		
(8) चुम्बक चिकित्सा क्या, क्यों और कैसे? (बड़ी पुस्तक)	120/-		
(9) हटी नाभि कैसे बिठावें?	50/-		
(10) सम्पूर्ण चौरासी योगासन	100/-		
(11) स्वामी देवमूर्ति के क्रांतिकारी रीढ़ के व्यायाम	50/-		
(12) शिवाम्बु चिकित्सा क्या व कैसे? या शिवाम्बु धारा	150/-		
(13) सरल एक्यूप्रेशर (रि.) क्या, क्यों व कैसे ?	100/-		
(14) सर्वायकल या लम्बर स्पांडलायसिस कारण एवं उपचार	50/-		
(15) पंचांग योग साधना एवं चिकित्सा क्या एवं क्यों ?	50/-		
(16) Easy Way to Natural Health	30/-		
(17) आध्यात्मिक चित्रावली (200 चित्रों वाली)	50/-		
(18) रेकी विद्या क्या व कैसे (छोटा संस्करण)	50/-		
(19) रेकी के चमत्कार (मध्यम संस्करण)	100/-		
(20) रेकी विद्या के चमत्कार (बड़ा संस्करण)	200/-		
(21) मासिक धर्म की गड़बड़ी कैसे ठीक हो?	100/-		
(22) हमारा सन्तुलित भोजन } तीनों एक साथ			
(23) उपवास की सही विधि-'युक्ति-युक्त उपवास'	100/-		
(24) प्राकृतिक चिकित्सा के रोचक रोगनाशक 108 मंत्र			
(25) विचार शक्ति के चमत्कार	50/-		
(26) नेत्र ज्योति कैसे बढ़ायें-नेत्रों के रोग कैसे मिटायें?	100/-		
(27) पोलियो एवं फालिस की अचूक चिकित्सा	100/-		
(28) योग प्राकृतिक चिकित्सा+प्लस-एक दृष्टि में	300/-		
(29) प्राकृतिक आयुर्विज्ञान (हिन्दी में) { लेखक-डा. गंगा प्रसाद गौर 'नाहर' सम्पादक-डा. राकेश जिंदल }	550/-		
(30) प्राकृतिक आयुर्विज्ञान (अंग्रेजी में)	650/-		
(31) षट्कर्म एवं प्राकृतिक चिकित्सा चित्र (रंगीन)	600/-		
(32) कायाकल्प (शोधन) विज्ञान	50/-		
(33) योगासन एवं सूर्य नमस्कार चार्ट (रंगीन)	20/-		
(34) 'पंचांग योग समाचार'-द्वि-मासिक पत्रिका ↓			

'पंचांग योग समाचार' द्वि-मासिक पत्रिका (सदस्यता विवरण-दसवर्षीय-1000/-, पंचवर्षीय-500/-, तीन वर्षीय-300/-)